श्री गणेश स्मृति ग्रंथमाला-ग्रंथाङ्क —३१

जैन-तत्व निर्णय

प्रथम भाग

(श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर की 'जैनसिद्धान्त भूषण'—परीक्षा के प्रथम खण्ड हेतु निर्धारित)

प्रकाशक

श्री गणेश स्मृति ग्रन्थमाला, बीकानेर

(श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ द्वारा संचालित)

समता भवन, रामपुरिया स्ट्रीट, बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक

श्री गणेश स्मृति ग्रन्थमाला
(श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ द्वारा संचालित)
समता भवन, रामपुरिया स्ट्रीट, बीकानेर (राजस्थान)

●

प्रथम संस्करण- २२००

●

जून १९७४

●

मूल्य—तीन रुपया

●

मुद्रक—
जैन आर्ट प्रेस
(श्री अ० भा० साधुमार्गी जैन संघ द्वारा संचालित)
समता भवन, रामपुरिया स्ट्रीट, बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशकीय

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र की अभिवृद्धि करने के उद्देश्य
। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर ने
बालकों के धार्मिक, नैतिक संस्कारों को सबल बनाने, युवा एवं
प्रौढ़ वर्ग के भाई-बहिनों मे क्रमबद्ध पाठ्यक्रमानुसार धार्मिक,
सैद्धान्तिक ग्रन्थों के अध्ययन की अभिरुचि जाग्रत करने एवं
उन्हें तलस्पर्शी ज्ञान कराने के लिये श्री साधुमार्गी जैन
धार्मिक परीक्षा बोर्ड की स्थापना की थी।

विगत वर्षों में परीक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रमा-
नुसार अध्ययन करने से समाज के आबाल-वृद्ध वर्ग में धार्मिक
जिज्ञासा की वृद्धि हुई है और बालकों को नैतिक संस्कार
मिले हैं।

परीक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम को और अधिक सुरुचि-
पूर्ण एवं ज्ञान की विविध विधाओं से सम्पन्न बनाने तथा
बालोपयोगी परीक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में धार्मिक, नैतिक
संस्कारों की शिक्षा देने वाले विशेष उपयोगी विचारों को
गर्भित करने की दृष्टि से गतवर्ष बीकानेर मे शिक्षा-शास्त्रियों,
एवं मर्मज्ञ विद्वानों की पं. र. मुनि श्री संपतमुनि जी . सा.,
पं. र. श्री धर्मेशमुनि जी म. सा. एवं श्री पारसमुनि जी. म सा.
आदि संत-सतियां जी म. सा. के सान्निध्य मे विद्वद्गोष्ठी
का आयोजन किया गया था।

विद्वद्गोष्ठी में लिए गए निर्णय के अनुसार जैन
सिद्धान्त भूषण परीक्षा के प्रथम खण्ड हेतु जैन-तत्त्व
निर्णय भाग-१ का प्रकाशन किया गया है। आशा है,

पाठ			पृष्ठ

जैन-तत्त्व निर्णय

प्रथम खण्ड

लम्बाई चौड़ाई ऊंचाई ७ ७ राज = ७ घनराज
७×७×७ = ३४३
सात राज लम्बी आकाश प्रदेश की पंक्ति को श्रेणी कहते हैं।
७ राज लम्बी ७ राज चौड़ी आकाश प्रदेश की पंक्ति को प्रतर कहते हैं।

जैन-तत्त्व-निर्णय

पाठ-१

लोकालोक

१. प्र०—इस दुनिया को जैन शास्त्र में क्या कहते है ?
उ०—लोक ।

२. प्र०—लोक के मुख्य विभाग कितने व कौन-कौन से है ?
उ०—तीन; उर्ध्वलोक, अधोलोक व तिरछालोक ।

३. प्र०—अपन किस लोक में रहते है ?
उ०—तिरछा लोक में ।

४. प्र०—उर्ध्वलोक मे मुख्यकर कौन रहते है ?
उ०—वैमानिक देव ।

५. प्र०—अधोलोक मे मुख्यकर कौन रहते है ?
उ०—नारकी व भुवनपति देव ।

६. प्र०—उर्ध्व और अधो का मतलब क्या है ?
उ०—उर्ध्व मायने ऊँचा और अधो मायने नीचा ।

७. प्र०—लोक कितना वडा है ?
उ०—असंख्य योजन का लम्बा, चौडा व ऊँचा ।

८. प्र०—असंख्य किसे कहते है ?
उ०—जिसकी गिनती नही हो सके ।

९. प्र०—लोक के चारों ओर क्या है ?
उ०—अलोक ।

१०. प्र०—अलोक कितना बडा है ?
उ०—अनन्त।

११. प्र०—अनन्त का अर्थ क्या है ?
उ०—जिसका अन्त याने पार नहीं सो अनन्त कहलाता है

१२. प्र०—लोक बडा है या अलोक ?
उ०—अलोक ।

१३. प्र०—अलोक मे क्या-क्या चीजें है ?
उ०—सिर्फ आकाश है और कुछ भी नहीं।

१४. प्र०—लोक और अलोक दोनों मिलकर क्या कहलाता है
उ० - लोकालोक ?

पाठ-२

पंच परमेष्ठी की पहिचान

१. प्र०—लोकालोक सम्पूर्णतया कौन जान सकते है व दे
सकते हैं ?
उ०—परमेश्वर ।

२. प्र०—अपन यहां बातचीत करते है, क्या परमेश्वर व
जानते है ?
उ०—हां, वह सब कुछ जानते हैं।

३. प्र०—सब कुछ जानने वालों को क्या कहना चाहिए
उ०—सर्वज्ञ ।

४. प्र०—सर्वज्ञ कौन-कौन कहे जा सकते हैं ?
उ०—श्री सिद्ध भगवंत और श्री अरिहंत देव ।

५. प्र०—सिद्ध भगवान कहां रहते है ?
   उ०—सिद्ध क्षेत्र में ।
६. प्र०—सिद्ध क्षेत्र कहां पर है ?
   उ०—लोक के शिरोभाग पर व अलोक के नीचे ।
७. प्र०—श्री सिद्ध भगवान के हाथ कितने है ?
   उ०—एक भी नहीं है ।
८. प्र०—सिद्ध भगवान यहां कब आवें ?
   उ०—यहां नहीं आवें; क्योंकि उनको यहां आने का कोई कारण ही नहीं है ।
९. प्र०—अरिहंत देव का अर्थ क्या है ?
   उ०—कर्म रूप शत्रु को हनन करने वाले देव याने केवलज्ञानी ।
१०. प्र०—कर्म किसे कहते है ?
   उ०—जीव को जो चारों गति में रुलाता है और संसार के सुख-दुःख का मूल कारण है, उसको कर्म कहते है ।
११. प्र०—कर्म कितने प्रकार के हैं व कौन-कौन से है ?
   उ०—आठ प्रकार के; ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र, अन्तराय ।
१२. प्र०—कर्मों को तुमने देखा है ?
   उ०—नहीं; अपन उनको नहीं देख सकते हैं ।
१३. प्र०—तुम्हारे पास कितने कर्म है ?
   उ०—आठ ।
१४. प्र०—सिद्ध भगवंत के पास कितने कर्म है ?
   उ०—एक भी नहीं ।
१५. प्र०—अरिहंत देव के पास कितने कर्म हैं ?
   उ०—चार कर्म ।

१६. प्र०—अरिहंत देव के कितने हाथ होते है ?
उ०—दो

१७. प्र०—अरिहंत देव खाते है क्या ?
उ०—वे साधु की तरह अचेत आहार करते है।

१८. प्र०—सिद्ध भगवंत क्या खाते है ?
उ०—कुछ नही (उनके शरीर ही नहीं है तो फिर खाने की जरूरत ही क्या ।)

१९. प्र०—इस वक्त इस लोक मे कितने अरिहंत है ?
उ०—बीस ।

२०. प्र०—वे किस लोक मे है ?
उ०—तिरछा लोक में ।

२१. प्र०—तिरछा लोक के किस क्षेत्र में ।
उ०—महाविदेह क्षेत्र मे ।

२२. प्र०—महाविदेह क्षेत्र कितने है ?
उ०—पांच

२३. प्र०—अरिहन्त देव काल करके कहां जाते हैं ?
उ०—मोक्ष मे ।

२४. प्र०—इस भरतक्षेत्र में आखिरी अरिहंत (तीर्थंकर) कौ हुए ?
उ०—श्री महावीर प्रभु, दूसरा नाम श्री वर्धमान स्वामी

२५. प्र०—श्री महावीर प्रभु अब कहां है ?
उ०—सिद्ध क्षेत्र में ।

२६. प्र०—नवकार मंत्र कहिये ।
उ०—नमो अरिहंताण, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाण नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं ।

२७. प्र०—नमो का अर्थ क्या ?

उ०—नमस्कार हो।

२८. प्र०—अरिहंताणं का अर्थ क्या ?

उ०—अरिहंत देव को।

२९. प्र०—सिद्धाणं का अर्थ क्या ?

उ०—सिद्ध भगवंत को।

३०. प्र०—अरिहंत देव व सिद्ध भगवान इन में बड़े कौन ?

उ०—सिद्ध भगवान।

३१. प्र०—तो नवकार मंत्र में अरिहंत देव को पहिले नमस्कार क्यों किया जाता है ?

उ०—क्योंकि सिद्ध भगवन्त की पहिचान कराने वाले वे ही (अरिहंत) हैं।

३२. प्र०—अरिहन्त कैसे होते हैं ?

उ०—मुनि जैसे।

३३. प्र०—सिद्ध भगवंत का आकार कैसा है ?

उ०—वे निरंजन हैं व अशरीरी होने से निराकार हैं।

३४. प्र०—निरंजन किसे कहते हैं ?

उ०—जिनको कर्मरूप अंजन (मैल) नहीं है, उनको।

३५. प्र०—निराकार माने क्या ?

उ०—जिनका आकार नहीं है, सो निराकार है।

३६. प्र०—नमो आयरियाणं का अर्थ क्या ?

उ०—आचार्य जी को नमस्कार।

३७. प्र०—आचार्य किसको कहते हैं ?

उ०—जो शुद्ध आचार आप पालते हैं व दूसरे को पलाते हैं उनको।

३८. प्र०—आचार्य में कितने गुण होते हैं ?

उ०—छत्तीस।

३९. प्र०—अरिहंत में कितने गुण होते हैं ?

उ०—बारह।

४०. प्र०—आचार्य बड़े है या अरिहंत देव ?

उ०—अरिहंत देव।

४१. प्र०—सिद्ध भगवंत में कितने गुण होते है ?

उ०—आठ।

४२. प्र०—नवकार मंत्र के चौथे पद में किन को नमस्कार करने को कहा है ?

उ०—उपाध्याय जी को।

४३. प्र०—उपाध्याय जी किस को कहते है ?

उ०—जो शुद्ध सूत्रार्थ आप पढ़ते है व दूसरे को पढ़ाते है।

४४. प्र०—अपनी पाठशाला में कौन उपाध्याय है ?

उ०—कोई नहीं है।

४५. प्र०—उपाध्यायजी में कितने गुण होते है ?

उ०—पच्चीस।

४६. प्र०—उपाध्याय जी व आचार्य जी इन दोनों में बड़े कौन हैं ?

उ०—आचार्य जी।

४७. प्र०—नवकार मंत्र का पांचवा पद कहिये ?

उ०—नमो लोए सव्वसाहूणं।

४८. प्र०—लोए मायने क्या ?

उ०—लोक में।

४९. प्र०—सव्वसाहूणं मायने क्या ?

उ०—सर्व साधुजी महाराज को।

५०. प्र०—साधुजी में कितने गुण है ?

उ०—सत्ताईस।

५१. प्र०—नवकार मंत्र में कितने को नमस्कार करने को कहा है ?
उ०—पांच को ।

५२. प्र०—कौन-कौन पांच ?
उ०—अरिहंतदेव, सिद्धभगवान, आचार्य जी, उपाध्याय जी व साधुजी ।

५३. प्र०—इन पांचों को क्या कहते है ?
उ०—पंचपरमेष्ठी ।

५४. प्र०—पंचपरमेष्ठी में कितने गुण होते हैं ?
उ०—एक सौ आठ ।

५५. प्र०—पंचपरमेष्ठी में साधुपन कितने पालते हैं ?
उ०—चार; अरिहंतदेव, आचार्य, उपाध्याय जी और साधुजी ।

५७. प्र०—सिद्ध भगवंत क्या करते हैं ?
उ०—अनंत आत्मिक सुख मे विराजमान हैं ।

५६. प्र०—पचपरमेष्ठी मे मनुष्य कितने है ?
उ०—चार (सिद्ध भगवंत के अलावा)

पाठ-२

जीव-तत्त्व और अजीव-तत्त्व

१. प्र०—अपने शरीर पर जलता हुवा अंगारा गिर जाय तो क्या होता है ?

उ०—वेदना होती है।

२. प्र०—लोग मर जाते हैं; पीछे शरीर को क्या करते हैं ?

उ०—आग में जलाते है।

३. प्र०—उसकी वेदना होती है या नही ?

उ०—नहीं होती है।

४. प्र०—क्यों वेदना नही होती है ?

उ०—क्योंकि उसमे जीव नहीं है।

५. प्र०—कब तक सुख या दुःख मालूम होता है ?

उ०—जब तक शरीर मे जीव होता है तब तक।

६. प्र०—सुख दुःख शरीर समझता है या जीव ?

उ०—जीव समझता है शरीर नही।

७. प्र०—तुमने जीव देखा है ?

उ०—नहीं, जीव देखने में नही आता है।

८. प्र०—शरीर मे जीव किस जगह है ?

उ०—सारा शरीर में (सर्वांग मे) व्याप्त है।

९. प्र०—किस मिसाल ?

उ०—जैसे तिल में तेल, दूध में घृत, फूल में सुगंध।

१०. प्र०—जीव मरता है या नहीं ?

उ०—जीव कभी मरता नहीं है।

११. प्र०—जब मरना मायने क्या ?

उ०—शरीर मे से जीव का चला जाना।

१२. प्र०—जीव शरीर को छोड के कहां जाता है ?

उ०—अपने कर्मानुसार दूसरे शरीर को प्राप्त होता है।

१३ प्र०—क्या सब जीवों को दूसरे शरीर मे उत्पन्न होना पडता है।

उ०—जो जीव सिद्ध होते है वे तो मोक्ष में जाते है

और उनके सिवाय सबको शरीर धारण करना पडता है।

१४. प्र०—जीव लोक में ज्यादा है या अलोक में ?

उ०—अलोक में जीव होते ही नहीं है।

१५. प्र०—लोक में ऐसी कोई जगह है कि जहां कोई जीव नहीं है ?

उ०—जीवों से सम्पूर्ण लोक भरा हुवा है सूई के अग्र भाग जितनी जगह भी खाली नहीं है।

१६. प्र०—जीव का दूसरा नाम क्या है ?

उ०—आत्मा।

१७. प्र०—हाथी का आत्मा बडा या कीड़ी का ?

उ०—दोनों की आत्मा समान है।

१८. प्र०—हाथी जब मर के चींटी होता है तब उसका आत्मा इतनी छोटी देह में कैसे समा सकता है ?

उ०—जैसे सारे मकान में फैला हुवा दीपक का प्रकाश एक छोटे से बर्तन में भी समा सकता है। इसी तरह हाथी का आत्मा कीड़ी के शरीर में समाता है।

१९. प्र०—जीव को अपन देख सकते है या नहीं ?

उ०—नही देख सकते क्योंकि वह अरूपी है।

२०. प्र०—तो जो जो चीजें अपन देख सकते है वे सब जीव है या अजीव ?

उ०—सब अजीव ही है।

२१. प्र०—जीव व अजीव में क्या भेद है ?

उ०—जीव चैतन्य लक्षणवाला और ज्ञान गुणवाला है, और अजीव अचेतन याने जड़ है।

२२. प्र०—तुम्हारा शरीर जीव है या अजीव ?

उ०—अजीव ।

२३. प्र०—तब यह अजीव शरीर हलन चलन आदि क्रिय कैसे कर सकता है ?

उ०—जब तक शरीर में जीव होता है तब तक हलच सकता है । जीव निकल जाने के बाद कुछ न कर सकता ।

२४. प्र०—किन दो तत्वों में सर्व पदार्थों का समावेश होता है

उ०—जीव तत्व व अजीव तत्व में यानि चेतन जड़ में ।

पाठ-४

द्वीप व समुद्र

१. प्र०—द्वीप किसे कहते है ?

उ०—जिस जमीन के चौतरफ जल हो ।

२. प्र०—ऐसे द्वीप कितने है ?

उ०—असंख्याता, उनकी गिनती मनुष्य शक्ति के बाहर

३. प्र०—ये सब द्वीप कहां है ।

उ०—तिर्छा लोक में ।

४. प्र०—द्वीप के आस-पास क्या होता है ?

उ०—समुद्र ।

५. प्र०—समुद्र कितने है ?

उ०—असंख्याता ।

६. प्र०—द्वीप ज्यादा है या समुद्र ?

उ०—दोनों समाना है ।

७. प्र०—इसका क्या कारण है ?

उ०—एक द्वीप के चौतरफ एक समुद्र व उसके चौरफ एक द्वीप, इस तरह से क्रमशः द्वीप व समुद्र रहते हैं।

८. प्र०—इन सब के बीच में कौन सा द्वीप है ?

उ०—जम्बुद्वीप ।

९. प्र०—अपन कहां रहते है ?

उ०—जम्बूद्वीप में ।

१०. प्र०—जम्बूद्वीप के आस-पास क्या है ?

उ०—लवण समुद्र ।

११. प्र०—लवण समुद्र किस दिशा की तरफ है ?

उ०—चौ तरफ है ।

१२. प्र०—लवण समुद्र मायने कैसा समुद्र ?

उ०—खारा समुद्र ।

१३. प्र०—जम्बूद्वीप का आकर कैसा है ?

उ०—गोल रुपया जैसा ।

१४. प्र०—लवण समुद्र का आकार कैसा है ?

उ०—लवण समुद्र का आकार भी गोल है मगर बीच में जम्बूद्वीप होने से कंकण चूड़ी, कड़ा जैसा गोल है ।

१५. प्र०—जम्बूद्वीप कितना बड़ा है ?

उ०—एक लाख जोजन का लंबा चौड़ा है ।

१६. प्र०—लवण समुद्र कितना बड़ा है ?

उ०—दो लाख जोजन का।

१७. प्र०—कल्पना से जम्बूद्वीप जितने बड़े खंड लवण समुद्र

[1]में से कितने हो सकते है ?

उ०—चौबीश अर्थात्, जम्बूद्वीप लवण समुद्र ने चौबीश गुनी जगह रोक दी हैं ।

१८. प्र०—लवण समुद्र के चौतरफ कौनसा द्वीप है ?

उ०—धात की खंड द्वीप ।

१९. प्र०—धात की खंड कितना बड़ा है ?

उ०—उसका पट चार लाख जोजन का है ।

२०. प्र०—जम्बूद्वीप जैसे धातकी खंड में से कितने विभाग हो सकते है ?

उ०—१४४ (१३×१३=१६९–२५=१४४)

२१. प्र०—धातकी खंड के चौतरफ क्या है ?

उ०—कालोदधि समुद्र ।

२२. प्र०—कालोदधि समुद्र कितना बडा है ?

उ०—उसका पट आठ लाख जोजन का है ?

२३. प्र०—जम्बूद्वीप जैसे कालोदधि समुद्र में से कितने विभा[ग] होते है ?

उ०—६७२ (२९×२९=८४१–१६९=६७२)

२४. प्र०—कालोदधि के चौतरफ क्या है ?

उ०—पुष्कर द्वीप ।

---

[1]चित्र न. १ में देखो ? कि सबके बीच का बिन्दु जम्बूद्वी[प] हैं । इस जम्बूद्वीप जैसे बिन्दु दो घेरे में लवण समुद्र के अन्द[र] १८ हैं इन १८ बिन्दू के सिवाय जो जगह बची है उनको ६ बि[न्दु] के बराबर समझो । इस प्रकार से १८+६=२४ खण्ड हुए । इस प्रकार आगे धात की खण्ड, कालोदधि समुद्र व पुष्कर द्वीप में [भी] समझना चाहिये :—

सुदर्शन मेरु
शिखा
गोलाई १०० योजन
पांडुक वन
(यहां पर तीर्थंकरो का जन्मोत्सव किया जाता है)
(गोलाई ९४ योजन)
सोमनस वन
(गोलाई ५०० योजन)
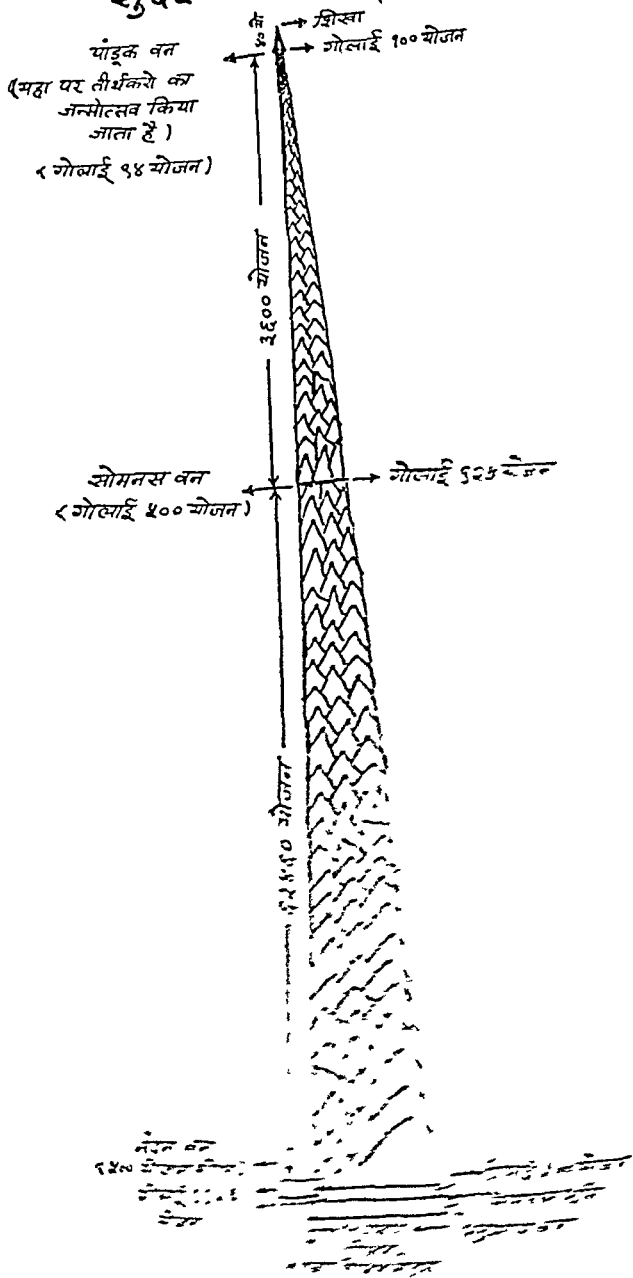
२५. प्र०—पुष्कर द्वीप कितना बड़ा है ?
उ०—उसका पट सोलह लाख योजन का है।

२६. प्र०—पुष्कर द्वीप के बीच में क्या है ?
उ०—मानुष्योत्तर पर्वत है।

२७. प्र०—मानुष्योत्तर पर्वत कौनसी दिशा में है ?
उ०—यह पर्वत भी अढ़ाई द्वीप के चौतरफ गढ़ (किले) की तरह गोल है।

२८. प्र०—वह पर्वत मानुष्योत्तर क्यों कहा जाता है ?
उ०—वह मनुष्य क्षेत्र की मर्यादा करता है, इस लिये मानुष्योत्तर पर्वत कहा जाता है; इसके आगे असंख्याता द्वीप समुद्र है किन्तु किसी में भी मनुष्य नहीं है।

२९. प्र०—मनुष्य क्षेत्र में कितने द्वीप व समुद्र है ?
उ०—अढ़ाई द्वीप और दो समुद्र है।

३०. प्र०—अढ़ाई द्वीप कौन-कौन से हैं ?
उ०—पहला जम्बूद्वीप; दूसरा धातकी खण्ड द्वीप और तीसरा अर्द्ध पुष्कर द्वीप।

३१. प्र०—दो समुद्र कौन से हैं ?
उ०—पहला लवण समुद्र, दूसरा कालोदधि।

३२. प्र०—अर्द्ध पुष्कर द्वीप कितना बड़ा है ?
उ०—उसका पट आठ लाख जोजन का है।

३३. प्र०—जम्बूद्वीप जैसे कितने खण्ड अर्द्ध पुष्कर द्वीप में हो सकते है ?
उ०—११८४ (४५×४५=२०२५=८४१=११८४)

३४. प्र०—अढ़ाई द्वीप की लम्बाई चौड़ाई कितनी है ?
उ०—पैंतालीस लाख जोजन की।

३५. प्र०—अर्द्ध पुष्कर द्वीप में दूसरी तरफ कौन बसते हैं?
उ०—तिर्यञ्च पशु, पक्षी आदि ।

३६. प्र०—पुष्कर द्वीप के आगे लोक में क्या-क्या हैं ?
उ०—असंख्याता द्वीप समुद्र एक-एक से दुगुणे होते गये है उन द्वीपों में असंख्याता देवताओं के नगर हैं सबसे अन्त का और सबसे बडा स्वयंभू रमण समुद्र है । स्वयंभू रमण समुद्र ने ही अर्द्धराज जितनी जगह रोकली है । इस समुद्र के चौतरफ बारह जोजन घनोदधि घनवाय वा तनवाय है, यहां ही तिर्छा लोक का अंत होता है । बाद मे अलोक है

पाठ—५

साधुजी का आचार

१. प्र०—तीर्थ कितने है ?
उ०—चार; साधु, साध्वी, श्रावक, और श्राविका ।

२. प्र०—साधुजी किसको कहते है ?
उ०—जो पंच महाव्रत पालते है उनको ।

३. प्र०—महाव्रत मायने क्या ?
उ०—वड़ाव्रत ।

४. प्र०—साधुजी का पहला महाव्रत कोनसा है ?
उ०—किसी जीव की हिंसा (मारना) करना नहीं, कराना नहीं और हिंसा करने वाले को भला भी

समझना नहीं ।

५. प्र०—साधुजी का दूसरा महाव्रत कौनसा है ?

उ०—किसी तरह भी झूठ बोलाना नहीं, बोलाना नहीं और झूठ बोलने वाले को भला भी समझना नहीं।

६. प्र०—साधुजी का तीसरा महाव्रत कौनसा है ?

उ०—किसी प्रकार की चोरी करनी नहीं, करानी नहीं, और चोरी करने वाले को भला भी समझना नहीं।

७. प्र०—साधुजी का चौथा महाव्रत कौनसा है ?

उ०—नबबाड़ युक्त शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन करना यानी सर्वथा मैथुन का त्याग करना, कराना, तथा मैथुन सेवन करने वाले को भी भला नहीं समझना।

८. प्र०—साधुजी का पांचवा महाव्रत कौनसा है ?

उ०—धन, दौलत आदि नहीं रखना, नहीं रखना, और परिग्रह रखने वाले को भला भी नहीं समझना ।

९. प्र०—इन पांच महाव्रतों के सिवाय भी कोई छट्ठा महाव्रत है।

उ०—नहीं, छट्ठा महाव्रत तो नहीं परन्तु छट्ठा व्रत है।

१०. प्र०—साधुजी का छट्ठा व्रत कौन सा है ?

उ०—रात्रि भोजन का त्याग करना ।

११. प्र०—क्या साधुजी के रहने के लिये उनका मठ मकान आदि होता है ?

उ०—नही, साधुजी के लिये बनाये हुए स्थान (मकान) मे वे नहीं उतरते है; किन्तु साधुजी महाराज—गृहस्थियों की आज्ञा से कल्पनीय स्थान में उतरते है ।

१२. प्र०—साधुजी अपना मकान छोड़ कर त्यागी क्यों होते है ?

उ०—धर्म ध्यान से अपनी आत्मा का कल्याण करने के लिये ।

१३. प्र०—क्या संसार में रह कर अपनी आत्मा का कल्याण वे नहीं कर सकते ?

उ०—संसार में कुटुम्ब आदि को पालने के लिये धन कमाना आदि कई कार्य करने पडते हे जिसमे सम्पूर्ण जीवों की दया पालनी मुश्किल है। संसार के झगड़ों में फंसे हुए मनुष्य को परोपकार के लिये व आत्म कल्याण के लिये पूरा वक्त मिलना असंभव है ।

१४. प्र०—क्या साधुजी सारादिन धर्म ध्यान ही में निकालते है ?

उ०—आहार निहार आदि, शारिरीक कारण टाल-कर बाकी सारा ही दिन धर्म ध्यान ही में लगाते हैं।

१५. प्र०—सारा ही दिन धर्म ध्यान मे लगाते है तो खाते पीते कहां से है ?

उ०—बयालीस दोष रहित गोचरी करके आहार पानी गांव में से लाते है ।

१६. प्र०—गोचरी मायने क्या ?

उ०—जैसे गाय ऊपर-ऊपर से घास खाती है, और घास-उगने में हरज आता नही है उसी तरह साधुजी बहुत घरों से थोडा-थोडा निर्दोश आहार लाते हैं। घर धणी को फिर रसोई करणी पडती नहीं है, जिस घर मे आहार पानी ज्यादा नही है

भारंड पंखी

वहां से कुछ भी लेते नहीं हैं।

१७. प्र०—साधुजी का पोशाक कैसा होता है ?

उ०—वे धोती की जगह चोल पट्टा पहनते हैं, चद्दर ओढते है, मुंह पर मुंह पति, हाथ में रजोहरण (औघा) और पातरा रखते है। सिर और पांव खुले ही रखते है।

१८. प्र०—साधुजी दिन में कितने बार पडिलेहणा करते है ?

उ०—दो वार यानि सुबह और शाम को चौथी पहर के शुरूआत मे।

१९. प्र०—पडिलेहण मायने क्या ?

उ०—अपने पास रहे हुए कपड़े, औघा, पातरा, शास्त्र आदि में जीव जन्तु का देखना। कोई जीव उसमें हो तो यतना से दूसरी जगह छोड़ देना।

२०. प्र०—साधुजी व आर्याजी किनती बार प्रतिक्रमण करते है ?

उ०—दो बार सुबह, शाम।

२१. प्र०—साधुजी एक ही गांव में कितने दिन ठहर सकते हैं ?

उ०—एक साल में एक गांव में सारा चौमासा और शेष (बाकी) काल में साधुजी एक गांव में एक महिना और आर्याजी दो महिने तक ठहर सकते है।

२२. प्र०—एक गांव से विहार कर जाने के बाद उसी गांव मे साधुजी व आर्याजी फिर कब आ सकते है ?

उ०—जितने दिन ठहरे हैं। उन से दूगने दिन छोड़ कर फिर उसी ग्राम में पधार सकते हैं।

२३. प्र०—साधुजी रास्ते में नीचे देख-देख कर क्यों चलते हैं ?

उ०—जीव जन्तु या वनस्पति आदि जीवों की रक्षा के लिये।

२४. प्र०—अंधेरे में किस तरह चलते हैं ?
उ०—रजोहरण (ओघा) से पूंजकर ।

२५. प्र०—साधुपना सहित जीव शरीर छोड़कर किस गति में जाता है ?
उ०—देव गति में या मोक्ष में ।

पाठ—६

सचेत अचेत की पहिचान

१. प्र०—साधुजी जल कैसा काम में लाते हैं ?
उ०—अचेत यानि जीव रहित ।

२. प्र०—कुआ, तालाब, नदी, नल आदि का पानी कैसा होता है ?
उ०—सचेत यानि जीव सहित ।

३. प्र०—पानी की एक बूंद मे कितने जीव होते हैं ?
उ०—असंख्याता[1] यानि गिनती में ही नहीं आवे ।

४. प्र०—गिनती में आवे उसे क्या कहते हैं ?
उ०—संख्याता ।

५. प्र०—बरसात का पानी कैसा होता है ?
उ०—सचेत यानि जीव सहित ।

नोट – [1]वर्तमान मे एक डाक्टर ने माइक्रस्कोप यंत्र द्वारा पानी की एक बूद मे ३६ हजार से ज्यादा जीवो को चित्र नं. २ में देखे।

६. प्र०—सचेत पानी अचेत कैसे होता है ?

उ०—गर्म करने से या कई दूसरी चीजों के संयोग से पानी के जीव मर जाते हैं, जैसे-चावल के धोने से, आटे की कठोती आदि धोने से, द्राक्ष (दाख) अमचूर आदि कई वस्तुओं के धोने से पानी अचेत हो जाता है।

७. प्र०—साधुजी सचेत पानी क्यों नहीं लेते हैं ?'

उ०—पानी के जीवों की दया के लिये।

८. प्र०—पानी (अपकाय) के जीवों की दया के लिये साधु जी और क्या करते है ?

उ०—चौमासे में चार महिना एक ही गांव में ठह-रते है और बरसात में गोचरी को भी नहीं जाते है।

९. प्र०—साधुजी खुराक (भोजन) कैसा करते है ?

उ०—अचेत यानि जीव रहित।

१०. प्र०—शाक (साग) भाजी सचेत है या अचेत ?

उ०—कच्ची लीलोती सचेत और रांधी हुई अचेत।

११. प्र०—लीलोती रांध ने से कैसे अचेत हो जाती है ?

उ०—अग्नि के संयोग से लीलोती के जीव मर जाते हैं।

१२. प्र०—क्या कच्ची लीलोती साधुजी खाते है ?

उ०—सचेत होने से नहीं खाते है।

नोट—'यदि साधुजी के लिये कोई चाह करके पानी को अचेत करके दे तो साधुजी को ऐसा अचेत जल भी अकल्पनीय है इसलिये नही ले सकते। यदि साधु के निमित्त बनाया आहार पानी जान कर साधु लेवे तो वे संयम के घर से दूर हैं। ऐसा समझो।

१३. प्र०—कच्चा अनाज साधुजी खाते हैं ?
उ०—नही यह भी सचेत है ।

१४. प्र०—सचेत अचेत अनाज कैसे मालूम होता है ?
उ०—जो अनाज बोने से उगता है वह सचेत और बोने से नहीं उगता वह अचेत होता है ।

१५. प्र०—चावल सचेत या अचेत ?
उ०—चावल तो, उपर का फूंस निकल जाने से अचेत है और शाल सचेत है ।

१६. प्र०—ज्वार, बाजरा, गेहूँ, मूंग, चना, उड़द, मोठ, मक्की, आदि सचेत या अचेत ?
उ०—यह सभी सचेत है क्योंकि बोने से उगता हैं ।

१७. प्र०—उडद या मूंग की दाल सचेत या अचेत ?
उ०—दाल मात्र अचेत होती है ।

१८. प्र०—आटा सचेत या अचेत ?
उ०—अचेत ।

१९. प्र०—कैसा आटा, दाल साधुजी के लिये अकल्यनीय है ?
उ०—तुरत की बनाई हुई दाल या पीसा हुआ आटा सचेत होने से साधुजी को अकल्पनीय है ।

२०. प्र०—कच्चा नमक (लूण) सचेत या अचेत ?
उ०—सचेत ।

२१. प्र०—नमक मे किस काय के जीव हैं ?
उ०—पृथ्वी काय के ।

२२. प्र०—पृथ्वी काय के जीव और किस-किस में है ?
उ०—खड्डी, खार, मिट्टी, पत्थर, हिंगलू, हरताल, गेरु, गोपी, चन्दन, रत्न, परवाल (मोती) आदि मे ।

२३. प्र०—ज्वार के दाना जितने पृथ्वी काय मे कितने जी है ?

एक बूँद पानी का चित्र

उ०—असंख्याता ।

२४. प्र०—पाणी मे किस काय के जीव है ?

उ०—अप काव के ।

२५. प्र०—हरी लीलोती में किस काय के जीव हैं ?

उ०—वनस्पति काय के जीव ।

२६. प्र०—वनस्पति काय के जीव कहां-कहां रहते हैं ?

उ०—पेड़, पौधा, जड़, धड़, शाखा, प्रतिशाखा, फूलपता, बीज आदि हरि में जीव होता है ।

२७. प्र०—वनस्पति काय के जीव कितनी प्रकार के होते हैं ?

उ०—दो; प्रत्येक और साधारण ।

२८. प्र०—प्रत्येक वनस्पति काय किस को कहते है ?

उ०—प्रत्येक (हर एक) शरीर में एक जीव होता है ।

२९. प्र०—साधारण वनस्पति किस को कहते हैं ?

उ०—प्रत्येक शरीर में अनन्ता जीव होते है उसे साधारण वनस्पति कहते है ।

३०. प्र०—वनस्पति मे कितने जीव होते हैं ?

उ०—उगते अंकुरे में अनंता जीव, कच्ची में असंख्याता और पक्की में संख्यता जीव ।

३१. प्र०—साधुजी आम या आम का रस ले सकते है ?

उ०—गुठली सजीव होने से पूरा आम नहीं ले सकते किन्तु आम का रस कुछ देर से ले सकते है ।

३२. प्र०—साधुजी घी ठंडा लेते है या गरम ?

उ०—दोनों (गर्म और जमा हुआ) ले सकते हैं ।

३३. प्र०—साधुजी तेल, दूध, दही, छाछ, शक्कर, गुड़, आदि ले सकते हैं ?

उ०—हां यह सभी अचेत होने से ले सकते है ।

३४. प्र०—साधुजी खारा ले सकते हैं ?
उ०—खारा सचेत होने से नहीं ले सकते ।

३५. प्र०—क्या अचेत वस्तु भी हमेशा ले सकते हैं ?
उ०—नहीं; असूझता आहार पानी अचेत होने पर भी साधुजी नहीं ले सकते हैं।

३६. प्र०—असूझता मायने क्या ।
उ०—अचेत निर्दोष वस्तु सचेत वस्तु के साथ लगी हो या आहार पाणी देते वक्त सचेत वस्तु का स्पर्श (संघटा) हो जाये तो अचेत वस्तु भी साधुजी को लेना अकल्पनीय है ।

३७. प्र०—साधुजी को आहार पानी देते वक्त किन-किन वस्तुओं को नहीं छुना चाहिये ?
उ०—जो जो वस्तु सचेत हो जैसे पृथ्वी काय (खट्टी, खार, लूण आदि) अपकाय (पानी सचेत) तेउकाय (अग्नि आदि) वायुकाय (फूंक मार के कोई चीज नहीं देना) वनस्पति (लीलोती) को नहीं छूना चाहिए ।

३८. प्र०—साधुजी को आहार पानी देते समय अग्नि को क्यों नही छूना चाहिए ?
उ०—अग्नि के छोटे से चिनगारे में भगवन्तों ने असंख्याता जीव फर्माये है ।

३९. प्र०—उन जीवों को क्या कहते है ?
उ०—अग्नि काय या तेउकाय ।

४०. प्र०—साधुजी को आहार पानी देते समय फूंक क्यों नही मारना चाहिए ।
उ०—फूंक से वायुकाय के जीव मर जाते हैं ।

प्र०—वायरे के जीव कैसे मर जाते हैं ?

उ०—खुला मुंह बोलने से, झटकने से, ढोल, घंटा, झालर आदि के बाजाने से वायुकाय के जीव मरते है।

. प्र०—एक समय खुला मुंह बोलने से कितने वायुकाय के जी मर जाते हैं ?

उ०—असख्याता।

. प्र०—पृथ्वी काय मायने क्या ?

उ०—पृथ्वी के जीव जैसे खड्डी, खार, मिट्टी, पत्थर, लूण, आदि।

. प्र०—अप्काय मायने क्या ?

उ०—पानी के जीव, नल, कुआ, तालाव, बरसात, बर्फ (हिम) आदि।

. प्र०—तेउकाय मायने क्या ?

उ०—अग्नि के जीव जैसे चिनगारा, ज्वाला अंगिरा, बिजली आदि।

६. प्र०—वायु काय मायने क्या ?

उ०—वायरे के जीव।

७. प्र०—वनस्पति काय मायने क्या ?

उ०—लीलोती के जीव जैसे आम, जाम, भाजी, फूल, पत्ते आदि।

पाठ–७

त्रस व स्थावर जीव

१. प्र०—पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, और वनस्पति के जीव क्या स्वयं (खुद) हल चल सकते है ?
उ०—नहीं; वे स्वयं हल चल नहीं सकते ।

२. प्र०—जो जो जीव स्वयं हल चल नहीं सकते उन्हें क्या कहते है ?
उ०—स्थावर ।

३. प्र०—जो जीव स्वयं हल चल सकते है उन्हें क्या कहते है।
उ०—त्रस ।

४. प्र०— तुम कैसे हो, त्रस या स्थावर ?
उ०—त्रस ।

५. प्र०—हाथी, घोड़ा, ऊंट, गाय, भैंस, आदि जीव त्रस है या स्थावर ?
उ०—त्रस ।

६. प्र०—मक्खी, मकोड़ा, चीटीं आदि त्रस या स्थावर ?
उ०—त्रस ।

७. प्र०—नीम, पीपल, आम, आदि वृक्ष त्रस या स्थावर ?
उ०—स्थावर ।

८. प्र०—आलमरी, दीवाल, स्लेट (पाटी) आदि त्रस है या स्थावर ?
उ०—इसमे जीव नहीं है अर्थात् जड़ है ।

९. प्र०—नमक (लूण) के जीव त्रस या स्थावर ?
उ०—स्थावर ।

१०. प्र०—शंख, शीप, कौड़ी आदि त्रस हैं या स्थावर ?
उ०—त्रस ।

११. प्र०—घड़ी, फोनोग्राफ, रेल, वायुयान आदि त्रस हैं या स्थावर ?
उ०—इनमे जीव नहीं है यह जड़ है कलों से चलते हैं।

१२. प्र०—जीव के मुख्यभेद कितने है ?
उ०—दो; त्रस और स्थावर ।

१३. प्र०—स्थावर के कितने भेद है ?
उ०—पांच; पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय वायुकाय, और वनिस्पति काय ।

१४. प्र०—कुल कितने काय के जीव है ?
उ०—छः काय के; पृथ्वी, अप, तेउ, वायु, वनि- स्पति और त्रस काय ।

१५. प्र०—छः काय जीवों के जाति आश्रिय कितने भेद हैं ?
उ०—पांच; एकेन्द्रिय, वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, पंचेन्द्रिय ।

१६. प्र०—गति आश्रिय जीवों के कितने भेद है ?
उ०—चार; नारकी, तिर्यञ्च, मनुष्य और देवता ।

१७. प्र०—सभी जीवों के विस्तार से कितने भेद है ?
उ०—पांच सौ त्रेसठ (५६३) ।

१८. प्र०—५६३ भेद मे से हर एक गति के कितने-कितने भेद हैं ?
उ०—नारकी के १४, तिर्यञ्च के ४८, मनुष्य के ३०३ और देवता के १९८ सब मिला के ५६३ हुए ।

पाठ- ८

महावीर शासन

१. प्र०—अपन कौनसा धर्म पालते है ?

उ०—जैन धर्म ।

२. प्र०—"जैन धर्म" ऐसा नाम किस तरह हुआ ?

उ०—जिन परमात्मा का प्ररुपित (स्थापित) किया हु होने से जैन धर्म ऐसा नाम हुआ ।

३. प्र०—जिन का अर्थ क्या है ?

उ०—रागद्वेष को जितने वाले ।

४. प्र०—"जिन" के और नाम क्या-क्या हैं ?

उ०—तीर्थंकर, वीतराग, अरिहन्त, परमात्मा, प्रभु आ

५. प्र०—अपन किस तीर्थंकर के शासन में है ?

उ०—चौवीसवें महावीर प्रभु के शासन मे है ।

६. प्र०—महावीर प्रभु की मातुश्री का क्या नाम है

उ०—त्रिशला देवी ।

७. प्र०—महावीर प्रभु के पिता का क्या नाम है ?

उ०—सिद्धार्थ राजा ।

८. प्र०—महावीर प्रभु की जाति क्या थी ?

उ०—क्षत्रिय (राजपूत)

९. प्र०—सिद्धार्थ राजा की राजधानी किस शहर मे थी ?

उ०—क्षत्रिय कुण्ड नगर मे ।

१०. प्र०—सिद्धार्थ राजा के कुंवर कितने थे ?

उ०—दो; नन्दीवर्द्धन और महावीर ।

११. प्र०—महावीर स्वामी के शरीर का वर्ण कैसा था ?
उ०—स्वंण (सोना) जैसा।

१२. प्र०—श्री महावीर प्रभु का देहमान (शरीर का ऊंचा-पन) कितना था ?
उ०—सात हाथ का।

१३. प्र०—श्री महावीर प्रभु का आयुष्य कितना था ?
उ०—बहत्तर (७२) वर्ष ।

१४. प्र०—श्री महावीर प्रभु ने कितने वर्ष की उम्र में दीक्षा ली ?
उ०—३० वर्ष की वय में।

१५. प्र०—दीक्षा लेने के बाद धर्म की प्ररुपना कब की ?
उ०—बारह वर्ष छह मास और पन्द्रह दिन बाद केवल ज्ञान उत्पन्न होने पर।

१६. प्र०—केवल ज्ञान का अर्थ क्या है ?
उ०—सम्पूर्ण ज्ञान।

१७. प्र०—केवल ज्ञान होने पर श्री महावीर प्रभु ने क्या किया ?
उ०—केवल ज्ञान से लोक में त्रस और स्थावर जीवों को दुखी देखकर उनको दुख: से मुक्त करने के लिये मोक्ष मार्ग फर्माया। अनेक जीवों को संसार सागर से पार उतारे, अनेक जीवों की दया का पालक साधु वर्ग स्थापित किया। दानादिक अनेक उत्तम गुणों से अलंकृत श्रावक वर्ग भी बनाया और अपूर्व ज्ञान भंडार गणधर देव को दिया, जिन्होंने शास्त्र बनाया अन्त में तीस वर्ष केवल प्रवज्या पाल सिद्ध गति को प्राप्त हुए।

१८. प्र०—श्री महावीर प्रभु ने धर्म की प्ररूपना की, इससे पहिले जगत मे जैन धर्म था या नहीं ?

उ०—जैन धर्म अनादि व शाश्वत है। इस जगत् मे कम-से-कम २० तीर्थंकर दो करोड केवली और दो हजार करोड साधु साध्वी महाविदेह क्षेत्र मे हमेशा विद्यमान रहते है। अपने इस भरतक्षेत्र मे भी महावीर प्रभु के पहिले अनन्ता तीर्थंकर हो गये, आने वाले काल के अनन्ता होवेंगे, वे सभी जैन धर्म का पुनरुद्धार करेंगे।

पाठ-६

पुण्य तत्व व पाप तत्व

१. प्र०—सर्व जीव समान होने पर भी कई जीव भूखे मरते हं, और अपने को खाने-पीने, रहने आदि का सव सुख मिलता है, इसका क्या कारण है ?

उ०—अपन ने पूर्ण भव मे सुभ कमाई की है, उसका अच्छा फल आज अपन भोग रहे है और रक या दुखी जीवों ने पूर्व भव में अशुभ कमाइ की हं उनका वुरा फल वे इस समय भोग रहे है।

२. प्र०—शुभ और अशुभ कमाई का अर्थ क्या है ?

उ०—शुभ कमाई का अर्थ पुण्य और अशुभ कमाई का अर्थ पाप है।

३. प्र०—शुभ कमाई यानि पुण्य क्या करने से होता है?
उ०—दूसरे जीवों को शांति देने से, परोपकार, दया, सत्य, शील, क्षमा, तप, नियम, व्रत, पच्चखाण, विनय आदि गुणों का पालन करने से और माता पिता गुरु-जनों की सेवा करने व इनका दिल नहीं दुखाते हुए नीतिमय आज्ञा को पालन करने से।

४. प्र०—जीव पाप कैसे करते है?
उ०—अपनी और दूसरों की आत्मा को क्लेश उपजाने से, चोरी (कम तोलना, कम नापना) हिसाब में ज्यादा-कमती कर देना, रिश्वत (सूंक) लेकर दूसरे का बिगाड़ कर देना, अच्छी वस्तु दिखाके खोटी दे देना। झूठ बोलना, झूठी साक्षी देना, विश्वास-घात करना, कन्या बेचना, तमाकू पीना, जुआ, मांसाहार, मद्यपान करना, वेश्यागमन, शिकार, परस्त्री सेवन करना आदि से।

५. प्र०—पुण्य के फल कैसे होते है?
उ०—मीठे व जीव को प्रियकारी।

६. प्र०—पाप के फल कैसे होते है?
उ०—कड़वे व जीव को कष्टकारी।

७. प्र०—क्या राजा कभी रंक (गरीब) भी हो जाता है?
उ०—हां; उसके पाप कर्म के उदय से हो सकता है।

८. प्र०—तब क्या रंक भी राजा हो सकता है?
उ०—हां; पुण्य का उदय होने से रंक भी राजा हो जाता है।

९. प्र०—पुण्य पाप का उदय होना किसको कहते है?
उ०—किये हुए पुण्य पाप का जब अपन को नतीजा

(फल) मिलता है। यानि फलदाता।

१०. प्र०—आज अपने जो पुण्य या पाप करते है उनका उदय (फल) कब होगा ?

उ०—कई कर्म तो ऐसे होते हैं जो आज का आज ही फल देते हैं जैसे चोरी करते ही पकडा जावे उसको ताडन तर्जन कठोर बचन आदि से या खोड़ा बेडी आदि से कष्ट रूप फल मिलता है। और कई कर्म ऐसे होते है जो संख्याता असंख्याता अनन्ता भव मे भी कर्मो का फल मिलता है।

११. प्र०—क्या पाप करने वाले जीवों का पुण्य का उदय होता है ?

उ०—हां; कितनेक पापी जीव चोर जार (व्यभिचारी) कसाई आदि वर्तमान में पाप कर्म करते रहने पर भी धन, धान्य, पुत्र, कलत्र आदि के सुख भोगते है यह उनके पूर्व संचित पुण्य का ही उदय है।

१२. प्र०—क्या पुण्य करने वाले जीवों को पाप का उदय होता है ?

उ०—हां, कितनेक धर्मात्मा अच्छे कार्य करते रहने पर भी दु:खी नजर आते है यह उनके पूर्व संचित पाप का ही उदय है।

१३. प्र०—पुण्य पाप का समावेश जीव तत्व में होता है या अजीव तत्व मे ?

उ०—पुण्य पाप के पुद्गल अजीव (जड़) होने से उनका समावेश अजीव तत्व में ही होता है।

१४. प्र०—पुण्य पाप के पुद्गल रूपी है या अरूपी ?

उ०—रूपी है, अपन उनको अति सूक्ष्म होने से नहीं देख सकते, किन्तु केवली भगवान ही देख सकते है।

१५. प्र०—पुण्य के उदय से जीव कौन-कौन सी गति में जाता है ?

उ०—देवगति या मनुष्य गति में।

१६. प्र०—मनुष्य गति मे भी कई जीव नीच गोत्र में जन्मते है और अनेक कष्ट पाते है वे किस कारण से ?

उ०—पाप के उदय से।

१७. प्र०—पाप के उदय से जीव कौन-कौन सी गति में उपजेत है ?

उ०—नरक व तिर्यञ्च गति में।

१८. प्र०—तिर्यञ्च गति में भी कई जीव शाता वेदनीय और दीर्घायुष्य पाते है वे किस कारण से ?

उ०—पुण्य के उदय से।

१९. प्र०—नरक के अनन्त दुःख भोगते हुए जीवों के पास "शुभ कर्म पुद्गल" यानि पुण्य है या नही ?

उ०—चारों ही गति में भटकने वाले जीवों के पास पुण्य या पाप दोनों प्रकार के पुद्गल होते है।

२०. प्र०—पुण्य या पाप अर्थात् शुभाशुभ कर्मो से छुटे हुए जीव कौनसी गति को पाते है ?

उ०—सिद्ध गति यानि मोक्ष।

२१. प्र०—सिद्ध गति यानि मोक्ष के साधन में क्या पुण्य की जरूरत है ?

उ०—हां; पुण्य के उदय विना मनुष्य भव आर्यक्षेत्र, उत्तम-कुल आदि का संयोग नहीं मिलता है। और ऐसे संयोग मिले विना कभी भी मोक्ष का

साधन नहीं हो सकता ।

२२. प्र०—सिद्ध गति पाने के बाद क्या पुण्य की आवश्यता है?
उ०—नहीं; जैसे समुद्र से किनारे पहुंचने के लिए नाव की जरूरत है किन्तु किनारे पहुंच जाने के बाद नाव की आवश्यकता नहीं रहती, वैसे ही संसार समुद्र मे से मोक्ष रूप किनारे पर पहुँचने के लिए पुण्य के सहारे की जरूरत है किन्तु मोक्ष में पहुंच जाने के बाद पुण्य की जरूरत नही। और जहां तक अपने नाव में बैठे रहे वहां तक किनारा भी प्राप्त नहीं होता है, वैसे ही जहां तक पुण्य है वहां तक मोक्ष की भी प्राप्ति नहीं हो सकती यानि पुण्य और पाप दोनों का क्षय होने से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

पाठ–१०

मनुष्य के भेद

१. प्र०—मनुष्य के मुख्य भेद कितने और कौन-कौन से ?
उ०—चार; कर्मभूमि के, अकर्मभूमि के, अन्तर द्वीपा के और समूर्च्छिम मनुष्य ।

२. प्र०—कर्मभूमि किसको कहते है ?
उ०—जिस भूमि के मनुष्य असि (तलवार शस्त्र आदि) मसि (स्याही से लिखना आदि) कृषि (खेती) इन

तीनों द्वारा मनुष्य अपनी आजीविका चलाते हैं उसे कर्मभूमि कहते है ।

३. प्र०—इन तीनों प्रकार का व्यापार यहां है ?
उ०—हां ।

४. प्र०—इस भूमि को क्या कहते है ?
उ०—कर्मभूमि ।

५. प्र०—कर्मभूमि के कितने क्षेत्र है ?
उ०—पन्द्रह; ५ भरत, ५ ईरवृत, ५ महाविदेह ।

६. प्र०—इन पन्द्रह में से अपन किस क्षेत्र में रहते हैं ?
उ०—भरत क्षेत्र में

७. प्र०—भरत क्षेत्र कितने है ?
उ०—पांच ।

८. प्र०—इन पांच में से जम्बूद्वीप में कितने भरत हैं ?
उ०—एक ।

९. प्र०—बाकी के चार भरत कौन से द्वीप में है ?
उ०—दो धातकी खण्ड में दो अर्द्ध पुष्कर में ।

१०. प्र०—अपन वहां जा सकते है या नहीं ?
उ०—देवता की सहायता विना अपन वहां नहीं जा सकते ।

११. प्र०—देवता की सहायता विना भी कोई वहां जा सकते है ?
उ०—हा; लब्धिधारी मुनिराज ।

१२. प्र०—ऐसे मुनिराज अभी कहां है ?
उ०—पांच महाविदेह क्षेत्र मे ।

१३ प्र०—पांच महाविदेह मे तीन प्रकार का व्यापार है ?
उ०—हां, है ।

१४. प्र०—पांच महाविदेह में से जम्बूद्वीप में कितने महा विदेह है ?

उ०—एक ।

१५. प्र०—बाकी के चार कहां है ?

उ०—दो धातकी खन्ड में दो अर्द्ध पुष्कर द्वीप में ।

१६. प्र०—पांच भरत और पांच महाविदेह के सिवाय और पांच क्षेत्रों के क्या नाम है ?

उ०—ईरवृत ।

१७. प्र०—पांच ईरवृत क्षेत्र कहां-कहां हैं ?

उ०—एक जम्बूद्वीप में, दो धातकी खण्ड में और दो अर्द्ध पुष्कर द्वीप में ।

१८. प्र०—कर्मभूमि के पन्द्रह क्षेत्र छोटे बड़े है या एक सरिखे

उ०—एक ही द्वीप में भरत ईरवृत क्षेत्र विस्तार और आकार मे एक सरीखे है, और उसी ही द्वीप में महाविदेह क्षेत्र बडा है। ऐसे ही जम्बूद्वीप से धातकी खण्ड के क्षेत्र बड़े है । और धातकी खं से अर्द्ध पुष्कर द्वीप के क्षेत्र बड़े है ।

१९. प्र०—जम्बूद्वीप मे भरत ईरवृत और महाविदेह क्षे कहां-कहां है ?

उ०—दक्षिण मे भरत, उत्तर में ईरवृत और बीच महाविदेह ।

२१. प्र०—अकर्म भूमि किसको कहते है ?

उ०—जहां के लोग असि, मसि, कृषि के व्यापार वि दस प्रकार के कल्पवृक्ष से अपना जीवन चल है उसे अकर्म भूमि कहते है ।

२२. प्र०—कल्पवृक्ष का अर्थ क्या ?

उ०—मनोवांच्छित वस्तु देने वाले वृक्ष ।

२३. प्र०—अकर्मभूमि के कितने क्षेत्र हैं ?

उ०—तीस, पांच हेमवय, पांच हिरण्यवय पांच हरिवास पांच रम्यकवास पांच देवकुरु पांच उत्तर कुरु ।

२४. प्र०—जम्बूद्वीप मे अकर्मभूमि के कितने क्षेत्र है ?

उ०—छः १ हेमवय १ हिरण्यवय १ हरिवास १ रम्यक-वास १ देवकुरु १ उत्तरकुरु ।

२५. प्र०—अर्द्धपुष्कर द्वीप में और घातकी खंड में अकर्म-भूमि के कितने-कितने क्षेत्र है ?

उ०—वारह-वारह (दो. हे. व., दो. हि. व., दो. हरि., दो, रम्य., दो. देव., दो. उत्तर.)

२६. प्र०—अकर्मभूमि के मनुष्य कैसे होते हैं ?

उ०—जुगलिया ।

२७ प्र०—उनको जुगलिया क्यों कहते है ?

उ०—वहां स्त्री पुरुष साथ ही युगल जोडी से जनमते है इसलिये उन्हें जुगलिया कहते है ।

२८. प्र०—प्रत्येक युगलनी कितने पुत्र पुत्री को जन्म देती हैं ?

उ०—एक जोडी, जिसमे एक लड़का और एक लडकी ।

२९. प्र०—हेमवय हिरण्यवय में जुगलनी अपने पुत्र पुत्री को कितने दिन पालन पोषण करती है ?

उ०—७९ (गुणियासी) दिन पालन करती है।

३०. प्र०—हरिवास रम्यक वास में जुगलनी अपने पुत्र पुत्री को कितने दिन प्रतिपालन करती है ?

उ०—६४ दिन ।

३१. प्र०—देवकुरु उत्तरकुरु मे कितने दिन पालती है ?

उ०—४९ दिन ।

३२. प्र०—इतने छोटे बच्चों के मां बाप मर जाते हैं। तो उन बेचारों का क्या हाल होता होगा ?

उ०—वे उस समय मा बाप जितने बड़े हो जाते हैं और वो भाई बहिन स्त्री पुरुष होकर रहते हैं और कल्पवृक्ष से मनोवांछित सुख भोगते है।

३३. प्र०—भाई बहिन स्त्री पुरुष हो जाते है यह अयोग्य रिवाज कैसे है ?

उ०—यह रिवाज जुगलियों में अनादिकाल से चला आरहा है; इनमें व्यभिचार, चोरी, झूठ, झगडा, वैर विरोध कुछ होता नहीं है।

३४. प्र०—जुगलियों मे स्त्री की आयुष्य ज्यादा या पुरुष की ?

उ०—दोनों की समान आयुष्य है दोनों साथ ही जन्मते है और साथ ही मरते है।

३५ प्र०—जुगलिया का आयुष्य कितना होता है ?

उ०—हेमवय हिरण्यवय मे एक पल्योपम, हरिवास रम्यकवास मे दो पल्योपम, देवकुरु उत्तरकुरु में तीन पल्योपम।

३६. प्र०—जुगलिया का उत्कृष्ठ अवघेणा (ऊंचापन) कितना होता है ?

उ०—हेमवय हिरण्यवय में एक कोस, हरिवास रम्यकवास मे दो कोस, देवकुरु उत्तरकुरु में तीन कोस।

३७. प्र०—जुगलिया मरकर किस गति में जाते है ?

उ०—देवगति में।

३८. प्र०—जुगलिया कौनसा धर्म पालते है ?

उ०—वे कोई धर्म नहीं पालते, वे भद्रीक है।

३९. प्र०—तीस अकर्मभूति के सिवाय और जगह भी जुग

लिया के क्षेत्र हैं ? यदि है तो कहां है ?

उ०—लवण समुद्र में ५६ अन्तरद्वीप में हैं उसमें जुगलिया के ५६ क्षेत्र हैं।

४०. प्र०—अन्तर द्वीप नाम क्यों कहा जाता है ?

उ०—समुद्र मे अन्तरिक्ष होने से अधर है उतको अन्तर द्वीप कहते है।

४१. प्र०—अधर कैसे रहे होंगे ?

उ०—पर्वत की दाढ़ों पर होने से समुद्र में अधर हैं।

४२. प्र०—ऐसी दाढ़ें कितनी है ?

उ०—आठ।

४३ प्र०—यह आठ दाढ़ें किस-किस पर्वत से निकली हैं ?

उ० चार चुल हिमवन्त पर्वत से और चार शिखरी पर्वत से।

४४. प्र०—चुल हिमवन्त और शिखरी पर्वत कहां है ?

उ०—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के उत्तर में चुल हिमवन्त पर्वत है और ईरवृत क्षेत्र के दक्षिण में शिखरो पर्वत है।

४५. प्र०—चुलहिमवन्त व शिखरी पर्वत छोटे वड़े हैं या एक सरीखे ?

उ०—दोनों वरावर हैं।

४६. प्र०—चुलहिमवन्त और शिखरी पर्वत जमीन में कितने हे ? और जमीन के उपर कितने ऊंचे हैं ?

उ०—जमीन में २५ जोजन और ऊपर १०० जोजन।

४७. प्र०—यह चुलहिमवन्त और शिखरी पूर्व पश्चिम में लम्बे कितने हैं ?

उ०-२४९३२ जोजन।

४८. यह दोनों पर्वत उत्तर दक्षिण चौड़े कितने हैं ?
उ०—१०५२ जोजन १२ कला के चौड़े हैं।

४९. प्र०—इन प्रत्येक दाढ़ों की लम्बाई कितनी है ?
उ०—८४०० जोजन की।

५०. प्र०—एक-एक दाढ़ पर कितने-कितने द्वीप है ?
उ०—सात-सात।

५१. प्र०—जगति का कोट कहां है ?
उ०—इस जम्बूद्वीप के चारों ही तरफ जगति का कोट है।

५२. प्र०—जगति के कोट से कितने अन्तर पर द्वीप है ?
उ०—जगति के कोट से ३०० जोजन आगे जावें जब ३०० जोजन का लम्बा चौडा पहला अन्तर द्वीप आता है, वहां से ४ सौ जोजन आगे और उतना ही लम्बा चौडा द्वीप आता है, और वहां से ५ सौ जोजन दूर ५ सौ जोजन का लम्बा चौडा, ६ जोजन जावे जब ६ सौ जोजन का लम्बा चौड़ा, ७ सौ जोजन जावे जब ७सौ जोजन का लंबा चौडा पांचवां अंतर द्वीप; और ८ सौ जोजन जावे जब ८ सौ जोजन का लम्वा चौडा छट्ठा अन्तर द्वीप आता है। वहां से ९ सौ जोजन का सातवां अन्तर द्वीप आता है, इस तरह से ८ दाढों मे मिलकर ५६ अन्तर द्वीप लवण समुद्र मे पानी के समाटे से ढाई जोजन से ज्यादा ऊंचा है।

५३. प्र०—अन्तरद्वीप मे तीन प्रकार के व्यापार है या नहीं ?
उ०—नही है; वहां कल्पवृक्ष से जीवन चलाते है।

५४. प्र०—अन्तरद्वीप के मनुष्य का आयुष्य कितना है ?

उ०—पल्योयम का असंख्यातवां भाग यानि असंख्याता वर्ष का।

५५. प्र०—अन्तरद्वीप के जुगलिया की अवघेणा कितनी होती है ?

उ०—८०० धनुष की।

५६. प्र०—अन्तरद्वीप के जुगलिया मरकर कहां जाते है ?

उ०—देव गति में (भुवनपति या वाणव्यन्तर में)।

५७. प्र०—सब प्रकार के जुगलिया की कम-से-कम अवघेणा कितनी होती है ?

उ०- अगुल के असंख्यातवां भाग माता के उदर में पीछे वढती चली जाती है।

५८. प्र०—जुगलिया के कुल क्षेत्र कितने है ?

उ०—८६ (३० अकर्मभूमि के ५६ अन्तरद्वीप के)।

५९. प्र०—मनुष्य के कुल कितने क्षेत्र है ?

उ०—१०१ (८६ जुगलिया के १५ कर्मभूमि के)

६०. प्र०—मनुष्य के १०१ क्षेत्र में जम्बूद्वीप मे कितने क्षेत्र हैं ?

उ०—नौ (३ कर्मभूमि, ६ अकर्मभूमि)।

६१. प्र०—लवण समुद्र मे मनुष्य के कितने क्षेत्र हे ?

उ०—छप्पन अन्तरद्वीप।

६२. प्र०—धातकी खण्ड मे मनुष्य के कितने क्षेत्र हे ?

उ०—अठारह (६ कर्मभूमि १२ अकर्मभूमि के)।

६३. प्र०—कालोदधि में मनुष्य के कितने क्षेत्र हैं ?

उ०—एक भी नही।

६४. प्र०—अर्द्धपुष्कर में मनुष्य के कितने क्षेत्र हे ?

उ०—१८ (६ कर्मभूमि के और १२ अकर्मभूमि के)।

६५. प्र०—ढाई द्वीप के वाहर मनुष्यों के कितने क्षेत्र हे ?

उ०—एक भी नहीं यानि ढाई द्वीप के बाहर मनुष्य है ही नहीं।

६६. प्र०—समूर्च्छिम मनुष्य किसे कहते है ?

उ०—मनुष्य संबंधी अशुचि (गंदे) स्थान में उत्पन्न होते है उसे समूर्च्छिम कहते है।

६७. प्र०—ऐसे अशुचि के स्थान कितने और कौन-कौन से हैं ?

उ०—१४ मनुष्य के; १ मल में, २ मूत्र में, ३ कफ में, ४ सेडा में, ५ उल्टी मे, ६ पित्त मे, ७ राध में, ८ खून मे, ९ वीर्य में, १० वीर्य के सूखे पुद्गल भीजने में, ११ मनुष्य के जीव रहित शरीर में, १२ स्त्री पुरुष के संयोग में, १३ नगर की मोरी में, १४ सर्व मनुष्य संबंधी अशुचि के स्थान में समूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न होते है।

६८. प्र०—क्या जुगलियां के मय मूत्र आदि में समूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न होते है ?

उ०—हां होते है ?

६९. प्र०—समूर्च्छिम मनुष्य को तुमने देखा है ?

उ०—नही, उनका शरीर बहुत बारीक है।

७०. प्र०—उनकी अवघेणा कितनी होती है ?

उ०—अगुल के असंख्यातवां भाग।

७१. प्र०—समूर्च्छिम मनुष्य का आयुष्य कितना होता है ?

उ०—अन्तर्मुहूर्त (४८ मिनट के अन्दर मर जाते है।)

७२. प्र०—क्या समूर्च्छिम मनुष्य के माता पिता होते है ?

उ०—नही, वे विना माता पिता के ही उत्पन्न होते है।

७३. प्र०—जो माता पिता के संयोग से पैदा होते है उन्हें कैसे मनुष्य कहते है ?

उ०—गर्भज मनुष्य ।

७४. प्र०—गर्भज मनुष्य के कितने भेद है ?

उ०—दो सौ दो (२०२) ।

७५. प्र०—गर्भज मनुष्य के २०२ भेद कैसे होते है ?

उ०—मनुष्य के १०१ क्षेत्र है जिसमें १०१ तो अपर्याप्ता और १०१ पर्याप्ता मिल के २०२ भेद हुए ।

७६. प्र०—जुगलिया गर्भज है या समूर्च्छिम ?

उ०—जुगलिया गर्भज है ।

७७. प्र०—अपर्याप्ता और पर्याप्ता शब्द का क्या अर्थ है ?

उ०—जीव शरीर धारण करते समय आहार के पुद्गल लेकर उन पुद्गलों को शरीर इन्द्रिय श्वासोच्छास भाषा और मनके रूप मे परगमा लेना है तब वह पर्याप्ता समझा जाता है और जिस भव मे जितनी पर्याप्तियां बांधनी हो उतनी नही बांध ले तब तक पर्याप्ता गिना जाता है ।

७८. प्र०—इन छः पर्याप्ता के नाम क्या है ?

उ०—आहार पर्याप्ता, शरीर पर्याप्ता, इन्द्रिय पर्याप्ता, श्वासोश्वास पर्याप्ता, भापा पर्याप्ता और मन पर्याप्ता ।

७९. प्र०—अपर्याप्ता की अवस्था मे जीव ज्यादा से ज्यादा कितने समय तक रहता है ?

उ०—अन्तर्मुहूर्त तक (४८ मिनट के अन्दर) ।

८०. प्र०—अपर्याप्ता कहां तक गिना जाता है ?

उ०—जितनी पर्याप्तियां बांधने की हो पूरी नहीं बांधे जहां तक अपर्याप्ता गिना जाता है । (छः प्रजा होवे और पांच बांधे वहां तक अपर्याप्ता पांच बांधने की होवे और चार बांधे वहां तक अप-

पर्याप्ता और चार बांधने की होवे और तीन बांधे वहां तक अपर्याप्ता गिना जाता है ।)

८१. प्र०—अपने पास कितनी पर्याप्ता है ?
उ०—छः ।

८२. प्र०—समूर्च्छिम मनुष्य के कितने भेद है ?
उ०—१०१ (१०१ मनुष्य क्षेत्र है इसलिये इनके भी इतने ही भेद है)।

८३. प्र०—समूर्च्छिम मनुष्य में अपर्याप्ता पर्याप्ता ऐसा दो भेद होता है या नही ?
उ०—नहीं; क्योंकि वे अपर्याप्ता अवस्था में ही मर जाते है।

८४. प्र०—समूर्च्छिम मनुष्य में कितनी पर्याप्ता हैं ?
उ०—तीन; (पहिले की) और श्वास लेवे तो उच्छवास नही लेवे, उच्छवास लेवे तो श्वास नही लेवे।

८५ प्र०—मनुष्य के कुल भेद कितने है ?
उ०—३०३ (१०१ क्षेत्र के गर्भज मनुष्यों अपर्याप्ता और पर्याप्ता १०१ और १०१ समूर्च्छिम मनुष्य के मिलकर ३०३ भेद हुए)।

८६. प्र०—मनुष्य के ३०३ भेद मे से भरतक्षेत्र में कितने भेद है ?
उ०—तीन; (जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के अपर्याप्ता पर्याप्त और समूर्च्छिम)।

८७. प्र०—जम्बूद्वीप मे मनुष्य के कितने भेद हैं ?
उ०—२७, तीन कर्मभूमि के ६ भेद, और ६ अकर्म भूमि के १८, मिलकर २७ भेद हुए।

८८. प्र०—लवण समुद्र मे मनुष्य के कितने भेद है ?

उ०—५६×३=१६८ ।

. प्र०—धातकी खन्ड में मनुष्यों के कितने भेद हैं ?

उ०—५४ (६ कर्मभूमि के १८ भेद, १२ अकर्मभूमि के ३६, सब मिलकर ५४) ।

०. प्र०—अर्द्धपुष्कर द्वीप में मनुष्यों के कितने भेद है ?

उ०—५४ (६ कर्मभूमि के १८, और १२ अकर्मभूमि के ३६ मिलकर ५४) ।

पाठ–११

तिर्यञ्च के भेद

१. प्र०—तिर्यञ्च किसको कहते है ?

उ०—मनुष्य, देवता और नारकी के सिवाय दूसरे सर्व त्रस स्थावर जीवों को तिर्यञ्च कहते है ।

२. प्र०—तिर्यञ्च के मुख्य भेद कितने और कौन-कौन से है ?

उ०—तीन; (एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय)

३. प्र०—पांच इन्द्रियां कौन-कौन सी है ?

उ०—श्रोत्रेन्द्रिय (कान) चक्षुइन्द्रिय (आंख) घ्राण इन्द्रिय (नाक) रसइन्द्रिय (जीभ) स्पर्शेन्द्रिय (शरीर) ।

४. प्र०—एकेन्द्रिय किसे कहते है ?

उ०—जिनके केवल एक ही इन्द्रिय यानि शरीर ही हो ।

५. प्र०—विकलेन्द्रिय के मुख्य भेद कितने व कौन-कौन से है ?

उ०—तीन; बेन्द्रिय, तेन्द्रिय और चौइन्द्रिय ।

६. प्र०—बेइन्द्रिय किसको कहते है ?
उ०—जिनके काया और मुख दो इन्द्रिय हों ।

७. प्र०—कुछ बेइन्द्रिय जीवों के नाम बताओ ?
उ०—शंख, सीप, कीड़े, गिंडोले, लट आदि ।

८. प्र०—तेइन्द्रिय में तीन इन्द्रियां कौनसी होती है ?
उ०—काया, मुख और नासिका ।

९. प्र०—कुछ तेइन्द्रिय जीवों के नाम बताओ ?
उ०—जूं, लीख, चांचड, खटमल, कीडी आदि ।

१०. प्र०—चौइन्द्रिय में चार इन्द्रियां कौनसी होती है ?
उ०—शरीर, मुख, नाक और आंख ।

११. प्र०—कुछ चौइन्द्रिय जीवों के नाम बताओ ?
उ०—मक्खी, मच्छर, डांस, भंवरे, बिच्छू आदि ।

१२. प्र०—पंचेन्द्रिय मे पांच इन्द्रियां कौन-कौन सी होती है ?
उ०—शरीर, मुख, नाक, आंख और कान ।

१३. प्र०—तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के मुख्य भेद कितने है ?
उ०—दो; सज्ञी अर्थात् गर्भज, असंज्ञी (सम्मूर्च्छिम)

१४. प्र०—संज्ञी और असंज्ञी किसे कहते है ?
उ०—जिसके मन होता है और माता-पिता से जन्मते है उनको संज्ञी कहते और जिनके मन नही होता और विना माता के होते है उन्हें असंज्ञी कहते है।

१५. प्र०—एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव सम्मूर्च्छिम हैं या गर्भज और उनके मन होता है या नहीं ?
उ०—वे माता-पिता की विना अपेक्षा उत्पन्न होते हैं जिससे वे सम्मूर्च्छिम है और इनके मन नहीं होता है ।

१६. प्र०—समूर्च्छिम या गर्भज तिर्यञ्च पचेन्द्रिय जीव कितने प्रकार के होते है ?

उ०—पांच प्रकार के होते है; जलचर, स्थलचर, उरपर, भुजपर और खेचर ।

१७. प्र०—जलचर किसको कहते है ?

उ०—जल में रहने वाले तिर्यञ्च; जैसे मच्छ, कच्छ, मगर, मेंढक आदि ।

१८. प्र०—स्थलचर किसे कहते है ?

उ०—जमीन पर चलने वाले तिर्यञ्च, पंचेन्द्रिय ।

१९. प्र०—स्थलचर तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के कितने भेद है ?

उ०—चार; एकखुरा, दोखुरा, गंडिपया, और सणपया ।

२०. प्र०—एक खुरा किसे कहते है ?

उ०—जिनके पैर मे एक खुरा हो, जैसे घोड़ा, गधा ।

२१. प्र०—दो खुरा किसे कहते है ?

उ०—जिनके दो खुर हों, जैसे गाय, भैंस, बकरे आदि ।

२२. प्र०—गंडपिया किसे कहते है ?

उ०—जिनके पैर का तला सुनार की एरन जैसे चपटा हो, जैसे; हाथी, गेंडा, ऊंट, आदि ।

२३. प्र०—सणपया किसे कहते हैं ?

उ०—नखवाले जीव, जैसे चीता, सिंह, कुत्ता, बिल्ली आदि ।

२४. प्र०—उरपर किसे कहते हैं ?

उ०—पेट के बल से चलने वाले, जैसे सांप ।

२५. प्र०—उरपर के कितने भेद है ?

उ०—दो; एक फण मांडते है दूसरे फण नहीं मांडते ।

२६. प्र०—भुजपर किसको कहते हैं ?

उ०—जो भुजा और पेट के बल से चलते है, जैसे नोल,

कौल, ऊंदरा, खिसकोल आदि ।

२७. प्र०—खेचर किसको कहते है ?

उ०—जो आकाश में उडते है ।

२८. प्र०—खेचर के कितने भेद है और कौन-कौन से हैं ?

उ०—चार; चर्मपंखी, रोमपंखी, विततपंखी और समुग-पंखी ।

२९. प्र०—चरमपंखी किसको कहते हैं ?

उ०—जिसकी पांखें चमड़े जैसी होती हैं जैसे चिमगादर (बागल) आदि ।

३०. प्र०—रोमपखी किसको कहते है ?

उ०—जिनकी पांखें रोम (केश) की होती है, जैसे तोता, कबूतर, चिडिया आदि ।

३१. प्र०—विततपंखी किसको कहते है ?

उ०—जिसकी पाखें हमेशा फैली हुई रहती है ।

३२. प्र०—समुगपंखी किसको कहते है ?

उ०—जिसकी पांखें हमेशा बंध रहती है ।

३३. प्र०—विततपखी और समुगपंखी को तुमने देखा है ?

उ०—नहीं; यह पक्षी अढाई द्वीप के बाहर है ।

३४. प्र०—अढाई द्वीप के अन्दर कितने प्रकार के पक्षी रहते है ?

उ०—दो प्रकार के चर्मपंखी और रोमपंखी ।

३५. प्र०—अढाई द्वीप के वाहर कितने प्रकार के पक्षी रहते है ?

उ०—चार ही प्रकार के ।

३६. प्र०—क्या मक्खी भंवरे को खेचर कह सकते है ?

उ०—नही; यह चउन्द्रिय होने से विकलेन्द्रिय है ।

३७. प्र०—सीप क्या जलचर मे गिनी जाती है ?

उ०—नहीं; यह वेइन्द्रिय होने से विकलेन्द्रिय हैं।

३८. प्र०—अपन जलचर है या स्थलचर ?

उ०—अपन तो मनुष्य है, जलचर स्थलचर आदि भेद तो तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के है।

३९. प्र०—तिर्यञ्च के कुल कितने भेद हैं ?

उ०—४८; एवेन्द्रिय के २२, विकलेन्द्रिय के ६ और तिर्यञ्च पचेन्द्रिय के २० कुल ४८।

४०. प्र०—ऐकेन्द्रिय के २२ भेद में से पृथ्वीकाय के कितने भेद है ?

उ०—चार; सूक्ष्म, बादर, अपर्याप्ता और पर्याप्ता।

४१. प्र०—एकेन्द्रिय के २२ भेद मे से अपकाय के कितने है ?

उ०—चार; सूक्ष्म, वादर, अपर्याप्ता, पर्याप्ता।

४२. प्र०—एकेन्द्रिय के २२ भेद में से तेउकाय के कितने ?

उ०—चार; सूक्ष्म, वादर, अपर्याप्ता और पर्याप्ता।

४३. प्र०—एवेन्द्रिय के २२ भेद मे से वायुकाय के कितने है ?

उ०—चार; सूक्ष्म, वादर, अपर्याप्ता और पर्याप्ता।

४४. प्र०—एकेन्द्रिय के २२ भेद मे से वनस्पति के किनने है ?

उ०—६; सूक्ष्म, बादर, अपर्याप्ता, पर्याप्ता, प्रत्येक और साधारण। सब मिलकर २२ भेद हुवे।

४५. प्र०—विकलेन्द्रिय के ६ भेद कैसे होते है ?

उ०—वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउन्द्रिय यह तीन ही विकलेन्द्रिय है, इन तीनों के अपर्याप्ता और पर्याप्ता मिल के ६ भेद हुए।

४६. प्र०—तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के २० भेद कैसे हुए ?

उ०—जलचर, स्थलचर, उरपर, भुजपर और खेचर। इन पांचो के संज्ञी और असंज्ञी मिलकर १० और

इन दसों के पर्याप्ता और अपर्याप्ता मिलकर २०
भेद हुए।

४७. प्र०—तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के २० भेद में से अपर्याप्ता कित
और पर्याप्ता कितने ?

उ०—१० अपर्याप्ता (५ गर्भज के और ५ समूर्च्छिम के)
१० पर्याप्ता (५ गर्भज के ५ समूर्च्छिम के)।

४८. प्र०—तिर्यञ्च के ४८ भेद में त्रस कितने और स्थाव
कितने ?

उ०—२६ त्रस के (२० पंचेद्रिय के, ६ विकलेन्द्रिय के
२२ स्थावर के (पृथ्वीकाय आदि एकेन्द्रिय के)

४९. प्र०—तिर्यञ्च के ४८ भेद मे से असज्ञी के कितने औ
संज्ञी के कितने ?

उ०—असंज्ञी के ३८ भेद (२२ एकेन्द्रिय के, ६ विक
न्द्रिय के और १० असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के) स
मिल ३८ हुए और १० संज्ञी के।

५०. प्र०—सूक्ष्म एकेन्द्रिय किसको कहते है ?

उ०—जो मारने से मरते नही, जलाने से जलते न
यानि आयुष्य से मरे, बिना आयुष्य मरे न
सम्पूर्ण लोक में काजल की कूपली समान भरे
केवल ज्ञानी के नजर आवें और छद्मस्त (अप
के नजर नहीं आवे उसको सूक्ष्म एकेन्द्रिय क
है। उनका आयु अन्तर महूर्त का होता है।

५१. प्र०—वादर जीव किसको कहते है ?

उ०—जो मारने से मरते है, हनाने से हनते है, जल
से जलते है आयुष्य आने से मरते है और वि
आयुष्य से भी मरते हैं अपन इनको देख

ज्योतिष मंडल दिग्दर्शन

शनि का तारा ३ योजन ऊपर

मंगल का तारा ३ योजन ऊपर

गुरु का तारा ३ योजन ऊपर

शुक्र का तारा ३ योजन ऊपर

बुद्ध का तारा ४ योजन ऊपर
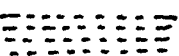
नक्षत्र मंडल ३ योजन ऊपर

चन्द्र विमान १ योजन ऊपर

नित्य राहू- पर्व राहू ७९ योजन ऊपर

सूर्य का विमान १ योजन ऊपर

केतू का विमान ९ योजन ऊपर
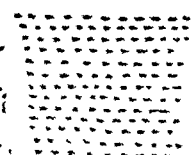
तारा मंडल समतल भूमि से ७९० योजन ऊंचा है, यहां से ऊपर ११० योजन में ज्योतिष विमान है!

सकते हैं और नहीं भी देख सकते हैं।

५२. प्र०—तिर्यञ्च के ४८ भेद मे से सूक्ष्म के कितने और बादर के कितने हैं?

उ०—सूक्ष्म के १० और बादर के ३८।

पाठ–१२

तिर्छालोक में ज्योतिषी देव

१. प्र०—क्या तुमने सूर्य देखा है?

उ०—हां।

२. प्र०—जैन शास्त्रानुसार सूर्य क्या है?

उ०—ज्योतिषी देवता का विमान।

३ प्र०—यह विमान किस चीज का है?

उ०—स्फटिक रत्न का।

४. प्र०—यह उजाला कहां से आता है?

उ०—सूर्य के विमान से।

५. प्र०—उजाला का दूसरा नाम क्या है?

उ०—ज्योति या प्रकाश।

६. प्र०—सूर्य मे रहने वाले देव कैसे देवता कहलाते है?

उ०—ज्योतिषी देव।

७. प्र०—सूर्य के सिवाय कोई दूसरे ज्योतिषी देव है?

उ०—हां है, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र व तारा।

८. प्र०—कुल कितने प्रकार के ज्योतिषी देव है?

सकते है और नहीं भी देख सकते हैं।

५२. प्र०—तिर्यञ्च के ४८ भेद मे से सूक्ष्म के कितने और बादर के कितने हैं?
उ०—सूक्ष्म के १० और बादर के ३८।

पाठ-१२

तिर्च्छालोक में ज्योतिषी देव

१. प्र०—क्या तुमने सूर्य देखा है?
उ०—हां।

२. प्र०—जैन शास्त्रानुसार सूर्य क्या है?
उ०—ज्योतिषी देवता का विमान।

३ प्र०—यह विमान किस चीज का है?
उ०—स्फटिक रत्न का।

४. प्र०—यह उजाला कहां से आता है?
उ०—सूर्य के विमान से।

५. प्र०—उजाला का दूसरा नाम क्या है?
उ०—ज्योति या प्रकाश।

६. प्र०—सूर्य मे रहने वाले देव कैसे देवता कहलाते हैं?
उ०—ज्योतिषी देव।

७. प्र०—सूर्य के सिवाय कोई दूसरे ज्योतिषी देव है?
उ०—हां है, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र व तारा।

८. प्र०—कुल कितने प्रकार के ज्योतिषी देव है?

उ०—पांच प्रकार के; यानि चन्द्रमा, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, और तारा।

९. प्र०—अपने से ऊपर कितने जोजन तक तिर्छा लोक है; और उसमें क्या है?

उ०—अपने ऊपर नवसौ जोजन तक तिर्छा लोक है और उसमें ज्योतिषी मंडल है।

१०. प्र०—अपने से कितने जोजन ऊपर तारा मण्डल है और तारों के विमान कितने लम्बे चौड़े व ऊचे है?

उ०—७९० जोजन ऊपर तारा मण्डल है और प्रत्येक विमान आध-कोस के लम्बे, चौड़े, व पाव कोस के ऊंचे है, और पांच ही रंग के रत्नों में है।

११. प्र०—तारा मण्डल से कितना ऊपर सूर्य का विमान है और वो कितना लम्बा, चौडा, व ऊंचा है?

उ०—तारा मण्डल से १० जोजन ऊपर है और एक जोजन के ६१ भाग मे ४८ भाग का लम्बा-चौडा और २४ भाग का ऊंचा है।

१२. प्र०—सूर्य के और चन्द्रमा के विमान में कितना अन्तर है और कितना लम्बा, चौडा व ऊचा है?

उ०—सूर्य के विमान से ८० जोजन ऊपर चन्द्रमा का स्फटिक रत्नमय एक जोजन के ६१ भाग मे से ५६ भाग का लम्बा-चोड़ा और २८ भाग का ऊचा है।

१३. प्र०—नक्षत्र मण्डल कहां है, और उनके विमान कितने लम्वे चौड़े व ऊचे है?

उ०—चन्द्रमा से ४ जोजन ऊपर नक्षत्र मण्डल है और उन नक्षत्रों के विमान पांच ही वर्णों के एक कोस

के लम्बे चौड़े व आध कोस के ऊचे हैं।

१४. प्र०—ग्रह मण्डल कहां है और वो कितने लम्बे चौड़े और कैसे रत्नोंमय है।

उ०—नक्षत्र मण्डल से ऊपर चार जोजन ग्रहमण्डल है और वो विमान दो कोस के लम्बे चौड़े व एक कोस के ऊचे और पांच ही वर्णों के रत्नों में है।

१५. प्र०—ग्रह मण्डल के ऊपर क्या है ?

उ०—ग्रह मण्डल के ऊपर चार जोजन बुद्ध का तारा हरे रत्नमय है, और बुद्ध के तीन जोनन ऊपर शुक्र का तारा स्फटिक (सफेद) रत्नमय है और शुक्र से तीन जोजन ऊपर बृहस्पति का तारा पीले रत्नों का है।

१६. प्र०—मंगल और शनि कहां है, और कैसे है ?

उ०—बृहस्पति से ३ जोजन ऊपर मंगल ग्रह का तारा रक्त (लाल) रत्नमय और मंगल से तीन जोजन ऊपर शनि का तारा जबू (जामुन के रंग) रत्न-मय है।

१७. प्र०—राहु और केतु ग्रह के तारे कहां हैं ?

उ०—सूर्य के विमान से एक जोजन नीचे केतु का विमान है और चन्द्रमा से एक जोजन नीचे राहु[1]

नोट—[1]कभी-कभी जो सूर्य व चन्द्रमा का ग्रहण होता है वह सूर्य के नीचे जितने अंश मे केतु का विमान आजाता है उतने ही अंश में सूर्य ग्रहण गिना जाता है। इसी प्रकार चन्द्रमा के नीचे जितने अंशों मे राहु का विमान आता है उतने ही अंशो मे चन्द्र ग्रहण होता है।

का विमान है। यह सभी ज्योतिषी चक्र अढाई द्वीप के अन्दर नवसौ जोजन मे सदा काल फिरता है। इसके ऊपर ऊर्ध्व लोक है।

१८. प्र०—कुल देवता कितने है?
उ०—असंख्याता।

१९. प्र०—विमान की संख्या अधिक है, या देवताओं की?
उ०—देवों की संख्या अधिक है, क्योंकि प्रत्येक विमान में बहुत से देव रहते हैं।

२०. प्र०—ज्योतिषीयों मे देव ज्यादा है या देवियां?
उ०—देवियां, क्योंकि प्रत्येक देवता के कम से कम चार देवियां अवश्य होती है।

२१. प्र०—अपन जो विमान देखते है वे सब किस लोक मे है?
उ०—तिर्छालोक मे।

२२. प्र०—जीव के ५६३ भेद में ज्योतिषियों के कितने भेद है?
उ०—बीस; चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारा यह पांच चर, और पांच स्थित मिलकर ज्योतिषियों की कुल दश जात होती है। उन दशों का पर्याप्ता व अपर्याप्ता मिलकर बीस भेद ज्योतिषियों के होते है।

२३. प्र०—जिन विमानों को अपन देखते है, वे सब चर है या स्थिर?
उ०—चर है; यानि निरंतर पूर्व से दक्षिण, पश्चिम, उत्तर इस प्रकार गोल फिरते रहते है।

२४. प्र०—स्थिर विमान कहां है?
उ०—अढाई द्वीप के बाहर।

२५. प्र०—ज्योतिषियों मे इन्द्र कितने है?
उ०—दो; चन्द्रमा और सूर्य।

पाठ-१३

तिर्छालोल में वाणाव्यन्तर देव

१. प्र०—तिर्छालोक का आकार कैसा है ?
उ०—गोल चक्की के पाट जैसा।

२. प्र०—तिर्छलोक की लम्बाई चौडाई कितनी है ?
उ०—एक राज की अर्थात् असंख्याता जोजन की।

३. प्र०—तिर्छालोक की ऊचाई कितनी है ?
उ०—१८०० जोजन की।

४. प्र०—अपने से नीचे कितने जोजन तक तिर्छालोक कहलाता है ?
उ०—नवसौ जोजन तक।

५. प्र०—इन वनसौ जोजन में क्या-क्या है ?
उ०—जिस जमीन पर अपन रहते है, वह एक हजार जोजन का पृथ्वी पिड है उसमे एकसौ जोजन ऊपर और सौ जोजन नीचे छोडकर वीच मे ८०० जोजन की पोलान मे असंख्याता वाणव्यतर देवताओं के नगर है। नीचे के सौ जोजन तो अधोलोक मे गिने जाते है और ऊपर के सौ जोजन मे से १० जोजन ऊपर और १० जोजन नीचे छोडकर बीच मे जो अस्सी जोजन की पोलान है उसमे दस जाति के जृंभकादेव रहते है।

६. प्र०—वाणव्यंतर देवों के कितने भेद है ?
उ०—सोलह; १ पिशाच २ भूत ३ यक्ष ४ राक्षस ५ किन्नर ६ किंपुरिस ७ मोहरग ८ गधर्व ९ आण-

पन्नी १० पाकपन्नी ११ इसीवाई १२ भुइवाई १
कंदिय १४ महाकंदिय १५ कोइड १६ पयंगदेव

७. प्र०—जृंभका देव कितनी जाति के हैं ?

उ०—दस जाति के अर्थात् १ आणजृंभका (अन्न रखवाले) २ पाणजृंभका (पानी के) ३ लेंणजृंभक स्वर्ण (आदि धातु के) ४ सैणजृंभका (मकान ५ वत्थजृंभका (वस्त्र के) ६ पुष्पजृंभका (फ़ के) ७ फलजृंभका (फल के) ८ बीजजृंभका (बी धान के) ९ बिज्जुजृंभका (बिजली के) १० अवि जृंभका। (पानभाजी के रखवाले) यह दस ही जगत की रखवाली करते है जो यह नही हों तो वाणव्यंतर देवता वस्तुओं का हरण‡ कर लेवे इसलिये यह देवता त्रिकाल (सध्या, सवेरे, औ दुपहर) मे फेरी देने निकलते है यानि चौकीदा करते है।

नोट—‡यह जृंभका अपनी फेरी के समय कोई वस्तु ठिकान न पावे तो वे अवधिज्ञान से देखते है, कि अमुक (फला) देव ने इस वस्तु का हरण किया है, ऐसा जानकर उस चं देवता को पकड कर इन्द्र के पास ले जाते हैं। तब इ उस चोर देवता को वज्र से प्रहार करते हैं। वे देवता प्रहार मे मरता तो नही, किन्तु १२ वर्ष तक हाय आहि काट पाता है और विशेष अपराधी को देश निकाला आ की सजा देते है। जिस से वो देवता १२ वर्ष तक इस पृ पर किसी शून्य मकान, वृक्ष आदि में निवास करता है। यह चोर देवता जहा निवास करता है उस जगह के मनुष्य आदि

८. प्र०—वाणव्यंतर व जृंभका देव कुल कितने है ?
उ०—असंख्याता ।

९. प्र०—वाणव्यंतर देवताओं का आयुष्य कितना होता है ?
उ०—जघन्य यानि कम से कम दस हजार वर्ष का, और उत्कष्ट (ज्यादा से ज्यादा) एक पल्योपम का।

१०. प्र०—वाणव्यंतर मे देवियों की आयु कितनी होती है ?
उ०—जघन्य दस हजार वर्ष की और उत्कृष्ट अर्द्ध-पल्योपम की ।

११. प्र०—वाणव्यंतर मर के कौनसी गति में जाते है ?
उ०—दो गति (मनुष्य वा तिर्यञ्च) में ।

१२. प्र०—वाणव्यंतर के नगर अपने नीचे पोलान में है। तो वहां सूर्य का प्रकाश कैसे पहुंचता होगा, क्या वे घोर अंधकार ही में रहते होंगे ?
उ०—नहीं; उनके नगरों मे बड़े-बडे महल रत्नों से जडित है । वे सब सूर्य के समान प्रकाश करते है। और उनके शरीर और आभूषणों (गहणा) का भी बहुत प्रकाश रहता है। जिससे वहां अंधकार नहीं है।

१३ प्र०—अपन कभी इन नगरों मे देवता हुए होंगे ?
उ०—हां, अपन भी अनन्तवार इन नगरों में देवता व देवीपने से उत्पन्न हुए है ।

को अपने दुष्ट स्वभाव का परिचय देने के लिये लोगो को भयकर रूप आदि करके हीन मनोबल वालों को भयभीत करते हैं। इनका विशेष प्रभाव शीलभ्रष्ट नर-नारियों पर ही पडता है। शीलवन्त और संयमी मनुष्यों से तो उलटा डरते है और नमन आदि स्तुति सेवा करते है।

१४. प्र०—कैसे मनुष्यों को वाणव्यंतर आदि देवता सदा नमस्कार करते है, व भजते है और स्तुति करते है। और किसी प्रकार का दुःख परिसह नही दे सकते है ?

उ०—तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, उत्तम साधु, साध्वी, और ब्रह्मचारी जो शुद्ध शीलव्रत पालने वाले स्त्री पुरुषों को देवता भी नमस्कार करते है, किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुंचा सकते है।

१५. प्र०—जीव के ५६३ भेदों मे से वाणव्यतर के कितने भेद है ?

उ०—बावन; (सोलह जाति के वाणाव्यंतर दस जाति के जृंभका इन २६ के पर्याप्ता और अपर्याप्ता मिलकर ५२ हुए ।)

१६. प्र०—वाणव्यतर देवो मे इन्द्र कितने हैं ?

उ०—बत्तोस (१६ उत्तर के और १६ दक्षिण के एक-एक जाति के दो-दो इन्द्र होते है ।)

१७. प्र०—इन्द्र किसको कहते है और कुल कितने है ?

उ०—देवताओं के राजा को इन्द्र कहते है और कुल इन्द्र ६४ है ।

पाठ- १४

आठ कर्म

१. प्र०—अपनी आत्मा और सिद्ध भगवान की आत्मा में क्या अन्तर है ?

उ०—अपनी आत्मा तो आठ कर्मों से बंधी हुई है और सिद्ध भगवन्त सब कर्मो के बन्धन से मुक्त (खुले-हुए है)।

२. प्र०—सिद्ध भगवन्त को अनन्त ज्ञान है यानि अनन्ता-काल की बात को जानते है, और अपन नहीं जानते है इसका क्या कारण हैं ?

उ०—सिद्ध भगवान ने ज्ञानावर्णीय कर्म का नाश किया है, और अपन ने नहीं किया। जैसे सूर्य मे प्रकाश करने का और आंख में देखने का स्वभविक गुण है, किन्तु सूर्य के आगे वादल व आंख के ऊपर पट्टी आजाने से सूर्य व आंख का गुणा (देखना आदि) छिप जाता है, इसी प्रकार आत्मा मे अनन्त ज्ञान गुण है किन्तु कर्मो का आवरण (परदा) आजाने से ज्ञान प्रगट होता नही है। ज्यों ज्यों ज्ञानावर्णिय कर्म क्षय या उपशम होते है त्यों-त्यों उतने ही अंश मे ज्ञान प्रगट होता जाता है।

३. प्र०—सिद्ध भगवन्त मोक्ष मे विराजे हुए, देवताओं के नाटकों के सुख, और नरक के जीवों का दुःख तथा अपने लोक की सम्पूर्ण रचनाओं को हथेली

के आंवले के समान देखते हैं। और अपन दीवाल के पीछे की चीज भी नही देख सकते इसका क्या कारण ?

उ०—अपन को दर्शनावार्णीय कर्म जो राजा के द्वार पाल समान है वो देखने में बाधा डालता है, और सिद्ध भगवान ने इस कर्म का क्षय करलिया है।

४. प्र०—सिद्ध भगवन्त को तो अनन्त सुख है और अपन को नही इसका क्या कारण है ?

उ०—अपन को वेदनीय कर्म जो शहद भरी तलवार के समान है चाटने से स्वाद तो आता है किन्तु जीभ कट जाने से दुःख भी होता है। इसी प्रकार वेदनीय कर्म शाता और अशाता देता है और सिद्ध भगवन्त ने उस कर्म का क्षय किया है।

५. प्र०—अपन मे क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषाय है और सिद्ध भगवन्त मे नहीं है इसका क्या कारण है ?

उ०—अपन मोहनीय (जो दारू से बेहोस होने वाले समान) कर्म के वंश में है और सिद्ध भगवन्त मोहनीय कर्म का सर्वथा क्षय किया है।

६. प्र०—अपन को वृद्ध अवस्था और मौत का भय है और सिद्ध भगवन्त को नहीं इसका क्या कारण है

उ०—अपन ने आयु कर्म को क्षय नही किया है और सिद्ध भगवन्त ने आयु कर्म क्षय किया जिससे अजर और अमर पद को पाये है।

७. प्र०—अपन नारकी, तिर्यञ्च, मनुष्य, और देवता चारों गति में भटकते हे। और अनेक प्रकार

शरीर को धारण करते है। किन्तु सिद्ध भगवान को ऐसा नहीं करना पडता है इसका क्या कारण ?

उ०—अपन ने नाम कर्म का क्षय नहीं किया है और सिद्ध भगवन्त ने उसका क्षय किया है।

८. प्र०—अपन ऊंच नीच गोत्र में (कुल मे, बंश मे) जन्म लेते है और सिद्ध भगवन्त आत्मा के मूल गुण को (अगुरु–लघु) प्राप्त हुए है इसका क्या कारण ?

उ०—अपन गोत्र कर्म के वश मे है और सिद्ध भगवन्त ने गोत्र कर्म का क्षय किया है।

९. प्र०—अपन को मनोवांच्छित अर्थ साधने में बारम्बार विघ्न होता है, और सिद्ध भगवन्त ने सब अर्थ की सिद्धी की है इसका क्या कारण है ?

उ०—सिद्ध भगवान ने अन्तराय कर्म का क्षय किया है अपन ने नहीं किया है।

१०. प्र०—ज्ञानावर्णिय कर्म किसको कहते है ?

उ०—ज्ञान को रोकने वाला कर्म यानि ज्ञान पर आवरण (परदा) डालने वाला कर्म।

११. प्र०—ज्ञान के मुख्य भेद कितने और कोन-कौन से है ?

उ०—पांच; मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान और केवलज्ञान।

१२. प्र०—मतिज्ञान किसको कहते है ?

उ०—पांच इन्द्रियां और छट्ठा मनसे जो वात जानी जावें उसे मतिज्ञान कहते है।

१३. प्र०—श्रुतिज्ञान किसे कहते है ?

उ०—शास्त्र पढने से और सुनने से जो ज्ञान आवे उसे श्रुतिज्ञान कहते है।

१४. प्र०—अवधिज्ञान किसे कहते है ?

उ०—मर्यादा में रहे हुए रूपी द्रव्यों को इन्द्रियों की सहायता बिना आत्मा के प्रदेश से जाने (देखे) उसे अवधिज्ञान कहते है ।

१५. प्र०—मनपर्यवज्ञान किसे कहते है ?

उ०—ढाई द्वीप में रहे हुए पर्याप्ता संज्ञी पचेन्द्रिय जीवों की मन की बात को जाने उसे मनपर्यवज्ञान कहते है ।

१६. प्र०—केवलज्ञान किसे कहते है ?

उ०—लोकालोक मे रहे हुए सर्व रूपी, अरूपी द्रव्य तथा सर्व जीवों के गये काल, आवते काल और वर्तमान काल के सर्व भाव जाने, देखे उसे कवल-ज्ञान कहते है ।

१७. प्र०—दर्शनावर्णिय कर्म किसे कहते है ?

उ०—दर्शन यानि देखने के गुणों को रोकने वाले कर्म को दर्शनावर्णिय कर्म कहते है ।

१८. प्र०—दर्शन कितने है ?

उ०—चार; चक्षु दर्शन (आंखों से देखना) अचक्षु दर्श (विना आंखों से देखना) अवधि दर्शन (अवधि ज्ञान से देखना) और केवल दर्शन (केवलज्ञान से देखना) ।

१९. प्र०—वेदनीय कर्म के कितने भेद है ?

उ०—दो; शाता वेदनीय, और अशाता वेदनीय ।

२०. प्र०—शाता वेदनीय से क्या होता है और अशाता वेद-नीय से क्या होता है ?

उ०—शाता वेदनीय से सुख होता है, और अशाता वेद

नीय से दुःख होता है ।

२१. प्र०—सिद्ध भगवन्त को शाता वेदनीय है या अशाता वेदनीय ?

उ०—उन्होंने वेदनीय कर्म का ही नाश कर दिया है और अनन्त आत्मिक सुख में विराजमान है ।

२२. प्र०—मोहनीय कर्म के मुख्य भेद कितने है ?

उ०—दो; दर्शन मोहनीय और चरित्र मोहनीय ।

२३. प्र०—दर्शन मोहनीय किसको कहते है ?

उ०—दर्शन याने समकित् (सच्ची मान्यता) को रोकने वाले कर्म को ।

२४. प्र०—चारित्र मोहनीय कर्म किसे कहते हैं ?

उ०—चारित्र (कर्मो से छूटने का उपाय तप, नियम, संयम आदि) को मोहने (रोकने) वाले कर्म को ।

२५. प्र०—आयु कर्म के मुख्य भेद कितने है ?

उ०—चार; नर्क आयु (नारकी का आयुष्य) तिर्यञ्च आयु, मनुष्यआयु, और देवता का आयुष्य ।

२६. प्र०—नाम कर्म के कितने भेद है ?

उ०—दो; शुभ नाम और अशुभ नाम ।

२७. प्र०—नाम कर्म किसको कहते है ?

उ०—जिसके उदय से जीव अरूपी होने पर भी नाम कर्म के योग से और पुद्गलों के संयोग से नर्क मे जाने से नेरिया नाम धराता है, तिर्यञ्च में जाने से पशु, पक्षी, वृक्ष, फलादि नाम धराता है । मनुष्य गति मे जन्म लेकर मनुष्य का नाम धराता है और देवलोक में जन्म लेकर देवताओं के नाम धराता है ।

२८. प्र०—शुभ नाम कर्म के उदय से जीव को क्या फल मिलता है ?

उ०—जिसके उदय से जीव को गति, जाति, शरीर, अंग, उपांग, रूप लावण्य तथा यशोकीर्ति आदि अच्छे पाते है ।

२९ प्र०—अशुभ नाम कर्म के उदय से क्या फल मिलता है ?

उ०—जिसके उदय से जीव को गति, जाति, अंग (छाती, पेट को कहते है) उपांग (हाथ, पांव को कहते है) रूप लावण्य तथा यशोकीर्ति आदि अच्छे नही पावे ।

३०. प्र०—गोत्र कर्म के मुख्य भेद कितने है ?

उ०—दो; ऊच गोत्र और नीच गोत्र ।

३१. प्र०—गोत्र के क्या अर्थ है ?

उ०—कुल कथवा वंश ।

३२. प्र०—ऊच गोत्र से क्या फल मिलता है ?

उ०—जाति (एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक) कुल, बल, रूप तथा ऐश्वर्य आदि उच्च प्रकार के यानि प्रशसा करने के योग्य मिलते है ।

३३. प्र०—नीच गोत्र से क्या फल मिलता है ?

उ०—जिसके उदय से जीव को, जाति, कुल, बल, रूप, तथा ऐश्वर्य हलके और प्रशंसा नहीं करने योग्य मिलते है ।

३४. प्र०—अन्तराय कर्म के कितने भेद है ?

उ०—पांच; दान अन्तराय, लाभ अन्तराय, भोग अन्तराय, उपभोग अन्तराय, और वीर्यान्तराय ।

३५. प्र०—दानान्तराय कर्म किसे कहते है ?

उ०—जिसके उदय से जीव योग्य सामग्री (चीज वस्तु धन आदि) होते हुए और योग्य पात्र का संयोग होने पर भी दान नही दे सकता है ।

३६. प्र०—लाभान्तराय कर्म किसे कहते है ?

उ०—जिसके उदय से जीव को अनुकूल सयोग (जैसे अपनी कमाई में या बडेरों के धन मे या किसी भी लाभ होने के मौके पर भी) लाभ नही हो सके उसे लाभान्तराय कर्म कहते है ।

३७. प्र०—भोगान्तराय कर्म किसे कहते है ?

उ०—भोग की सामग्री जैसे त्रस्त्र आभूषण (गहणों) स्त्री, घर, बगीचा आदि होते हुए और भोगने की लालसा रहते हुए भी भोग नहीं सके ।

३८. प्र०—उपभोगान्तराय कर्म किसे कहते है ?

उ०—उपभोग यानि भोजन, दूध, घृत, फल-फूल आदि प्राप्त होते हुए भी और भोगने की लालसा होते हुए भी भोग नहीं सकें उसे उपभोग अन्तराय कहते है ।

३९. प्र०—वीर्यान्तराय कर्म किसे कहते है ?

उ०—बलवान (शक्तिमान) होते हुए भी जीव धर्मादि कार्यो में पुरुषार्थ नहीं कर सके उसे वीर्यान्तराय कर्म कहते है ।

४०. प्र०—संसारी जीवों को कर्म बंधन होता है और सिद्ध भगवन्तों को नही होता है इसका क्या कारण है ?

उ०—कर्म बंधन के कारण होवे तो कर्म बंधन होता है जैसे अपने को भूख कारण है तो उसके लिये रोटी करनी पड़ती है और रोटी बनाने में छः काय

जीवों की हिंसा होती है और हिंसा से कर्म बंधन होता है और सिद्ध भगवान को कोई कारण ही नही है। जिससे कर्म बंधन भी नहीं होता है।

पाठ–१५

आश्रवतत्व और संवरतत्व

१. प्र०—कर्म बंधन के हेतु, अर्थात् कारण कितने है ?
उ०—पांच; मिथ्यात्व, आविरति, प्रमाद, कषाय और जोग।

२. प्र०—कर्म बंधन के पांचों हेतु या कारणों को क्या कहते है ?
उ०—आश्रव (आते हुए कर्मो के पुद्गल)।

३. प्र०—मिथ्यात्व का अर्थ क्या है ?
उ०—झूंठी मान्यता अर्थात् वीतराग प्रभु के फर्माये हुए तत्वों को जाने नही और श्रद्धे नहीं।

४. प्र०—अविरति का अर्थ क्या है ?
उ०—व्रत पञ्चखान से रहितपना; यानि जिसको व्रत पञ्चखान नही होवे उनको अविरति कहते है।

५. प्र०—प्रमाद का अर्थ क्या है ?
उ०—धर्म कार्य मे आलस्य करे प्रसको प्रमाद कहते है।

६ प्र०—कषाय का अर्थ क्या है ?
उ०—क्रोध, मान, माया, लोभ और इसी से जीव ससार

में भटकता है ।

७. प्र०—जोग का अर्थ क्या है ?

उ०—मन, बचन, काया का व्यापार ।

८. प्र०—मन, वचन, काया को अच्छे रस्ते चलावे उसे क्या कहते है ?

उ०—शुभ जोग ।

९. प्र०—मन, वचन, काया को बुरे (खोटे) रस्ते चलावे उसे क्या कहते है ?

उ०—अशुभ जोग ।

१०. प्र०—आश्रव मे शुभ अशुभ ऐसे दो भेद हैं या नहीं ?

उ०—है; शुभ जोग से शुभ कर्मो का बंध होता है । उसको पुण्य यानि शुभ आश्रव कहते हैं और अशुभ जोग से अशुभ कर्म बंध होता है उसको पाप यानि अशुभ आश्रव कहते है ।

११. प्र०—आश्रव आत्मा को हितकारी है या अहितकारी ?

उ०—अहितकारी यानि त्याग ने लायक है ।

१२. प्र०—आश्रव आत्मा को क्यो अहितकारी है ?

उ०—आत्मरूप तालाब मे आश्रवरूप कर्मो के नाले आते है जिससे कर्म बंध होता है, और इसी के उदय से जीवचारो गति में भटकता है ।

१३ प्र०—कर्म आते हे उनकी रुकावट कैसे हो सकती है ?

उ०—आश्रवरूप द्वार बंध करने से ।

१४. प्र०—आश्रवरूप द्वार कैसे वद हो सकता है ?

उ०—वीतराग के फर्माये हुए शास्त्रों से तत्व ज्ञान ग्रहण कर उस पर पूर्ण श्रद्धा रखने से समकित की प्राप्ति होती है । समकित की प्राप्ति के बाद व्रत

पञ्चखान करने और विषय कषाय छोडने से कर्मों की रूकावट होती है उसे संवर कहते है।

१५. प्र०—संवर के कितने भेद है ?
उ०—पांच; समकित, विरतिपन, अप्रमाद, अकषाय और शुभ जोग।'

१६. प्र०—विरतीपन का अर्थ क्या और उससे क्या लाभ ?
उ०—प्रणातिपात (जीव की हिंसा) मृषावाद (झूंठ) अदतादान (चोरी) मैथुन, परिग्रह, रात्रि भोजन आदि का त्याग कर पञ्चखान करने से अविरति रूप आश्रवद्वार बंद हो जाता है।

१७. प्र०—विरति के कितने भेद है ?
उ०—दो; देश विरति और सर्व विरति।

१८. प्र०—सर्व विरति किसको कहते है ?
उ०—उपर बतलाये हुए सर्व पापों का सर्वथा त्याग करने वाले मुनियों को सर्व विरति कहते है।

१९. प्र०—देश विरति किसको कहते है ?
उ०—जो अपनी शक्ति अनुसार व्रत पच्चखान करते है और उपयोग सहित पालते है ऐसे श्रावक श्राविकाओं को देश विरति कहते है।

२०. प्र०—अप्रमाद का अर्थ क्या और उससे क्या लाभ ?
उ०—पांचों प्रमाद को छोड़ना अप्रमाद और उससे

नोट—'शुभ जोग को निश्चयनय से आश्रव कहते है, किन्तु पुण्य बंध के हेतु और मोक्ष की प्राप्ति में साधनभूत होने से व्यवहार नय से इसे संवर मे गिनते है। निश्चयनय से अजोगीपना संवर गिना जाता है।

प्रमाद रूप आश्रव द्वार बंद होता है।

२१. प्र०—पांच प्रमाद कौन-कौन से है ?
उ०—मद, विषय, कषाय निन्दा और बिकथा।

२२. प्र०—अकषाय का अर्थ क्या और उससे क्या लाभ ?
उ०—क्रोधादि कषाय का त्याग करना अकषाय और उससे कषाय रूप आश्रव द्वार बंद होता है।

२३. प्र०—शुभ जोग से क्या लाभ ?
उ०—इससे अशुभ जोग रूप आश्रवद्वार बंद होता है।

२४. प्र०—संवर तत्व जीव को हितकारी है या अहितकारी ?
उ०—हितकारी, आदरणीय।

पाठ- १६

नारकी व परमाधामी

१. प्र०—वहुत पाप करने वाले जीव कहां जाते है ?
उ०—नरक मे जाते है।

२. प्र०—नरक कितने और उनके क्या नाम हैं ?
उ०—सात; घमा, वंशा, शिला, अंजना, रिट्ठा, मघा, और माघवइ।

३. प्र०—सात नारकों के गोत्र गुण निष्पन्न नाम क्या है ?
उ०—रत्न प्रभा (काले रत्न की भयंकर प्रभा है) शर्कर-प्रभा (तलवार जैसी तीक्ष्णा पत्थरवाली) वालू-प्रभा (उसमे उष्णा रेती है) पंक-प्रभा (लोही मांस

के कीचड वाली) धुम्र-प्रभा (धुंआ वाली) तम प्रभा (अंधकार वाली) तमतमा प्रभा (घोर अंधकार वाली)।

४. प्र०—सात नरक कहां है ?
उ०—अपने नीचे प्रमथ पहिली नरक है और वहां से असंख्याता जोजन नीचे दूसरी नरक है। इसी तरह से एक-एक से असंख्य जोजन नीचे अनुक्रम से सात नरक है व उसके नीचे अनन्त अलोक है।

५. प्र०—पहिली नरक की पृथ्वी अपने से कितनी दूर है ?
उ०—पहिली नरक का हजार जोजन के पट (छत) पर ही अपन रहते है ?

६. प्र०—नरक गति प्राप्त करने वाले जीवों को क्या कहते है ?
उ०—नारकीय व नैरिया

७. प्र०—नैरियों के मां बाप होते है या नहीं ?
उ०—नहीं; वे नरकवासी की कुंभिओं मे जन्मते है।

८. प्र०—नरकवासी की कुंभिआं कैसी है ?
उ०—तिजारा (अफीम) के डोडा की तरह पेट चौडा मुंह सकडा और अंदर तीक्ष्ण धारा होती है।

९. प्र०—नरक की कुंभिओं मे पापी जीव कैसे जन्म पाते है ?
उ०—अधोमुख से कुंभिओं मे पडकर अशुभ पुद्गलों का आहार करने से उनका शरीर फूल जाता है। तब कुंभिओं मे रही हुई तीक्ष्ण धारा से शरीर छिदता है तब वे महान दुःखी होकर बूम पारते है तब परमाधामी देव आके सडासी आदि शस्त्रों से उसको खीचकर टुकड़े-टुकड़े कर बाहर निकालते है उन्हें अत्यन्त वेदना होती है पर मरते

नहीं है किन्तु पारे की तरह फिर मिल जाते है।

१०. प्र०—सात नरक मिलकर कुल कितने नरकवास है ?
उ०—चौरासी लाख ।

११. प्र०—प्रत्येक नरकवासी में कुल कितनी कुंभियां है ?
उ०—असंख्याता कुंभियां है ।

१२. प्र०—प्रत्येक नरकवासो मे कितने नैरिये है ?
उ०—असंख्याता ।

१३. प्र०—नैरियों को नारकी में क्या दुःख है ?
उ०—केवल दुःख-ही-दु.ख है सुख कुछ भी नहीं है । क्षेत्र वेदना, अन्योन्यकृत वेदना, और परमाधामीकृत वेदना इतनी होती है कि जिसके सुनने से हृदय कांपने लगता है ।

१४. प्र०—क्षेत्र वेदना कितने प्रकार की होती है ?
उ०—दस प्रकार की; भूख, तृषा, ठंड, गर्मी, दाह, ताव-डर, चिन्ता, खुजली, परवशपना यह दस प्रकार की क्षेत्र वेदना है ।

१५ प्र०—अन्योन्यकृत वेदना का अर्थ क्या है ?
उ०—नारकी के जीव परस्पर (आपस में) लडते है व दांत और नाखून से एक दूसरे को बहुत ही दुःख देते है उसका नाम अन्योन्यकृत वेदना है ।

१६. प्र०—परमाधामीकृत वेदना माने क्या ?
उ०—परमाधामी जाती के क्रूर देवता है वह देवना नारकी को छेदते । भेदते है और बहुत ही दु.ख देते हैं ।

१७. प्र०—उन देवतों को परमाधामी क्यों कहते है ?
उ०—पूर्वभव मे अज्ञान तप (जिसमें असंख्य प्राणियों का

क्षय होय) उनके प्रभाव से परम अधर्मी याति बड़े पापी दयाहीन होते हैं।

१८. प्र०—परमाधामी देवता नारकी को दुःख क्यों देते है?

उ०—जैसे निर्दयी मनुष्य अपने शिकार के व्यसन का पोषण करने के लिये जगलों में पशु, पक्षियों को गोली, छर्रे, गुलेल आदि मारते है और वे जीव दुखी होकर तड़पते है, लौटते है और यह शिकारी आनन्द मान लेते है और कितनेक निर्दयी पुरुष जैसे पाडे, भेड, तीतर, मुर्गी आदि आपस मे लडाकर सुख मानते है इसी प्रकार परमाधामी नेरियों को दुःखी देखकर ही आनन्द मानते है।

१९. प्र०—ऐसा करने से परमाधामी देवों को पाप होता है या नहीं?

उ०—हां; पाप जरूर लगता है और इस पाप के करने से नीच योनियों मे बकरे, कूकड़े होकर अधूरी आयुष्य से ही मरते है।

२०. प्र०—परमाधामी देवता कितनी जाति के है?

उ०—१५ जाति के; १. अम्ब (आम की तरह नेरिये को मसलकर रस ढीला करते है) २. अबरस (चोर की तरह मारकर हड्डी, मांस, रक्त अंगोपांग अलग-अलग फेंकते है) ३. श्याम (चोर को मारने की तरह जबर प्रहार करते है) ४. सबल (सिंह, रीछ, कुत्ते, बिल्ली आदि क्रूर रूप बना कर नेरिये नेरिये को चीरफाड कर मांस निकाल लेते है) ५. रुद्र (देवो के भोपे जैसे बकरे आदि को त्रिशूल से छेदते है वैसे ही ये नेरिये को त्रिशूल, भाले

आदि से छेदते है) ६. महारुद्र (कसाई की तरह नेरिये के अंग को खण्ड-खण्ड करते है) ७. काल (हलवाई जैसे तलते है) ८. महाकाल (चिमटे से उसी का मांस तोड-तोडकर उसी को खिलाते है) ९. असिपत्र (गर्मी के घबराहट से वृक्षों के नीचे बैठने वाले नेरियों पर तलवार जैसे वृक्षों के पत्र डालकर टुकड़े-टुकड़े करते है) १०. धनुष (हजारों बाणों से नेरिये को छेदते है), ११. कुंभ (नींबू, मिरची के अथाणे की तरह पचाते है), १२. बालू (भडभूजे की तरह भूंजते है), १३. वैतरणी (धोबी की तरह वैतरणी नदी मे नेरिये को निचोते, पछाड़ते है), १४. खर स्वर (भयंकर स्वर शब्दों से डराते है), १५. महाघोष (जैसे वाघरी बकरियों भेडों को कोठे मे भरता है वैसे ही नेरियों को अधेरे और संकड़े स्थान मे अणमावते खचाखच भर देते है। यहां मांस भक्षण करने वाले को वहां उसी का मांस तोड़-तोडकर खिलाते है, और कहते है कि अरे! मूर्ख प्राणियों का मांस तुझे प्यारा था तो अब तेरे शरीर का भी खाकर मजा ले। इसी तरह शराब तथा अणछाणा जल पीने वाले को लोहा, शीशा आदि गर्मागर्म उबलता हुआ संडासी से पकड मुंह मे डालते है और कहते है कि तुझे शराब प्यारी थी तो जरा इसकी भी तो लज्जत ले। और परस्त्री सेवने वाले को लोहे की गर्म पुतली से आलिङ्गन कराके कहते है कि तुझे परस्त्री प्यारी थी तो अब यह सुन्दर लाल वर्ण

की स्त्री को अलिङ्गन करते क्यों रोता है ?

२१. प्र०—हर एक जाति के देवता कितने है ?

उ०—असंख्याता ।

२२. प्र०—नारकी जीवो का आयुष्य कितना होता है ?

उ०—जघन्य १० हजार वर्ष का और उत्कृष्ट ३३ सागरोपम का ।

२३. प्र०—नैरियों का शरीर कैशा होता है ?

उ०—अत्यन्त कुरूप ।

२४. प्र०—नारकीके नेरियो की अवघेणा कितनी होती है ?

उ०—प्रत्येक नरक मे अलग-अलग है सबसे कम पहल मे (७॥ धनुष्य की छः अंगुल) और सबसे ज्या सातवी मे (५०० धनुष्य की) ।

२५. प्र०—नेरिया असली शरीर से कम ज्यादा कर सक है या नही ?

उ०—ज्यादा से ज्यादा दुगुणा कर सकता है ।

२६. प्र०—नर्क मे प्रकाश होता है या नहीं ?

उ०—नही, वहां हमेशा अन्धकार ही रहता है ।

२७. प्र०—अन्धकार मे वे एक दूसरे को कैसे देखते है ?

उ०—अवधिज्ञान या विभंग ज्ञान से ।

२८. प्र०—अवधिज्ञान से कहां तक देख सकता है ?

उ०—कम से कम आध कोप, सातवी नर्क मे । ज से ज्यादा ४ कोस पहली नर्क में ।

२९. प्र०—नेरियो के इन्द्रियां कितनी होती हे ?

उ०—पांच ही होती है ।

३०. प्र०—अपन कभी नेरिये व परमाधामी हुए होंगे ?

उ०—अनन्त ही बार ।

सूर्य का मांडला
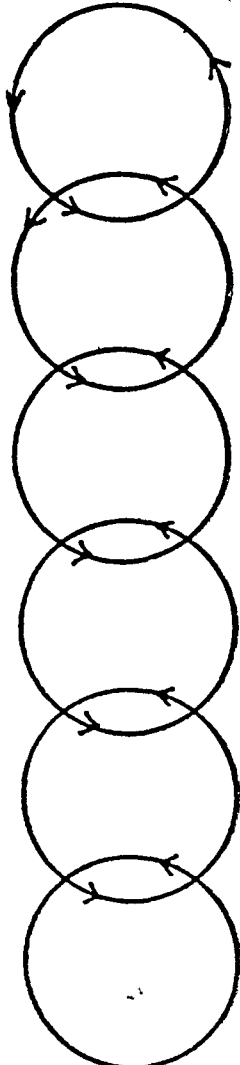
पाठ-१७

काल चक्र

१. प्र०—मानुष्य क्षेत्र (ढाई द्वीप) में चन्द्रमा सूर्य आदि गोल फिरते है इससे हमें क्या लाभ है ?
उ०—दिन और रात होती है जिससे हमें काल (घड़ी) पल आदि का प्रमाण मालूम होता है ।

२. प्र०—आज प्रातःकाल से दूसरे (कल) प्रातःकाल तक को क्या कहते है ?
उ०—एक दिन या अहोरात्री ।

३ प्र०—एक अहोरात्री की घड़ी कितनी है ?
उ०—साठ (६०) ।

४. प्र०—एक अहोरात्री के मुहूर्त कितने है ?
उ०—तीस ।

५. प्र०—एक मुहूर्त की घड़ी कितनी ?
उ०—दो; ।

६. प्र०—दो घडी यानि एक मुहूर्त की आवलिका कितनी ?
उ०—एक क्रोड सड़सट लाख सततर हजार दो सौ सोलहा १,६७,७७,२१६ ।

७. प्र०—एक आवलिका के असंख्यातवां भाग को क्या कहते है ?
उ०—समय यानि अति सूक्ष्म काल जिसके दो भाग केवली भगवान के भी कल्पनामें नही आ सकते ।

८. प्र०—आंख बन्द कर खोले उतने में कितने समय वीतते है ?

उ०—असंख्याता जिसकी संख्या अपन नहीं कर सकते।

९. प्र०—कितने दिन का एक पक्ष, कितने पक्ष का एक मास, कितने मास की एक ऋतु, कितने ऋतु का एक अयन, और कितने अयन का एक वर्ष होता है ?

उ०—१५ दिन का एक पक्ष, २ पक्ष का एक मास, २ मास का एक ऋतु, ३ ऋतु का एक अयन और २ आयन का एक वर्ष होता है।

१०. प्र०—एक वर्ष की ६ ऋतुओ के नाम क्या है ?

उ०—हेमन्त (मृगसर, पोष) शिशर (माघ, फागन) बसन्त (चैत, वैसाख) ग्रीष्म (जेठ, आसाढ) वर्षा (सावन भादवा) सर्द (आसोज, कार्तिक)।

११. प्र०—पूर्व किसको कहते है ?

उ०—८४ लाख वर्ष का एक पूर्वांग होता है और ८४ लाख पूर्वांग का एक पूर्व होता है। यानि ८४ लाख को ८४ लाख से गुणा करने से ७०५६०००००००००० सीत्तर लाख छप्पन हजार किरोड वर्ष का १ पूर्व होता है।

१२. प्र०—पल्योपम किसको कहते है ?

उ०—चार कोस का लम्बा चौड़ा व. ऊंचा एक कुआ होवे जिसमें सात दिन के जुगलिये बालक के केशों के टुकड़े-टुकड़े करके भरे जिस कूए पर चक्रवर्ती राजा की सैना निकल जाने पर भी कुछ भी नहीं दवे और उसमे से सौ-सौ वर्ष से एक-एक केश का टुकड़ा निकाला जावे जब सम्पूर्ण कुआ खाली हो जावे तब एक पल्योपम काल व्यतीत होता है।

१३. प्र०—सागरोपम किसे कहते हैं ?
उ०—दस क्रोडा क्रोड़ पल्योपम का एक सागरोपम होता है ।

१४. प्र०—कालचक्र का अर्थ क्या है ?
उ०—दस क्रोडाक्रोड़ी सागरोपम का एक अवसर्पिणी काल यानि जिसमें सुख व पुद्‌गलों की सरसाई समय-समय मे घटती जाती है । दस क्रोडाक्रोड सागरोपम का एक उत्सर्पिणी काल जिसमें समय-समय पर सुख और पुद्‌गलों की सरसाई बढ़ती जाती है । यह दोनों मिलकर बीस क्रोड़ाक्रोड़ सागरोपम का एक कालचक्र होता है ।

१५. प्र०—काल चक्र के बारह आरों मे घटता बढ़ता काल का परिणाम कौन से क्षेत्रों में होता है ?
उ०—पांच भारत व पांच ईरवृत मिलकर १० क्षेत्रों में बढ़ता घटता भाव वरत रहा है ।

१६. प्र०—एक अवसर्पिणी व उत्सर्पिणी के कितने आरे होते है ?
उ०—छः छः ।

१७. प्र०—यह छः आरे एक सरीखे होते है या छोटे बड़े ?
उ०—छोटे बड़े होते हैं ।

१८. प्र०—एक काल चक्र के बारह आरों के नाम क्या है ?
उ०—प्रथम अवसर्पिणी के ६ आरों के नाम—१. सुखमा सुखम, २. सुखम, ३. सुखमा दुखम, ४. दुखमा सुखम, ५. दुखम, ६. दुखमा दुखम ।
उत्सर्पिणी काल के ६ आरो के नाम—१. दुखमा दुखमा, २. दुखम, ३. दुखमा सुखम, ४. सुखमा

दुखम, ५. सुखम, ६. सुखमा सुखम।

१६. प्र०—अवसर्पिणी काल के ६ आरों के काल का प्रमाण क्या है ?

उ०—पहला आरा चार क्रोड़ा क्रोड सागरोपम का, दूसर तीन क्रोडाक्रोड़ा सागरोपम का, तीसरा दो क्रोडा क्रोड़ सागरोपम, चौथा एक क्रोड़ाक्रोक्र सागरोप मे ४२ हजार वर्ष कम, पांचवां और छठ्ठा इकीस इकीस हजार वर्ष का।

२०. प्र०—उत्सर्पिणी काल के ६ आरों का प्रमाण क्या है

उ०—पहला और दूसरा इकीस-इकीस हजार वर्ष त तीसरा एक क्रोड़ाकोड़ सागरोपम में ४२ हज वर्ष कम, चौथा दो क्रोड़ाक्रोड़ सा० का, पांच तीन क्रोड़ाक्रोड़ सा० का और छठ्ठा चार क्रो क्रोड़ सा० का।

२१. प्र०—अवसर्पिणी काल के पहले आरे का सुख कै होता है ?

उ०—देव कुरु उत्तर कुरु के जुगलिया जैसा होता तीन पल्योपम का आयुष्य और ३ कोस का शरी मनुष्य के शरीर में २५६ पांसुली होती है अ ३ दिन से अहार की इच्छा होती है। स्त्री पु महादिव्य रूपवन्त सरल स्वभावी होते है। आरे में पृथ्वी की सरसाई मिश्री जैसी होती

२२. प्र०—अवसर्पिणी काल का दूसरा आरा कैसा होता

उ०—इस आरे का सुख हरिवास रम्यक वास के लिया जैसा होता है, दो कोस का शरीर, पल्योपम का आयुष्य व १२८ पांसुली होती

और दो दिन से आहार की इच्छा होती हैं, पृथ्वी का स्वाद शकर जैसा होता है।

२३. प्र०—अवसर्पिणी का तीसरा आरा कैसा होता है?

उ०—उसका सुखमादुखम् नाम है, (यानि सुख बहुत और दु:ख थोड़ा) एक कोस का शरीर, एक पल्योपम का आयुष्य और शरीर में ६४ पांसुली होती है। एक दिन से अहार की इच्छा होती है। पृथ्वी का स्वाद गुड़ जैसा होता है।

२४. प्र०—अवसर्पिणी का चौथा आरा कैसा होता है?

उ०—उतरते तीसरे आरे मे काल स्वभाव से दस प्रकार के कल्पवृक्ष इच्छित वस्तु पूरी नहीं देने से जुगलिये आपस में लड़ने लगते है उनको समझाने को १५ कुलकर अनुक्रम से होते हैं, पहले से ५ कुलकर तक हकार दंड चलता है ६ से १० तक मकार दंड चलता और ११ से १५ तक धिक्कार दंड चलता है। अर्थात लड़ते हुए जुगलिया को, हैं, मत, धिक्कार कहने से शरमा कर भाग जाते है। और अकर्म भूमि मिटकर कर्मभूमि होती है। तीसरे आरे के ८४ लाख पूर्व से कुछ ज्यादा वाकी रहे तव १५वें कुलकर पहले तीर्थंकर अध्योध्या नगरी में होते हे; उस समय काल दोष से कल्पवृक्ष सर्वथा फल देने वंद हो जाते है। तव मनुष्य भूख से पीड़ित हो अकुलाते है उस समय करुणा करके जो होने वाले तीर्थंकर होते है, वे वहां स्वभाव से ही उत्पन्न हुआ २४ प्रकार का अनाज खाना वताते है। कच्चा अनाज खाने से

पेट में दर्द होने लगता है। तब अरणी की लकडी से अग्नि जला उसमें पकाने को कहते है। भोले प्राणी अग्नि को अनाज खाते देखकर कहते है कि इसका ही पेट नहीं भरता तो हमें क्या देगी। तब प्रथम कुंभकार की स्थापना करते है और अनुक्रम से ४ कुल, १८ श्रेणी, १८ प्रश्रेणियों, ३६ कौम और ७२ कला पुरुष की, ६४ स्त्री की, १८ लिपिओं १४ विद्या आदि की स्थापना करते है। तब इन्द्र इनको राज्यपद देता है फिर राणी पुत्र की वृद्धि होती है और वे अन्त में राज्य पाट सब छोड दीक्षा ले, तीर्थंकर पद प्राप्त कर, चार तीर्थ की स्थापना कर, मोक्ष पधारते है। और अनुक्रम से समय-समय पर बाकी के २३ तीर्थंकर होते है और चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव प्रतिवासुदेव आदि श्लाघीय पुरुष भी इसी आरे में होते है।

२५. प्र०—अवसर्पिणी कालका पांचवां आरा कैसा होता है?

उ०—पांचवां दुखम आरा (केवल दुःख ही है) २१ हजार वर्ष का होता है, वर्णादि पर्याय में अनन्त गुणा हीनता होती है, ओर आयुष्य घटते घटते जाभेरा सौ वर्ष का रह जाता है। सात हाथ का शरीर और १६ पांसुली होती है।

२६. प्र०—अवसर्पिणी काल का छठ्ठा आरा कैसा होता है?

उ०—छट्ठा दुखमा दुखम आरा २१ हजार वर्ष का होगा। उसके अन्तिम दिन पहले देवलोक के सकेन्द्रजी का आसन चले (अंग फुरुके) तव सकेन्द्रजी यहां के लोगों को सूचित करेंगे कि हे लोगों! होशियार

हो जाओ, कल पांचवां आरा उतर के छठ्ठा आरा बैठेगा सुकृत करना होवे सो करलो। इस सुचना से उत्तम पुरुष तो संथारा कर स्वर्ग में जावेंगे। फिर संवर्तकनामा महावायु चलेगी इससे सर्व-पहाड, नदी, किल्ले टूट पड़ेंगे, केवल वेताढ्य-पर्वत, गंगा, सिंधु नदी, रूषभकूट और लवण समुद्र की खाई इनके सिवाय सर्वक्षय हो जायेंगे। उस समय पहले प्रहर मे जैन धर्म और दूसरे प्रहर मे सर्व धर्म विच्छेद जायेगे। तीसरे प्रहर में राज-नीति और चौथे प्रहर में बादर अग्नि विच्छेद जायगी। उस समय भरत क्षेत्र का अधिष्टायक देवता केवल मनुष्य पशु को उठाकर गंगा और सिंधु नदी के वेताढ्य पर्वत के दक्षिण और उत्तर चार कांठे दोनों तरफ के आठ आठ कांठे मे नव-नव बिल सब मिलके ७२ विल है। एक-एक विल मे ३-३ मंजले उनमें इन मनुष्यों को रखेंगे। उस समय वर्ण, गंध, रस, स्पर्श के पर्यायों में अनन्त गुणा पुद्गल की हीनता हो जायेगी। उन मनुष्यों का उत्कृष्ट २० वर्ष का आयुष्य और १ हाथ का शरीर रह जायगा। आठ मांसुली और अहार की इच्छा अप्रमाण यानि तृप्ति होवे ही नही। रात्रि मे ठंड और दिन मे गर्मी विशेष पड़ेगी इसलिए मनुष्य वाहिर नहीं निकल सकेंगे। सिर्फ प्रातः और सन्ध्या को वाहर निकल गंगा सिंधु जिसमे अर्द्ध चक्र प्रमाणा जल वहेगा उसमे के कच्छ–मच्छ पकड़ रेती में दवा देगे; प्रातः का

संध्या और संध्या का प्रातः लाकर खावेंगे और पशु की हड्डियों को ही चाट कर रहेंगे, मृतक की खोपड़ी में पानी पीवेंगे, वह अति निर्बल कुरूपी, दुर्गन्धि, रोगीष्ट, गंदे, अपवित्र, नग्न, पशु की तरह रहेंगे। जैसे तिर्यञ्च में माता भगनी का विचार नहीं है, वैसे ही उनको भी कुछ विचार नहीं रहेगा। ६ वर्ष की स्त्री गर्भधारण करेगी। लड़के लड़की बहुत होंगे गडसूरी जैसे परिवार लेके फिरेंगे। महाक्लेशी और महादुःखी होगे। धर्म पुण्य रहित एकान्त मिथ्यात्वी मरके नरक और तिर्यञ्च गति में जावेंगे।

२७. प्र०—उत्सर्पिणी काल के मनुष्यों के सुख दुःख कैसे होते हैं ?

उ०—उत्सर्पिणी काल का पहला आरा अवसर्पिणी काल के छट्ठा आरा जैसा जानना। उ. स. का दूसरा आरा अ. स. का पांचवां आरा जैसे जानना। उ. स. का तीसरा आरा अ. स. के चौथा आरा जैसे जानना। उ. स. का चौथा आरा अ. स. के तीसरा आरा जैसे जानना। उ. स. का पांचमा आरा अ. स. के दूसरा जैसे जानना। उ. स. का ६ छठ्ठा आरा अ. स. के पहला आरा जैसे जानना।

२८. प्र०—यहां अभि कौन से काल का कौनसा आरा चल रहा है ?

उ०—अवसर्पिणी काल का पांचवां आरा चल रहा है।

२९. प्र०—एक काल चक्र में भरत इरवृत मे जुगल के कितने

काल चक्र
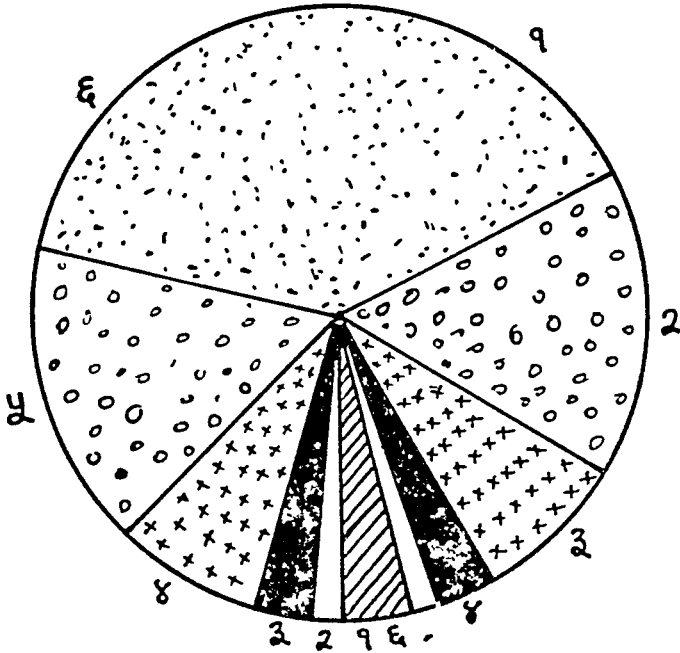
६-१ पहला आरा-सुखमा सुखम् ४ क्रोड़ा क्रोडी सागरोपम

५-2 दूसरा आरा - सुखम् ३ क्रोड़ा क्रोडी सागरोपम

४-३ तीसरा आरा- सुखम् दुखम् २ क्रोडा क्रोडी सागरोपम

३-४ चौथा आरा - दुखम् सुखम् ४2 हजार वर्ष कम १ क्रो. क्रो.सा.

२-५ पँचवा आरा - दुखम् २१ हजार वर्ष का

१-६ छठा आरा - दुखम् दुखम २१ हजार वर्ष का

आरे होते है ?

उ०—अवसर्पिणी के पहले तीन व उत्सर्पिणी के अन्तिम के तीन मिलकर छः आरे जुगल के समझना।

३०. प्र०—पुद्गल परावर्तन किसको कहते है ?

उ०—अनन्त काल चक्रका एक पुद्गल परावर्तन होता है।

३१. प्र०—मनुष्य जीव ने संसार में भटकते-भटकते कितने पुद्गल परावर्तन किये होंगे ?

उ०—अनन्ता।

पाठ- १८

सम्यक्त्व

१. प्र०—समकित का अर्थ क्या है ?

उ०—समकित का अर्थ सच्ची मान्यता यानि तत्व को अच्छी तरह समझकर उस पर श्रद्धा रखते हुए कुदेव, कुगुरु, और कुधर्म को छोड़ सुदेव, सुगुरु, और सुधर्म पर श्रद्धा रखना।

२. प्र०—कुदेव किसको कहते है ?

उ०—जो देव क्रोधी हिंसक होवे, हिंसाकारी शस्त्र रखे। जिनमें विषय वांछना है और जो देव एक का भला और दूसरे का बुरा करने को तैयार है व गाना, बजाना, नाटक चेटक मे मोहित रहते है

उनको कुदेव कहते है ।

३. प्र०—कुदेव को देव माने, उनको क्या कहना चाहिए?

उ०—नहीं; मिथ्या दृष्टि (झूंटी मान्यता) वाले ।

४. प्र०—सुदेव किसको कहते है ?

उ०—जो रागद्वेष रहित है, क्षमा और दया के सागर है, पूर्णज्ञानी है, जिनके बचनों में पहले कुछ कहा, पीछे कुछ कहा ऐसा नहीं है । जिनकी वाणी मे प्राणी मात्र की भलाई है वही सत्य सुदेव है, देवों भी देव है, तीन लोक के पूजनीक है, भवसागर से तारने वाले है, कर्म रूप भाव शत्रुओं को हनने वाले होने से अरिहन्त है ?

५. प्र०—सुदेव को देव माने, उनको क्या कहना चाहिये?

उ०—हां; समकित यानि सच्ची मान्यता वाले ।

६. प्र०—देव चाहे जैसे हो किन्तु श्रद्धा से भजने वाले को क्या समकिती नही कहना ?

उ०—नही; जो काच और हीरा की परीक्षा नहीं कर सकता उसको जोहरी कैसे कहना। जो सोने और पीतल की परीक्षा नहीं कर सकता उसे सर्राफ कैसे कहना । वैसे ही जो सुदेव कुदेव की परीक्षा नही कर सकता उसे समकिती कैसे कहना ।

७. प्र०—कुदेवों को भोले लोग परमेश्वर समझकर मानते है, पूजते है, तो क्या उनको कुछ हानी होती है ?

उ०—हां; हानी अवश्य होती है, जैसे कोई मूर्ख जहर के प्याले को अमृत समझकर पी लेवे तो क्या नाश नहीं होगा । इसी तरह कुदेव को सुदेव समझने वाला अपने आत्मिक गुण का नाश

करता है क्योंकि जिसको वह भजता है वैसा ही होना चाहता है। जो देव क्रूर हिंसक कपटी कामी लोभी या अन्यायी होंवे, उसको भजने वाले में यही गुण आवेगे। जैसे देव वैसे पूजारी इसलिए साश्वत सुख के अभिलाषी जीवों को ऐसे कुदेवों को कदापि नही मानना चाहिए।

८. प्र०—कुगुरु किसको कहते है ?

उ०—जो स्त्री, पुत्र आदि गृहवास रूप जेल में पड़े है, जो पैसे के गुलाम है. जिनको भक्ष्याभक्ष का विचार नही है, विषय लुब्ध है, जो सर्व वस्तु के अभिलाषी है, मिथ्या उपदेश के करने वाले है।

९. प्र०—क्या कुगुरु अपन को तार सकते है ?

उ०—जो स्वयं ही डूबा रहता है, वह दुसरों को कैसे तार सकता है।

१०. प्र०—सुगुरु कैसे होते है ?

उ०—जिन्होंने हिसा, झूठ‘ चोरी, स्त्री-संग व सर्व प्रकार से परिग्रह को छोड कर पंच महाव्रत धारण किये है यानि ऊपर के दूषणों का आप सेवन करते नही, दूसरो से कराते नही, करने वालों को भला भी समझते नहीं और भिक्षाचारी से निर्दोष आहार, पानी लाकर अपना गुजारा चलाते है। जिनमें समभाव है और सत्य-धर्म उपदेश के करने वाले है वही सद्गुरु है। उनके मानने वाले समकिती कहलाते है। ऐसा सद्गुरु स्वयं संसार सागर तिरते है और दूसरो को भी तिराते है।

११. प्र०—कुधर्म किसको कहते है ?

उ०—जो धर्म कुदेव व कुगुरुओं का चलया हुआ हो। जिस धर्म के चलाने वाले खुद ही अज्ञान होने से आत्मा, पुनर्जन्म, पुण्य, पाप, स्वर्ग, नर्क आदि कुछ नही मानते, एकान्तवादी हो, जिनके धर्म का सिद्धान्त पूर्वापर (परस्पर) विरूद्ध हो, जो धर्म नीति या न्याय से भी विरुद्ध हो, जिसमें पशु वध आदि हिंसा का उपदेश हो, जिस धर्म मे त्याग, वैराग्य ब्रह्मचर्य आदि उत्तम तत्वों का अभाव हो, ऐसे धर्म को कुधर्म कहते है। इसको मानने वालों को मिथ्यात्वी कहते है।

१२. प्र०—सुधर्म किसको कहते है ?

उ०—जो धर्म सर्वज्ञ का बतलाया हुआ हो, जिसमे प्राणीमात्र का हित उपदेश हो, जो नीति या न्याय से युक्त हो, जिसमे तत्व निर्णय यथार्थ हो, कोई युक्ति से खण्डन नहीं हो सकता हो, जिस धर्म मे मन और इन्द्रियों को काबू मे रखने के लिये और आत्मा के गुणज्ञानादि प्रगट होने के लिये उत्तमोत्तम उपाय बतलाये हो, उसको सुधर्म कहते है और उसको मानने वाले समकिती कहलाते है।

१३. प्र०—सुदेव रागद्वेष रहित है तो उनके मानने वाले तिरजावें और नहीं मानने वाले नही तिरें। यह पक्षपात क्यों होता है ?

उ०—सुदेव जगत् के जीवों के कल्याण के लिये और संसार सागर से उनको तारने के लिये धर्म की प्ररूपना करते है चाहे जो मनुष्य धर्म रूप नाव

विशुद्ध - इन सबसे अलग शुद्ध क्षायिक सम्यक्त्वी (४ गुण स्थान)

अर्ध शुद्ध → मिश्र मोह॰ मिश्र गुण स्थान

(सम्यक्त्व मोहनीय)
शुद्ध
क्षायोपशमिक सम्यक्त्वी
अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान

अशुद्ध → मिथ्यात्व मोह॰
मिथ्यात्व गुणस्थान
मिथ्यात्वी (सादिसान्त)।
अनंतानुबंधी चौक का उदय।

सास्वादान गुणस्थान

औपशमिक सम्यक्त्वी

सम्यक्त्वी जीव उपशमभाव में शान्त प्रशान्त रहता है।

दर्शन मोहनीय के ३ पुंज बना कर आगे फेंकता है

चारित्र मोहनीय के अनंतानुबंधी चौक का उपशम करता है

३ अनिवृत्तिकरण अंतर करण

पहले कभी नहीं किया ऐसे परिणाम होते हैं

२ अपूर्व करण

१ यथा प्रवृत्तिकरण

भव्य तथा अभव्य दोनो जीव यहाँ तक आते हैं। भव्य आगे बढता है अभव्य लौट आता है।

पल्योपम के असं भाग कम एक क्रोड़ा क्रोडी सागरोपम की स्थिति

मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति ७० क्रोड़ा क्रोडी सागरोपम
अनादि कालीन – मिथ्यात्वी जीव

का अवलम्बन लेकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है। धर्मरूप नाव मे बैठने के लिये सब किसी को बैठने का समान हक है। ब्राह्मण ही उसमे बैठने योग्य है और चांडल नही है ऐसा पक्षपात सर्व जीवों के स्वामी श्री बीतराग देव के बनाये हुए धर्मरूप नाव में नही है। चांडाल के वहां जन्म पाये हुये घोर पापिष्ट जीव इस नाव का अवलम्बन लेकर ससार समुद्र तिर गये, तिरते है, और तिरेंगे।

१४. प्र०—इस धर्मरूपी नाव को कौन चलाते है ?

उ०—सद्गुरु महाराज नाव के नाविक है पाखंड या मिथ्यात्वरूप तूफान से और मोहरूपी वायु से नावकी रक्षा कर उसमे बैठे हुए जीवों को सही सलामत किनारे पर पहुंचाते है किसी को स्वर्ग मे किसी को मोक्ष मे ले जाते है।

१५. प्र०—समकिती की प्राप्ति से जीव को क्या लाभ है ?

उ०—समकिति जीव संसार समुद्र तिर कर मोक्ष के अनन्त सुख प्राप्त करने मे समर्थ होते हैं [illegible] नाव में बैठते है। संसार समुद्र के दुःख [illegible] उनको दुःख नही दे सकते वे [illegible] अवश्य मोक्ष मे जाते है।

१६. प्र०—समकिति जीव अधिक से [illegible] मोक्ष जा सकते है ?

उ०—पन्द्रह भव मे, यदि मोह [illegible] जोर से समकित रूप [illegible] मनुष्य संसार रूप [illegible]

ज्यादा से ज्यादा अर्द्ध पुद्गल परावर्तन में मोक्ष जा सकता हैं।

१७. प्र०—समकिती जीव मरके कहां उत्पन्न होते है ?

उ०—मोक्ष मे, वैमानिक देवों में, कर्म भूमि के मनुष्यों में किन्तु समकित की प्राप्ति के पहिले आयुष्य कर्म का बंध हो जाय तो चार ही गति में उत्पन्न हो सकते है।

१८. प्र०—मनुष्य समकिती है या नहीं; यह कैसे मालूम हो सकता है ?

उ०—समकित आत्मा का गुण होने से अरूपी है निश्चय से तो ज्ञानी ही जान सकते है। तो भी जिसमे निम्नलिखित ५ लक्षण देखने में आते है वे समकिती है ऐसा अनुमान से कह सकते है।

१. शम (शत्रु मित्र पर समभव)।
२. संवेग (वैराग्य भाव या मोक्ष अभिलाषी)।
३. निर्वेद (विषय पर अरुचि)।
४. अनुकम्पा (दु:खी जीवो पर दया करना)।
५. आस्था (जिन बचनों पर सम्पूर्ण श्रद्धा रखे)।

पाठ—१९

अधोलोक में भवनपति देव

१. प्र०—देवो की मुख्य जाति कितनी है और कौन-कौन

सी हैं ?

उ०—चार; भुवनपति, वाणाव्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक देव ।

२. प्र०—लोक के तीनों विभाग में से किस भाग मे देव रहते है ?

उ०—तीनों ही लोक में देव रहते है ।

३. प्र०—लोक के किस-किस विभाग मे कौन-कौन जाति के देव रहते है ?

उ०—अधोलोक भुवनपति देव, तीर्छा लोक में वाण-व्यन्तर और ज्योतिषी देव और उर्ध्वलोक में वैमानिक देव रहते है ।

४. प्र०—भुवनपति देव कितनी जाति के है ?

उ०—दस जाति के; १ असुरकुमार, २ नागकुमार, ३ सुवर्णकुमार, ४ विज्जुकुमार, ५ अग्निकुमार, ६ द्वीप कुमार ७ उदधिकुमार, ८ दिशाकुमार ९ पवन-कुमार १० स्थनितकुमार ।

५. प्र०—भुवनपति दव अधलोक में कहां-कहां रहते है ?

उ०—पहिली रत्नप्रभा नरक में १३ पाथड़े (छात को कहते है) और १२ आन्तरे (छात और जमीन के बीच की जगह) है इन बारह आन्तरों मे से पहिला और छेला यानि नीचे का यह दोनों खाली है बीच के १० ही आन्तरों में दस ही जाति के भुवनपति देव अलग-अलग रहते है ।

६. प्र०—भुवनपति देव और नरक के नेरिये क्या साथ-साथ ही रहते है ?

उ०—नहीं; भुवनपति देव तो पाथड़े के ऊपर के आन्तरों

में रहते है, और नारकी के जीव पाथड़े (छात) की पोलार में रहते है।

७. प्र०—प्रत्येक पाथड़े की लम्बाई चौडाई और मोटाई कितनी और उसका कैसा आकार है ?

उ०—लम्बाई चौड़ाई एक राज की यानि असंख्याता जोजन की और मोटाई तीन हजार जोजन की है और आकार घट्टी के पाट जैसा है।

८. प्र०—पाथडे के बीच मे पोलार कितनी है ?

उ०—एक हजार जोजन की।

९. प्र०—भवनपति को भवनवासी देव क्यों कहते है ?

उ०—भवन (मकान) में रहने वाले देव है।

१०. प्र०—भुवनपतियों के भवन कितने है ?

उ०—सात किरोड बहतर लाख।

११. प्र०—दस जाति के भवनपति देवों में सबसे ज्यादा वलवान और ऋद्धिवान कौन है ?

उ०—अमुर कुमार।

१२. प्र०—भुवनपतियों में इन्द्र कितने है ?

उ०—वीस; प्रत्येक जाति में उत्तर का एक व दक्षिण का एक इस प्रकार दो-दो इन्द्र है।

१३. प्र०—जीव के ५६३ भेद में भुवनपति के कितने भेद है?

उ०—पचास; १० भुवनपति १५ परमाधामी ये मिलकर २५ भेद हुए २५ अपर्याप्ता व प्रर्याप्ता तिलकर ५० भेद हुए।

१४. प्र०—परमाधामी देव भुवनपति के दस जाती मे से किस जाति मे है ?

उ०—अमुर कुमार की जाति मे।
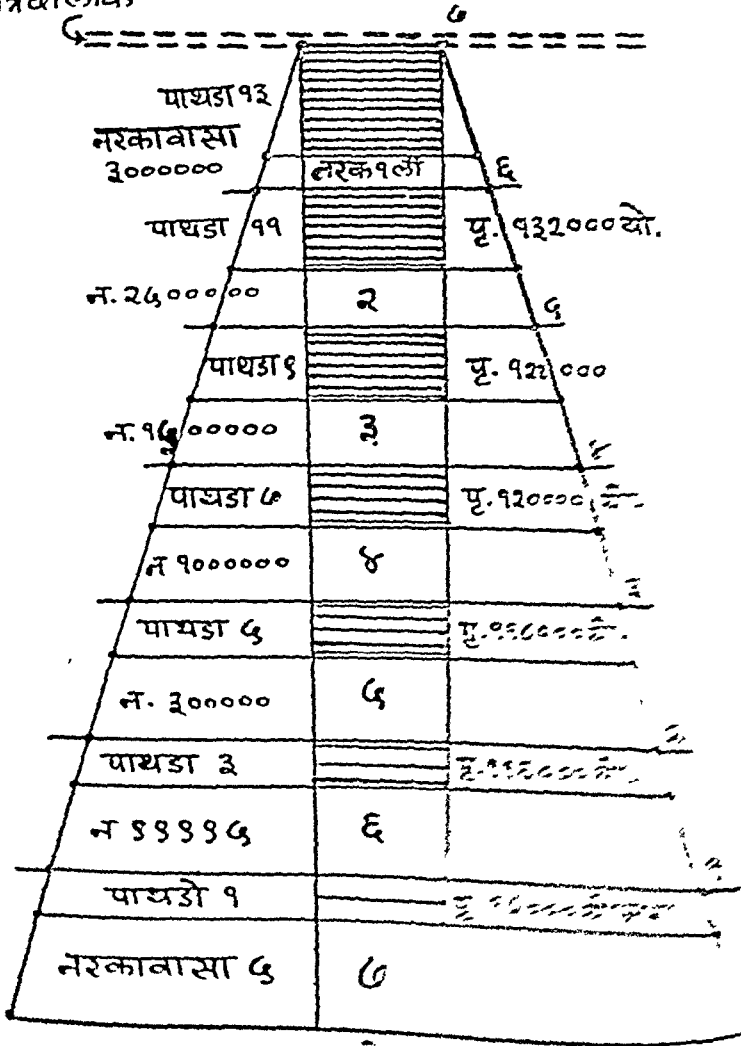
१५. प्र०—भुवनपति के कुलदेव कितने है ?
उ०—असंख्याता ।
१६. प्र०—भुवनपति में देव ज्यादा है या देवियां ?
उ०—देवियां; प्रत्येक देव के कम से कम चार देवियां होती है ।
१७. प्र०—भुवनपति देव मरके किस गति में जाते है ?
उ०—मात्र (सभी) देवता दो ही गति में जाते है । मनुष्य में या तिर्यञ्च में ।
१८. प्र०—अपन कभी भुवनपति देव हुए होंगे ?
उ०—अनन्त ही वार देवता या देवियों के रूप में उत्पन्न हुए है ।

पाठ-२०

भव्य और अभव्य

१ प्र०—जीव लोक में जितने है उतने ही रहते है या उनमें घट बढ होती है ?
उ०—जीव अनादि काल से जितने है उतने ही अनन्त काल तक रहेंगे । उसमे से एक भी कम या ज्यादा नहीं होगा ।
२. प्र०—जीव के मुख्य भेद कितने है ?
उ०—दो; सिद्ध और संसारी ।
३. प्र०—सिद्ध कितने है और संसारी कितने है ?

उ०— सिद्ध व संसारी दोनों अनन्त है ?

४. प्र०—क्या सिद्ध और संसारी दोनों बराबर है ?

उ०—नही; सिद्ध से संसारी अनन्त गुणा अधिक है। (अनन्त-अनन्त मे भी अनन्त भेद है।)

५ प्र०—सिद्ध और संसारी जीवों मे घट बढ़ होती है ?

उ०—हां; वे संसारी जीव जैसे-जैसे कर्म बंधन से मुक्त होते जाते है वैसे-वैसे सिद्ध होते जाते है। इससे संसारी जीवों की सख्या घटती है।

६. प्र०—सिद्ध के जीव कभी सांसारी होंगे या नही ?

उ०—कभी नहीं।

७. प्र०—क्या ससारी जीव सभी सिद्ध हो जायेगे ?

उ०—नहीं; संसारी जीवों मे भव्य अभव्य ऐसे दो भेद है जिसमें अभव्य जीवों को मोक्ष कभी मिलेगी ही नही और भव्व जीवों मे से जो जीव कर्म क्षय करेगे वही मोक्ष पावेगे।

८. प्र०—भव्य अभव्य का अर्थ क्या ?

उ०—भव्य का अर्थ सिद्ध होने की योग्यता वाले और अभव्य का अर्थ सिद्ध होने के अयोग्य। जैसे मिट्टी रेती मे स्वभाव ही से भेद है मिट्टी का तो घडा वन सकता है किन्तु रेत का नही। इसी तरह भव्य अभव्य मे स्वभाव से ही भेद है। भवी जीव कर्म से मुत्त हो सकते है और अभवी नही।

९. प्र०—भव्य जीवों मे जो सिद्ध होने की योग्यता है तो क्या सभी भव्य भव्य जीव मोक्ष में चले जायेंगे और अभव्य जीव यहां ही अकेले ही रह जावेंगे।

उ०—नही; कभी ऐसा नही होगा। राजा होने की

पाठ-२१

निर्जरा तत्व

१. प्र०—संसार के जीव जन्म जरा मृत्यु या रोगादिक दुःख किस कारण से पाते है ?

उ०—किये हुए कर्मों के उदय से।

२. प्र०—कोई भी जीव सभी दुखों से कब छूट सकता है?

उ०—कर्म बन्धनों से सर्वथा मुक्त हो जाने पर।

३. प्र०—जीव कर्मो से कैसे छुट सकता है ?

उ०—नये आते हुए कर्मो को रोकने से और अगले कर्मों का क्षय करने से जीव कर्मो से छूट सकता है।

४. प्र०—कर्म कहां से आते है, और आते हुए कर्म को कैसे रोक सकते है और अगले रहे हुए कर्म को कैसे क्षय कर सकते है ?

उ०—आश्रव रूपी द्वारों से कर्म आते हैं और संवर रूप कपाट (किवाड़) से उनके रोक सकते है और निर्जरा से अगले कर्मों को क्षय कर सकते है।

५. प्र०—निर्जरा किसे कहते है ?

उ०—आत्म प्रदेश पर रहे हुए कर्म मैल को वारह प्रकार की तपश्चर्या कर देश से कर्म का दूर होना इसी का नाम निर्जरा तत्व है।

६ प्र०—निर्जरा के मुख्य भेद कितने है ?

उ०—दो; सकाम (मन सहित) और अकाम (मन विना)।

७. प्र०—सकाम निर्जरा किसको कहते है ?

उ०—विवेक पूर्वक पोरसी, अर्द्ध पोरसी, उपवास आदि तपश्चर्या करना और कष्ट को समभाव से सहन करना ।

८. प्र०—अकाम निर्जरा किसे कहते है ?

उ०—परवशपणे विषमभाव से कष्ट सहना ।

९. प्र०—इन दोनो मे कौनसी निर्जरा श्रेष्ठ है ?

उ०—सकाम निर्जरा, क्योंकि इसी से कर्म वृन्द टूटते है ।

१०. प्र०—क्या करने से कर्मों की निर्जरा होती है ?

उ०—तपस्या करने से ।

११. प्र०—तपस्या के मुख्य कितने भेद है ?

उ०—दो; वाह्य (बाहर की) आभ्यन्तर (अन्दर की याने गुप्त) ।

१२. प्र०—इन दोनों में श्रेष्ठ तप कौन सा है ?

उ०—आभ्यन्तर ।

१३. प्र०—वाह्य तप के कितने भेद हैं और कौन-कौन से है ?

उ०—छः । १. अनशन–अहार का त्याग करना । २. उणोदरी–भूख से कम भोजन करना । ३. भिक्षा-चरी–भिक्षा जाते समय अपिग्रह धारण करना । ४. रस परित्याग–मिष्ट रसादि का त्याग । ५. काय क्लेश–शीत, उष्णा लोचादिक कष्टों का सहन करना । ६. प्रति संहलेणा–अंग उपांग को नियम मे रखना ।

१५. प्र०—आभ्यन्तर–तप के कितने भेद हैं ?

उ०—छः । १. प्रयाश्यित किये हुए पापों का पश्चाताप करना तथा उन पापों को गुरु के पास प्रगट कर

दंड लेना । २. विनय—गुरु आदि बड़े जनों की विनय करना । ३. बैयावृत्य—दस प्रकार की वैयावच करना । ४. स्वाध्याय—शास्त्रों का अध्ययन या पर्यटन करना । ५. ध्यान—धर्मध्यान तथा शुक्लध्यान में आत्मा को जोडना । ६. कायोत्सग—काउसग्ग यानि शरीर की ममता को त्याग कर दृढ़ता से ध्यान मे आरूढ़ रहना ।

पाठ–२२

उर्ध्वलोक में वैमानिक देव

१. प्र०—जीव के ५६३ भेद में से देवताओ के कितने भेद है ?

उ०—१९८ (भुवनपति के ५०, वाणाव्यंतर के ५२, ज्योतिषी के २० और वैमानिक के ७६) ।

२. प्र०—वैमानिक देवों के ७६ भेद किस तरह से है ?

उ०—वैमानिक देव की ३८ जाति है । जिसमें १२ देव लोक के, ३ किल्विषी, ९ लोकांतिक, ९ ग्रीवेयक और ५ अनुत्तर विमान यह ३८ है जिनके अपर्याप्त और पर्याप्ता मिलकर ७६ भेद हुए ।

३. प्र०—१२ देवलोक के नाम क्या है ?

उ०—१ सुधर्म, २ ईशान, ३ सनतकुमार, ४ माहेन्द्र, ५ ब्रह्मलोक, ६ लांतक, ७ महाशुक्र, ८ सहसार,

९ आणात, १० प्राणत, ११ आरण, और १२ अच्युत ।

४. प्र०—तीनों किल्विषी के नाम क्या है ?

उ०—१. तीन पलिया २. तीन सागरिया और ३. तेरह सागरीया ।

५. प्र०—नव लोकांतिक के नाम क्या है ?

उ०—१ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वह्नि, ४ अरुण, ५ गर्दतोय, ६ तुषित, ७ अव्यावाध, ८ मरूत्, ९ अरिट्ट ।

६. प्र०—नवग्रीवेयक के नाम क्या है ?

उ०—१ भद्दे, २ सुभद्दे, ३ सुजाए, ४ सुमाणा से, ५ सुदसणे, ६ प्रियदंसणे, ७ आमोंहे, ८ सुपडिवद्धे, जसोधरे ।

७. प्र०—पांच अनुत्तर विमान के नाम क्या है ?

उ०—१ विजय, २ विजयन्त, ३ जयन्त, ४ अपराजित और सर्वार्थ सिद्ध ।

८. प्र०—क्या अपन इस शरीर से देवलोक में जा सकते है या नहीं ?

उ०—इस शरीर से तो नही किन्तु शुभ करणी से पुण्योपार्जन कर देवलोक में उत्पन्न हो सकते है ।

९. प्र०—वैमानिक देव किस लोक में रहते है ?

उ०—उर्ध्वलोक में शनिश्चर के विमान से डेढ़ राज (असंख्याता जोजन) ऊपर पहिला और दूसरा देवलोक आसपास दोनों मिलकर पूर्ण चन्द्रमा जैसे गोल है ।

१०. प्र०—तीसरा और चौथा देवलोक कहां है ?

उ०—पहले और दूसरे देवलोक से असंख्याता जोजन ऊपर आस-पास गोल चन्द्रमा के आकार में है।

११. प्र०—पांचवां छट्ठा, सातवां आठवां देवलोक कहां है?

उ०—तीसरे चौथे से असंख्याता जोजन ऊपर एक पर एक घड़े के बेवड़े जैसा पांचवां छट्ठा सातवां और आठवां देवलोक है।

१२. प्र०—९, १०, ११, १२, देवलोक कहां है ?

उ०—आठवें क ऊपर नवमा, दसमा आस-पास और ग्यारहवां, बारहवां आस-पास है।

१३. प्र०—प्रत्येक देवलोक कितने बड़े हैं ?

उ०—असंख्याता जोजन के लम्बे चौड़े हैं।

१४. प्र०—पहले दूसरे तीसरे और चौथे देवलोक में विमान की संख्या कितनी हैं ?

उ०—पहले मे ३२ लाख, दूसरे में २८ लाख, तीसरे मे १२ लाख, और चौथे मे ८ लाख।

१५. प्र०—पांचवें, छट्ठे सातवें आठवें देवलोक में विमानं की संख्या कितनी है ?

उ०—५ वें मे ४ लाख, ६ ठे में ५० हजार सातवें मे ४० हजार, और आठवें में ६ हजार है।

१६. प्र०—९ और १० में कितने, ११ और १२ में कितने विमान है ?

उ०—९ और १० में ४ सौ, ११ १२ में ३ सौ है।

१७. प्र०—यहां प्रत्येक विमान में कितने देव रहते है ?

उ०—प्रत्येक विमान में असंख्याता देव रहते है।

१८. प्र०—यहां से कोई देव सीधा ऊंचा चढ़े तो बीच में कितने और कौन-कौन से देवलोक आवेंगे ?
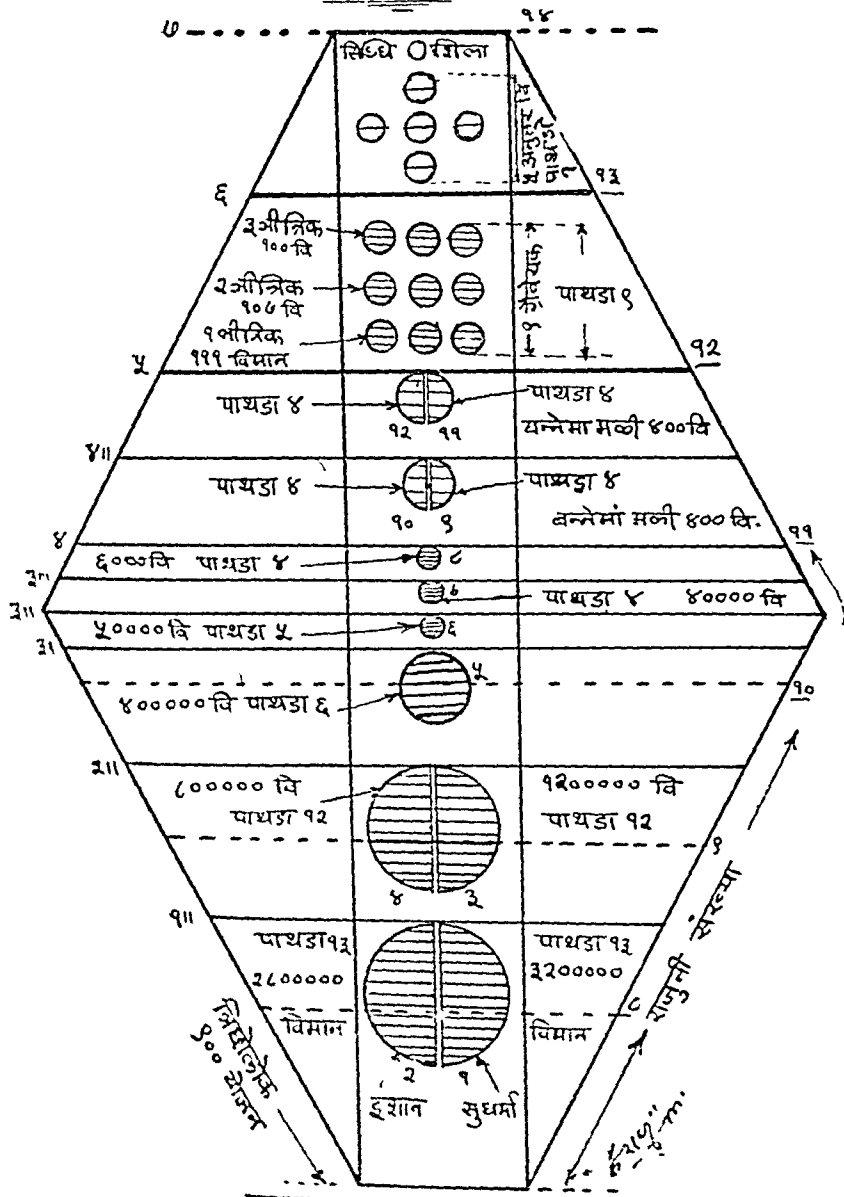
उड्ढ लोय – उर्ध्व लोक
सिध्धि शिला
पाथडा ९
पाथडा ४
पाथडा ४
यन्नेमा मळी ४०० वि
पाथडा ४
पाथडा ४
वन्नेमां मळी ४०० वि.
६००० वि पाथडा ४
पाथडा ४ ४०००० वि
५०००० वि पाथडा ५
४००००० वि पाथडा ६
८००००० वि
पाथडा १२
१२००००० वि
पाथडा १२
पाथडा १३
२८०००००
विमान
पाथडा १३
३२०००००
विमान
इशान
सुधर्मा
राजुनी संख्या
उर्ध्वलोक

उ०—पहला, तीसरा, पांचवां, छट्ठा, सातवां, आठवां, नवमां, और इग्यारवां। इस तरह से आठ देव-लोक आवेंगे।

१९. प्र०—इस तिर्छा लोक के उत्तर तरफ के आधा भाग मे से कोई देवता पर चढ़े तो कौन-कौन से देव लोक आवेंगे ?

उ०—दूसरा, चौथा, पांचवां, छट्ठा, सातवां, आठवां, दसवां और बारहवां।

२०. प्र०—वैमानिक देवो मे आयु ऋद्धि सिद्धि कम ज्यादा होती है या बराबर ?

उ०—कम ज्यादा; एक-एक से ज्यादा-ज्यादा आयु ऋद्धि सिद्धि होती जाती है।

२१. प्र०—तीन पलीया किल्विषी देव कहां रहते है ?

उ०—तीन पलीया; देवों के विमान पहला दूसरा देवलोक के नीचे के भाग मे।

२२. प्र०—तीन सागरिया किल्विषी देव कहां रहते है ?

उ०—तीसरे चौथे देवलोक के पास नीचे के भाग मे।

२३. प्र०—१३ सागरिया किल्विषी देव कहां रहते है ?

उ०—छट्ठे देवलोक के पास नीचे के भाग मे।

२४. प्र०—किल्विषी देवताओं मे प्रायः कैसे जीव उत्पन्न होते है ?

उ०—जिनेश्वर की वाणी के उत्थापक उत्सूत्र (यानि सूत्र विरुद्ध जैसे भगवान की वाणी मा:हणो ! मा:हणो ! यानि सब जीवों की दया पालो ऐसी है परन्तु विरुद्ध परूपणा करने वाले कहते हैं कि हिंसा बिना धर्म होता ही नही) ऐसे जिन आज्ञा के विरोधक जीव

किल्विषी में जाते है ।

२५. प्र०—किल्विषी जीवों का मान सनमान कैसा होता है?

उ०—जैसे यहां ढेढ भगी का मान सनमान है वैसा ही वहां उनका भी है नजदीक देवताओं की सभा मे बिना बुलाये जाते है; बैठते हैं, उनकी भाषा किसी को अच्छी लगती नहीं, कभी बीच में बोल जावे तो 'मभाष देवा' ऐसा कहकर रोक देते है।

२६. प्र०—नवलोकांतिक देव कहां रहते हैं ?

उ०—पांचवें ब्रह्मदेव लोक में ।

२७. प्र०—उनका मान सनमान कैसा होता है ?

उ०—उनका मान सनमान बहुत अच्छा है, लोकान्तिक देव प्राय: समकित सत्य को, अगीकार करने वाले होते हैं । होने वाले तीर्थंकर देव को जब दीक्षा लेने का समय आता है, तब यह देव उनसे अरज करते हैं कि हे भगवान ! आप दीक्षा धारण करो और जगजीवों के कल्याण के लिये धर्म की स्थापना करो ।

२८. प्र०—नवग्रीवेयक कहां है ?

उ०—इग्यारवां व बारहवां देवलोक से असंख्यात जोजन ऊपर नवग्रीवेयक की तीन त्रीक है ।

२९. प्र०—वहां प्रत्येक त्रीक मे कितने विमान है ?

उ०—प्रथम त्रीक मे भद्दे, सुभद्दे, सुजाये, यह देव लोक मे १११ विमान है, सुमाण से, सुदसणे और प्रिय· दसणे यह दूसरी त्रीक मे १०७ विमान है । अमोहे सुपडिबद्धे, जसोधरे इस तीसरी त्रीक में १०० विमान है ।

३०. प्र०—पांच अनुत्तर विमान कहां है ?

उ०—नव ग्रीवेयक से असंख्याता जोजन उपर।

३१. प्र०—विमानो को अनुत्तर क्यों कहते है ?

उ०—अनुत्तर का अर्थ प्रधान अथवा श्रेष्ठ इन विमानों मे रहने वाले सब समकिति है, प्रथम चार विमानों के देव जघन्य १ भव में उत्कृष्ट ३ भव मे मोक्ष जाते है! उनको सब से अधिक सुख है।

३२. प्र०—विमानिक देवों में इन्द्र कितने है ?

उ०—वारह देवलोक मे १० इन्द्र हैं। पहिले के आठ में एक एक इन्द्र नवमां दसवां में एक और ग्यारवां बारहवां में एक इन्द्र होता है।

३३. प्र०—नवग्रीवेयक और पांच अनुत्तर विमान में कितने इन्द्र है ?

उ०—वहां रहने वाले सब स्वतंत्र है। प्रत्येक देव खुद को इन्द्र समझते है। इससे वे सब अहमेन्द्र गिने जाते है।

३४. प्र०—वहां देवी होती है या नही ?

उ०—नही; उन देवों को विषय भोग की मलीन इच्छा होती ही नही है।

३५. प्र०—कौनसे देवलोक तक देवी उत्पन्न होती है ?

उ०—दूसरे देवलोक तक।

पाठ-- २३

दंडक

१. प्र०—सब संसारी जीवों के गति आश्रिय कितने भेद है?
उ०—चार; नारकी, तिर्यञ्च, मानुष्य और देवता।

२. प्र०—सब संसारी जीवों के जाति आश्रय कितने भेद है?
उ०—पांच; एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक।

३ प्र०—सब संसारी जीवों के काय आश्रय कितने भेद है?
उ०—छः; पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय।

४. प्र०—सब संसारी जीवों के दण्डक आश्रिय कितने भेद है?
उ०—चौबीस भेद है।

५. प्र०—दंडक का अर्थ क्या है?
उ०—जीवों के कर्म दण्ड भोगने के ठिकाने।

६. प्र०—चौबीस दण्डक के नाम क्या है?
उ०—सात नारकी का एक दंडक, दस भुवनपति के दस दंडक, पांच स्थावर के पांच दंडक, तीन विकलेन्द्रिय के तीन दंडक, यह सब मिल १९ हुए वीसवा तिर्यंच पंचेन्द्रिय, का २१ वां मानुष्य का, २२ वा वाणाव्यंतर देवता का, २३ वां ज्योतिषी देव का और २४ वां वैमानिक देव का दण्डक है।

७. प्र०—२४ दंडक मे से नारकी के कितने है?
उ०—सातों ही नरक का पहला दडक है।

८. प्र०—तिर्यंच के कितने और कौन-कौन से दण्डक है?

उ०—९; पांच स्थावर के, ३ विकलेन्द्रिय के और एक तिर्यच पंचेन्द्रिय का ।

९. प्र०—मनुष्य का कौनसा और कितने दंडक है ?

उ०—एक; इकीसवां दंडक है ।

१०. प्र०—देवता के कितने और कौन-कौन से दंडक है ?

उ०—१३; दश भुवनपति के, १ वाणाव्यतर का, एक ज्योतिषी का और एक वैमानिक देव का ।

११. प्र०—छट्ठा दडक किसका है ?

उ०—अग्निकुमार देवता का ।

१२. प्र०—वनस्पति काय का दंडक कौनसा है ?

उ०—१६वां वनस्पति काय का ।

१३. प्र०—नमक के जीवों का दंडक कौनसा है ?

उ०—१२वां पृथ्वीकाय के दण्डक मे है ।

१४. प्र०—जल के जीवों का दंडक कौनसा है ?

उ०—१३वां, अपकाय का ।

१५. प्र०—अग्नि के जीवों का दंडक कौनसा है ?

उ०—१४वां अग्नि काय का ।

१६. प्र०—हवा के जीव कौन से दंडक मे है ?

उ०—१५वां वायुकाय के दंडक मे है ।

१७. प्र०—शंख, सीप, लट आदि का दडक कोनसा है ?

उ०—सतरवां, बेइन्द्रिय के दंडक मे है ।

१८. प्र०—जूं, लीख, चाचर, खटमल कौनसे दंडक मे है ?

उ०—१८वां: विकलेन्द्रिय होने से तेईन्द्रिय के दंडक मे है ।

१९. प्र०—मक्खी, मच्छर, डांस, बिच्छू आदि कोन से दडक मे है ?

उ०—१९वा चऊइन्द्रिय के दंडक मे है ।

२०. प्र०—गाय भैंस कुत्ते आदि का दंडक कौनसा है ?
उ०—१९वां तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के दंडक में।

२१. प्र०—सिद्ध भगवान का दंडक कौनसा है ?
उ०—वे दंडक में नहीं है, क्योंकि उनको कर्म नहीं होने से कर्म दंड भोगना नहीं पडता है।

२२. प्र०—सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र आदि किस दंडक मे है?
उ०—२३वां ज्योतिषियों के दंडक में।

२३. प्र०—पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस आदि किस दंडक मे है?
उ०—२२वां वाणव्यंतरों के दंडक में।

२४. प्र०—परमाधामी देवों का कौनसा दंडक है ?
उ०—दूसरा असुर कुमार का।

२५. प्र०—पांच जाति में से प्रत्येक के कितने दंडक है?
उ०—एकेन्द्रिय में ५, बेइन्द्रिय १, तेइन्द्रिय १, चौइन्द्रिय मे १ और पचेन्द्रिय में १६।

२६. प्र०—छः काय में से प्रत्येक के कितने दंडक है ?
उ०—पृथ्वीकाय का १२वां, अपकाय का १३वां, तेउकाय का १४वां, वायुकाय का १५वां, वनस्पतिकाय का १६वां, त्रसकाय के शेष १९ दंडक हैं।

पाठ-२४

बंध-तत्व

१. प्र०—बंध तत्व किसे कहते है ?

उ०—आत्म प्रदेश के साथ पुद्गलों का बांधना बंधनत्व कहलाता है।

२. प्र०—आत्मा के प्रदेश कितने और शरीर में कहां-कहां है?

उ०—आत्मा के असंख्यात प्रदेश है और वह सारे शरीर मे व्याप्त है।

३. प्र०—कर्म पुद्गलों का बंध आत्मा के कितने प्रदेश पर और कहां-कहां होता है?

उ०—जैसे दूध मे डाली हुई शक्कर सारे दूध में मिल जाति है, और तपाये हुए लोहे के गोले में सब जगह अग्नि फैल जाति है उसी तरह से कर्म-पुद्गल भी आत्मा के प्रदेशों के साथ मिल जाते है।

४. प्र०—आत्मा कर्म पुद्गलों को किस तरह ग्रहण करता है?

उ०—मन, वचन, काया के शुभ योगों से शुभ कर्म (पुण्य) और मन, वचन, काया के अशुभ (पाप) योगों से अशुभ पुद्गलों का बंध होता है यानि मन वचन, काया और कर्म इन चार साधनो से ही आत्मा कर्म ग्रहण करता है और क्रोधादि कषायो से इसमे रस पडता है।

५. प्र०—बंधन कितने प्रकार के है?

उ०—४; प्रकृति बध, स्थिति बंध, अनुभाग बंध और प्रदेश बंध।

६. प्र०—प्रकृति बंध का अर्थ क्या है?

उ०—प्रकृति का अर्थ कर्म स्वभाव यानि कोई कर्म आत्मा के ज्ञान गुण को रोकने वाला होता है और कोई कर्म दर्शन गुण को रोकने वाला होता

है। किसी कर्म का गुण शाता व अशाता देने का होता है। जैसे किसी औषधियुक्त लड्डू का स्वभाव (गुण) वायु हरण करने का होता है और किसी का पित्त रोग मिटाने का होता है, किसो लड्डू के खाने से कफ मिटता है और कोई से शरीर पुष्ट होता है। जैसे लड्डू का स्वभाव है इसी तरह कर्मो का भी स्वभाव है।

७. प्र०—स्थिति बध का अर्थ क्या है ?

उ०—जैसे ऊपर बताये लड्डू में वात, पित्त, कफ हरण का जो गुण है वे कुछ मुह्त तक रहता है। किसी लड्डू में १५ दिन, किसी मे १ मास और किसी मे बर्ष भर तक वात, पित, कफ रोकने का गुण रहता है उसी तरह दो समय से सित्तर क्रोडा क्रोडी सागरोपम की स्थिति से जीव कर्म बाधते है। उसको स्थिति बंध कहते है।

८. प्र०—अनुभाग किसको कहते है ?

उ०—जैसे दवाइयों के लडडू मे से कोई तो खारा होता है, कोई मीठा तथा तीखा भी होता है। इसी तरह कर्मो के उदय आने से किसी कर्म का फल जीव को मीठा लगता है व किसी कर्म का खारा लगता है किसी कर्मो से ज्यादा दुख और कम सुख होता है, और किसी कर्मो से सुख ज्यादा और दुख कम होता है, इस तरह से जीवो के जो सुख दुख देखने मे आते है उसे रस यानि अनुभाग बंध कहते है।

९. प्र०—प्रदेश बध किसे कहते है ?

उ०—उपरोक्त लड्डू में से किसी में द्रव्य का परिमाण थोड़ा और किसी में अधिक होता है। इसी तरह किसी बंध में कर्म वर्गणा के पुद्गलों के अनन्त प्रदेशी स्कंधों का परिणाम थोड़ा होवे और किसी मे ज्यादा।

१०. प्र०—बंध जीव को हितकारी है या अहितकारी है?

उ०—अहितकारी यानि त्यागने योग्य।

११. प्र०—कर्म बंधन से हम कैसे बच सकते है?

उ०—राग द्वेष को छोड़ने से, विषय कषाय का त्याग करने से, सर्व जीवों को अपनी आत्मा समान गिनने से और विवेक तथा यत्न पूर्वक हर एक कार्य करने से जीव पाप कर्म के बंधन से बच सकता है।

पाठ-२५

मोक्ष तत्व

१. प्र०—जन्म, जरा, मृत्यु और रोगादिक दुःख जो हम पाते है, उसका क्या कारण है?

उ०—किये हुए कर्मों के उदय से अपने को यह दुःख भोगने पड़ते है।

२. प्र०—इन सभी दुखों से हम कैसे छूट सकते है?

उ०—जहां तक दुखों का मूल कारण [illegible]

वहाँ तक दुख भी है। यदि किसी उपाय से हम इन कर्मों के बंधनों से छूट जांय तो सब दुःखों से भी छूट सकते है।

३. प्र०—कर्म बधन से सर्वथा मुक्त हो जाना अर्थात् सर्व दुःखों से छूट जाना उसका नाम क्या है?

उ०—मुक्ति या मोक्ष।

४. प्र०—मोक्ष प्राप्ति के लिये यानि कर्म बंधन से छूटने के लिये कौन-कौन से उपाय है?

उ०—चार उपायो से, मोक्ष प्राप्त हो सकता है।

सम्यक्ज्ञान—जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष इन नव तत्वो का स्वरूप यथा तथ्य (जैसा है वैसाही) समझना इसी को सम्यक्ज्ञान कहते है।

सम्यक्दर्शन—वीतराग के बचनों में पूर्ण श्रद्धा रखना।

सम्यक्चारित्र—मोक्ष मार्ग में उपयोग पूर्वक चलना चाहिये, आश्रवद्वार से आते हुए कर्मो को संवर रूप किवाड से रोकना चाहिये। मन, बचन, काय के योगों का निरोध करके प्राणाति पात आदि १८ प्रकार के पापों से निवृत होना चाहिये।

सम्यक्तप—पूर्व संचित कर्मो को तपद्वारा क्षय करना चाहिये।

५. प्र०—चारों गति मे से कौनसी गति में आकर जीव मोक्ष प्राप्त कर सकता है?

उ०—मनुष्य गति में।

६. प्र०—मोक्ष गामी जीव अर्थात् चर्म शरीरी मनुष्य जब

सर्व कर्मो से मुक्त हो जाता है तव कहां जाता है ?

उ०—जैसे किसी तुम्बे को सण मिट्टी आदि वजन के आठ लेप लगे होवे तो उस वजन से वह तुम्वा हमेशा पानी मे ही डूबा रहता है यदि वह लेप तुम्बे पर से दूर हो जाय तो तुरन्त ही वह तुम्वा पानी के ऊपरी भाग पर स्वाभाविक रीति से आ जाता है। वैसे ही आठ कर्मो के लेप से लिप्त होकर संसार समुद्र में डूबे हुए जीव जब सब कर्मो से मुक्त होते है तव स्वाभाविक रीति से वो लोक के मस्तक पर यानि मोक्ष में पहुँच जाते है। और अलोक के नीचे स्थिर हो रहते है।

७. प्र०—मोक्ष पाये हुए आत्मा कहां विराजमान होते है ?

उ०—सर्वार्थ सिद्ध विमान की ध्वजा से २१ जोजन उपर ऊर्ध्वलोक का अन्त आता है और वहां से ऊर्ध्वअलोक शुरू होता है, अलोक में धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय द्रव्य का अभाव होने से जीव या पुद्गल द्रव्य की गति या स्थिति वहां पर नहीं हो सकती है जिससे सिद्ध भगवान लोक के आखिरी चमन्ति तक पहुंच कर वहां ही स्थिर होते है।

८. प्र०—सिद्ध भगवान के और अलोक के वीच में कितना अन्तर है ?

उ०—धूप व छाया के वीच मे जैसे अन्तर नही होता है ठीक उसी तरह सिद्ध भगवान और अलोक के वीच मे अन्तर नही है।

९. प्र०—सिद्ध भगवान के शरीर है या नही ?

उ०—नही, सिद्ध भगवान अशरीरी है, वे पुद्गलों के यानि जड वस्तु के संग रहित होकर केवल आत्म स्वरूप में लीन हो चौदह राजलोक का नाटक देखते हुए अनन्त सुख की लहर में विराजमान है।

१०. प्र०—वहां पर खाना, पीना, पहनना, ओढना, गाना, बजाना, मान, सन्मान आदि कुछ भी नहीं है तो फिर सुख किस प्रकार का है ?

उ०—खान पान आदि में अपन सुख मानते है परन्तु वास्तव मे वे पदार्थ सुख स्वरूप नही है। क्योंकि जिस वस्तु में सुख देने का स्वभाव होता है, वह हमेशा सुखदायक ही होना चाहिये। मगर अमुक समय तक सुख तक देने के बाद वही वस्तु दु.ख मे परिणमे उसको सुखदाता कैसे कही जाय। जैसे कि खीर का स्वाद मीठा है और उसको खाने से अपने को सुख अनुभव होता है, किन्तु वही खीर पेट भर खा लेने के बाद मे उसके ऊपर जब रूचि उतर जाती है उस वक्त यदि कोई मनुष्य बलात्कार से अपने को खीर पिलाते ही रहे तो वही खीर दुःख का और क्वचित मृत्यु का कारण रूप भी हो जाती है, पांचों इन्द्रियों के विषय भोग की भी यही दशा है।

११. प्र०—तब सच्चा सुख किसको कहा जाय ?

उ०—जिस सुख का अन्त दुःख रूप न होवे जो हमेशा ही सुखरूप रहे वही सच्चा सुख है।

१२. प्र०—मोक्ष मे जो अनन्त सुख है वह उनको किस चीज से मिलते है ? याने उनके पास सुख प्राप्त करने

के लिये कौन-कौन से साधन हैं ?

उ०—यह बात बहुत समझने योग्य है, सुख का आधार बाह्य साधन पर नही है किन्तु मन की परिस्थिति पर है; कई दफा नव कांकरी जैसे निर्माल्य साधन से रंक मनुष्य को जो सुख अनुभव होता है वह सुख राज्य की विभूति होने पर भी राजा को अनुभूत नही होता। सुख यह आत्मा का ही गुण है वह बाहर से प्राप्त होता ही नही, जड वस्तु ही चेतना को सुख देती है यह मान्यता गलत है। खीर चाहे जितनी अच्छी बनी हो परन्तु अपनी जिह्वा मे उसका स्वाद जानने को गुण यदि नही होता तो वह अपने को सुख कैसे दे सकती। पुद्गल के अनन्त गुणों मे से एक अथवा अधिक गुणा को जानकर वह दूसरे पदार्थ की अपेक्षा अपनी मानसिक प्रकृति को विशेष अनुकूल होने से जीव उसको सुख मानने लग जाता है। परन्तु दूसरे पल मे ही उसकी अपेक्षा विशेष मनोज्ञ दूसरी चीज यदि मिल जाय तो पहिले की चीज दुःख रूप हो जाती है, जो रेजी के कपड़े व जुआर के रूखे सूखे टुकड़े से एक भिक्षुक सुख समझता है वही चीज एक राजा को दुःख रूप मालूम होती है सारांश यह है कि जड वस्तु के ऊपर सुख दुःख का आधार नही है मगर अपनी खुद की मान्यता के ऊपर है।

१३. प्र०—सिद्ध भगवान को क्या सुख है और वह किस तरह होता है ?

उ०—नहीं, सिद्ध भगवान अशरीगी है, वे पुद्गलों के यानि जड वस्तु के संग रहित होकर केवल आत्म स्वरूप में लीन हो चौदह राजलोक का नाटक देखते हुए अनन्त सुख की लहर में विराजमान है।

१०. प्र०—वहां पर खाना, पीना, पहनना, ओढना, गाना, बजाना, मान, सन्मान आदि कुछ भी नही है तो फिर सुख किस प्रकार का है ?

उ०—खान पान आदि मे अपन सुख मानते है परन्तु वास्तव मे वे पदार्थ सुख स्वरूप नही है। क्योंकि जिस वस्तु मे सुख देने का स्वभाव होता है, वह हमेशा सुखदायक ही होना चाहिये। मगर अमुक समय तक सुख तक देने के बाद वही वस्तु दुःख मे परिणमे उसको सुखदाता कैसे कही जाय। जैसे कि खीर का स्वाद मीठा है और उसको खाने से अपने को सुख अनुभव होता है, किन्तु वही खीर पेट भर खा लेने के बाद में उसके ऊपर जब रूचि उतर जाती है उस वक्त यदि कोई मनुष्य बलात्कार से अपने को खीर पिलाते ही रहे तो वही खीर दुःख का और क्वचित मृत्यु का कारण रूप भी हो जाती है, पांचों इन्द्रियों के विषय भोग की भी यहीं दशा है।

११. प्र०—तब सच्चा सुख किसको कहा जाय ?

उ०—जिस सुख का अन्त दुःख रूप न होवे जो हमेशा ही सुखरूप रहे वही सच्चा सुख है।

१२. प्र०—मोक्ष मे जो अनन्त सुख है वह उनको किस चीज से मिलते है ? याने उनके पास सुख प्राप्त करने

उ०—सुख का आधार ज्ञान के उपर है इस दृश्य मान जगत में जितने पदार्थ है, उनमे शब्द, रूप, गंध रस और स्पर्श यह मुख्य पांच गुण होते है। उन गुणों की परीक्षा के लिये अपने पास श्रोतेन्द्रिय आदि पांच इन्द्रियां है। शब्दादिक विषयो का इन्द्रियों के द्वारा आत्मा को ज्ञान होता है; तब पुद्गलाभि नदी आत्मा उन विषयों को सुख मानता है। वह सुख भी ज्ञान के ही अन्तर्गत है। रसेन्द्रिय द्वारा खीर का स्वाद जान लेने पर उसके सुख का अनुभव होता है। किसी ने आपको भला आदमी कहा आपने उसे समझा तब सुख की प्राप्ति हुई। बिना ज्ञान के सुख का अनुभव नहीं होता है इससे समझना चाहिये कि स्वाद वगैरः के स्वल्प ज्ञान से ही अपने को सुख मिलता है। तब ऐसे-ऐसे अन्यान्य अनन्त गुणा १४ राज लोकों मे वर्तमान तमाम आत्माओं एवं सर्व द्रव्यों के अतीत भविष्यत और वर्तमान काल के भावों को जो जान रहे है। उसका सुख, कितना अगाध होगा उनका अनन्त ज्ञान दर्शन गुण का ही आभारी है। सिवाय इसके आत्मा को जो स्वाभाविक अनन्त सुख है वह अपनी कल्पना मे भी आस के वैसा नही है वह सुख अनुपमेय और अनुभव गोचर है; जैसे किसी ने जन्म से ही घृत खाया नही उसको घी का स्वाद कैसा है केवल शब्द मात्र से ही समझ मे नही आ सकता परन्तु जिसने स्वयं घी खाया है उसी को मालूम है

के लिये कौन-कौन से साधन हैं ?

उ०—यह बात बहुत समझने योग्य है, सुख का आधार बाह्य साधन पर नही है किन्तु मन की परिस्थिति पर है; कई दफा नव कांकरी जैसे निर्माल्य साधन से रंक मनुष्य को जो सुख अनुभव होता है वह सुख राज्य की विभूति होने पर भी राजा को अनुभूत नही होता। सुख यह आत्मा का ही गुण है वह बाहर से प्राप्त होता ही नही; जड वस्तु ही चेतना को सुख देती है यह मान्यता गलत है। खीर चाहे जितनी अच्छी बनी हो परन्तु अपनी जिह्वा मे उसका स्वाद जानने को गुण यदि नहीं होता तो वह अपने को सुख कैसे दे सकती। पुद्गल के अनन्त गुणों में से एक अथवा अधिक गुणा को जानकर वह दूसरे पदार्थ की अपेक्षा अपनी मानसिक प्रकृति को विशेष अनुकूल होने से जीव उसको सुख मानने लग जाता है। परन्तु दूसरे पल मे ही उसकी अपेक्षा विशेष मनोज्ञ दूसरी चीज यदि मिल जाय तो पहिले की चीज दुःख रूप हो जाती है, जो रेजी के कपडे व जुआर के रूखे सूखे टुकड़े से एक भिक्षुक सुख समझता है वही चीज एक राजा को दुःख रूप मालूम होती है सारांश यह है कि जड़ वस्तु के ऊपर सुख दुःख का आधार नहीं है मगर अपनी खुद की मान्यता के ऊपर है।

१३. प्र०—सिद्ध भगवान को क्या सुख है और वह किस तरह होता है ?

सास्त्र भगवती सूत्र शतक २४ ३६ शो २४:
के अनुसार संघयण का वर्णन

संघयण	गति उत्कृष्ट ऊंची	नीची
वज्र ऋषभ नाराच	अनुत्तर विमान	७ वीं नरक
ऋषभ नाराच	नवग्रेवेयक	६ वीं नरक
नाराच	१२ देवलोक	५ वीं नरक
अर्ध नाराच	८ देवलोक	४ वीं नरक
कालिका	६ देवलोक	३ वीं नरक
स्पार्टक	४ देवलोक	२ वीं नरक

उ०—नहीं; सिद्ध शिला सिद्ध क्षेत्र के बराबर नीचे है, परन्तु उन दोनों के बीच एक जोजन में एक गउ (कोस) का छट्ठा भाग जितना कम अन्तर है।

१९. प्र०—३३३ धनुष्य और ३२ अंगुल की सिद्ध क्षेत्र की मोटाई होने का क्या कारण है ?

उ०—सिद्ध भगवान की उत्कृष्ट अवगाहणा उतनी ही होने के कारण।

२०. प्र०—सिद्ध के शरीर नहीं तब अवगाहणा कैसी ?

उ०—शरीर नहीं परन्तु आत्मप्रदेश का घन, चरम शरीर का दो तिहाई भाग जितना भाग बधा हुअ है और ज्यादा से ज्यादा ५०० धनुष्य की अवगाहणा वाले मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकते है इस लिये उनके दो तिहाई भाग जितनी उत्कृष्ट अवगाहणा है।

२१. प्र०—जघन्य कितनी अवगाहणा वाले सिद्ध होते है ?

उ०—दो हाथ की।

२२. प्र०—सिद्ध भगवान की जघन्य अवगाहणा कितनी होती है ?
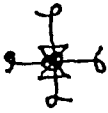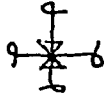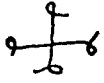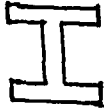
उ०—एक हाथ और आठ अंगुल की।

२३. प्र०—कैसे मनुष्य व कितनी वय वाले मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकते है ?

उ०—जघन्य नौ वर्ष और उत्कृष्ट क्रोड पूर्व की आयु वाल और वज्र ऋषभ नाराच संघयण धारक कर्म भूमि के मनुष्य मे से जिनको केवलज्ञान प्राप्त होता है वो ही मोक्ष मे जाता है।

सास्त्र भगवती सूत्र शतक् २४ ३६ शो २४: के अनुसार संघयण का वर्णन

संघयण		गति उत्कृष्ट ऊंची	नीची
वज्र ऋषभ नाराच		अनुत्तर विमान	७ वीं नरक
ऋषभ नाराच		नवग्रेवेयक	६ वीं नरक
नाराच		१२ देवलोक	५ वीं नरक
अर्ध नाराच		८ देवलोक	४ वीं नरक
कालिका		६ देवलोक	३ वीं नरक
स्पार्टक		४ देवलोक	२ वीं नरक

पाठ-२६

सामान्य प्रश्नोत्तर

१. प्र०—धर्म किसे कहते है ?
उ०—जो दुर्गति में जाते हुए जीव को बचाता है।

२. प्र०—धर्म का मूल क्या है ?
उ०—विनय ।

३. प्र०—विनय का अर्थ क्या है ?
उ०—विशिष्ट नीति (न्याय)।

४. प्र०—पाप का मूल क्या है ?
उ०—लोभ ।

५. प्र०—रोग का मूल क्या है ?
उ०—स्वादिष्ट वस्तु खाने का कुव्यसन ।

६. प्र०—दुःख का मूल क्या है ?
उ०—राग (स्नेह) ।

७. प्र०—दुःख किसे कहते है ?
उ०—परतन्त्रता ।

८. प्र०—सुख किसे कहते है ?
उ०—सज्ञान स्वतन्त्रता।

९. प्र०—सुख का निदान क्या है ?
उ०—संतोष ।

१०. प्र०—संतोष का अर्थ क्या है ?
उ०—इच्छाओ को रोकना।

११. प्र०—संसार मे जागृत कौन है ?

उ०—विवेकी, समदृष्टि ।

१२. प्र०—संसार मे सुप्त कौन है ?

उ०—अविवेकी, मिथ्या दृष्टि ।

१३. प्र०—संसार मे मदिरा कौनसी है ?

उ०—मोह ।

१४. प्र०—संसार में अमृत कौनसा है ?

उ०—अनुभवियों का हितोपदेश ।

१५. प्र०—ससार में अग्नि कौनसी है ?

उ०—ईर्षा ।

१६. प्र०—गुरु कौन हो सकता है ?

उ०—जो आत्मा के हितार्थ उपदेश देता है ।

१७. प्र०—हित का अर्थ क्या है ?

उ०—कर्म दुःख से मुक्त होना ।

१८. प्र०—शिष्य किसे कहते है ?

उ०—जो गुरु की आज्ञा धारक और भक्तिकारक हो।

१९. प्र०—दरिद्री कौन है ?

उ०—अधिक तृष्णावान् मनुष्य ।

२०. प्र०—श्रीमंत कौन है ?

उ०—सर्वथा संतोषी ।

२१. प्र०—मूर्ख कौन है ?

उ०—जो अमूल्य भव व्यर्थ गमाता है ।

२२. प्र०—चतुर कौन है ?

उ०—जो जन्म सफल करता है ।

२३. प्र०—शत्रु कौन है ?

उ०—मनोविकार ।

२४. प्र०—मित्र कौन है ?

उ०—आत्म बोध।

२५. प्र०—नेत्र कौनसे ?

उ०—सद्‌विद्या।

२६. प्र०—अनित्य क्या है ?

उ०—पौद्‌गलिक सर्व वस्तुएँ।

२७. प्र०—अचल क्या है ?

उ०—परमात्म स्वरूप।

२८. प्र०—जगत का दास कौन है ?

उ०—जो आशा का दास है।

२९. प्र०—सब संसार किसका दास है ?

उ०—आशा जिसकी दासी है।

३०. प्र०—जगत में गिरने का रास्ता कौनसा है ?

उ०—सात व्यसन की सेवकाई।

३१. प्र०—सात व्यसन कौनसे है ?

उ०—जूआ, मांसहार, मद्यपान, वैश्यागमन, शिकार, चोरी, पर-स्त्री सेवन।

३२. प्र०—क्या जानना मुश्किल है ?

उ०—स्वदोष तथा स्वस्वरूप।

३३. प्र०—बहरा कौन है ?

उ०—जो हित बोध नहीं सुनता है।

३४. प्र०—गूंगा कौन है ?

उ०—जिसे समय पर उचित बोलना न आवे।

३५. प्र०—अंधा कौन है ?

उ०—विषय मे आसक्त (कामी)।

३६. प्र०—पशु कौन है ?

उ०—अविवेकी।

३७. प्र०—शूरवीर कौन है ?
उ०—मन को जीतने वाला ।

३८. प्र०—जड़ का धर्म क्या है ?
उ०—सड़ना, गिरना, रूपान्तर होना ।

३९. प्र०—चैतन्य का धर्म क्या है ?
उ०—अविनाशीपना ।

४०. प्र०—जीव किसे कहते है ?
उ०—जो प्राण से जीवित है ।

४१. प्र०—अजीव किसे कहते है ?
उ०—चैतन्य रहित जड ।

४२. प्र०—पुण्य किसे कहते है ?
उ०—जिन कर्मो का परिणाम इष्ट हो ।

४३. प्र०—पाप किसे कहते है ?
उ०—जिन कर्मो का परिणाम अनिष्ट हो ।

४४. प्र०—मोक्ष किसे कहते है ?
उ०—सर्व कर्मो से मुक्त होना ।

४५. प्र०—संसार किसे कहते है ?
उ०—जहाँ जन्म, मरन के चक्र चला करते है ।

४६. प्र०—सम्मति कितने प्रकार की है ?
उ०—दो; आसुरी, दैवी ।

४७. प्र०—संसार का वीज क्या है ?
उ०—राग और द्वेष ।

४८. प्र०—मनुष्य को क्या करना चाहिए ?
उ०—समझ कर अपना कर्तव्य ।

४९. प्र०—मनुष्य को क्या न करना चाहिए ?
उ०—अकर्तव्य ।

५०. प्र०—मनुष्य को किस राह पर चलना चाहिए ?
उ०—जिस राह से महापुरुष गये है ।

५१. प्र०—मनुष्य को किस राह पर न जाना चाहिये ?
उ०—जिस राह पर जाने की परमात्मा की काज्ञा न हो ।

५२. प्र०—जीव मात्र के कितने शरीर है ?
उ०—दो सुक्ष्म और एक स्थूल, यों तीन ।

५३. प्र०—ज्ञान किसे कहते है ?
उ०—यथार्थ जाजने को ।

५४. प्र०—अज्ञान किसे कहते है ?
उ०—विपरीत समझने को ।

५५. प्र०—चांडाल कौन है ?
उ०—विश्वासघाती, कृतघ्नी, मिथ्या साक्षी देने वाला, प्रचण्ड क्रोधी ये चार कर्म चांडाल और पांचवा जाति चांडाल ।

५६. प्र०—साधु कौन है ?
उ०—जो आत्म-कार्य साधता है ।

५७. प्र०—चतुर कौन है ?
उ०—जो अवसर पहचानता है ।

५८. प्र०—विद्वान कौन है ?
उ०—जो विद्या पढ़कर तदनुसार वर्ताव रखता है ।

५९. प्र०—पंडित कौन है ?
उ०—जो स्वाश्रय द्वारा श्रेय साधता है ।

६०. प्र०—पढ़ा हुआ कौन है ?
उ०—जो संसार में न भुलाता है ।

६१. प्र०—अकल का शत्रु कौन है ?
उ०—जो अपना रहस्य दुश्मन को बताता है ।

६२. प्र०—अक्ल का बारदान कौन है?
उ०—जो मूर्ख होकर पंडित बनता है।

६३. प्र०—व्यापारी कौन है?
उ०—जो न्यायानुसार व्यापार में कुशल हो।

६४. प्र०—नृपति कौन है?
उ०—जो मनुष्यों का न्याय पूर्वक पालन करता है।

६५. प्र०—क्षत्री कौन है।
उ०—जो नाश होते मनुष्य की रक्षा करता है।

६६. प्र०—ब्राह्मण कौन है।
उ०—जो आत्म-तत्व (ब्रह्म) पहिचानता है।

६७. प्र०—मनुष्य कौन है?
उ०—जिसमें मनुष्यत्व हो।

६८. प्र०—मनुष्य शरीर में पशु कौन है?
उ०—जिसे सारासार और हिताहित का विचार या ज्ञान न हो।

६९. प्र०—देव कौन है?
उ०—जिसमें दिव्य गुण भरे हों।

७०. प्र०—शास्त्र का अर्थ क्या है?
उ०—जिससे शिक्षा मिलती हो।

७१. प्र०—सिद्धान्त का अर्थ क्या है?
उ०—जिसका अर्थ सिद्ध, (पूर्ण) हो।

७२. प्र०—सूत्र किसे कहते है?
उ०—जिसमे मूल कम और भावार्थ अधिक हो या जिसमें अक्षर कम, और अर्थ अधिक निकलता हो।

७३. प्र०—महत्ता का मूल क्या है?
उ०—किसी से कुछ न मांगना।

७४. प्र०—अस्थिर वस्तु कौनसी है ?
उ०—धन, यौवन, आयुष्य ।
७५. प्र०—शल्य की तरह दुःखदाई कौन है ?
उ०—गुप्त कृत पाप कर्म ।
७६. प्र०—उत्तम दान कौनसा है ?
उ०—अभयदान और ज्ञानदान ।
७७. प्र०—आदरने योग्य क्या है ?
उ०—सद्गुरु के वचन ।
७८. प्र०—पवित्र कौन है ?
उ०—निष्कपटी अन्तःकरण वाला ।
७९. प्र०—अपना श्रेय करने वाला कौन है ?
उ०—अपन ही है ।
८०. प्र०—अपना अनिष्ट करने वाला कौन है ?
उ०—अपन ही है ।
८१ प्र०—अपन अपना अनिष्ट कैसे करते है ?
उ०—अज्ञानता के कारण ।
८२. प्र०—क्या त्यागना मुश्किल है ?
उ०—दुष्ट आशा ।
८३. प्र०—संसार का गुलाम कौन है ?
उ०—जो आज्ञा का गुलाम हो ।
८४. प्र०—परम आषद का स्थान कौनसा है ?
उ०—अविवेक ।
८५. प्र०—निर्भयता कब प्रकट होती है ?
उ०—अविद्या जब नाश होती है ।
८६. प्र०—सच्चा खजाना कौनसा है ?
उ०—सद्विद्या ।

८७. प्र०—सद्‌विद्या क्या फल देती है ?
उ०—पर आधीनता का निवारण करती है।
८८. प्र०—सच्चा लाभ कौनसा है ?
उ०—आत्म स्वरूप की पहिचान।
८९. प्र०—विश्व को किसने जीता है ?
उ०—जिसने मन को जीत लिया है।
९०. प्र०—अभय का स्थान कौनसा है ?
उ०—यथार्थ वैराग्य।
९१. प्र०—समस्त संसार में उन्नत कौन है ?
उ०—निस्पृही मानव (निराशी)।
९२. प्र०—दुःख कितने प्रकार के है ?
उ०—दो; मानसिक और शारीरिक।
९३. प्र०—मन कैसे जीता जा सकता है ?
उ०—वैराग्यमय अभ्यास से।
९४. प्र०—धर्म का स्वरूप क्या है ?
उ०—परम सत्य।
९५. प्र०—धर्म वृक्ष का फल क्या है ?
उ०—मोक्ष (निर्वाण)।
९६. प्र०—मोक्ष का प्रथम चरण कौनसा है ?
उ०—सच्चे शास्त्र का श्रवण।
९७. प्र०—मोक्ष का वीज क्या है ?
उ०—सम्यक् ज्ञान (सच्चा ज्ञान)।
९८. प्र०—मोक्ष फल का रस क्या है ?
उ०—परमानन्द।
९९. प्र०—परमानन्द स्वरूप किसका है ?
उ०—अपनी आत्मा का।

पाठ-२७

सामान्य प्रश्नोत्तर

१. प्र०—जीव के बंधन कितने है ?
उ०—दो; राग और द्वेष ।

२. प्र०—जीव कितनी तरह से दंडित होता है ?
उ०—तीन तरह से, मन, बचन और काया से ।

३. प्र०—कषाय कितने है ?
उ०—चार; क्रोध, मान, माया, लोभ ।

४. प्र०—शल्य कितने है ?
उ०—तीन; माया, नियाण, मिथ्यात्व ।

५. प्र०—गुप्ति कितनी है ?
उ०—तीन; मन, बचन, काया ।

६. प्र०—विकथा कितनी है ?
उ०—चार; स्त्री, भात, राज और देश ।

७. प्र०—ध्यान कितने है ?
उ०—चार; आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, शुक्लध्यान ।

८. प्र०—ध्यान के कितने भेद है ?
उ०—चार भेद है; पदस्थ, पिडस्थ, रूपस्थ, रूपातीत ।

९. प्र०—लेश्या कितनी है ?
उ०—छः; कृष्ण, नील, कापोत, तेजू, पद्म, और शुक्ल ।

१०. प्र०—भय कितने है ?
उ०—सात; इहलोक, परलोक मृत्यु, अपयश, अकस्मात्, आदान, आजिविका ।

११. प्र०—नय कितने है ?

उ०—सात; नैगम, संग्रह, व्यवहार ऋजुसूत्र, शब्द समभिरुढ़, एवंभूत ।

१२. प्र०—निक्षेपा कितने है ?

उ०—चार; नाम, स्थापन, द्रव्य, भाव ।

१३. प्र०—ज्ञान कितने है ?

उ०—पांच; मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव, केवलज्ञान ।

१४. प्र०—अज्ञान कितने है ?

उ०—तीन; मति, श्रुत विभंग ज्ञान ।

१५. प्र०—दृष्टि कितनी है, और कौन-कौन सी है ?

उ०—तीन; समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि, समनिथ्यदृष्टि, (मिश्रदृष्टि) ।

१६. प्र०—शास्त्र देखने मे कितनी दृष्टि हो और कौनसी हो ?

उ०—पचीस; चार प्रमाण, चार निक्षेपा, सात नय, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, निश्चय व्यवहार, विशेष, अविशेष कार्य, कारण ।

१७. प्र०—चार प्रमाण कौन से है ?

उ०—प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम, उपमा ।

१८. प्र०—आत्मा के कितने भेद है ?

उ०—तीन तथा आठ ।

१९. प्र०—आत्मा के तीन भेद कौन-कौन से है ?

उ०—वहिरात्मा, अन्तरामा, और परमात्मा ।

२०. प्र०—आत्मा के आठ भेद कौन कौन से है ?

उ०—द्रव्यात्मा, कपायात्मा, योगात्मा, उपयोगात्मा, ज्ञानात्मा, दर्शनात्मा, चरित्रात्मा और वीर्यात्मा ।

२१. प्र०—योग कितने है ?

उ०—तीन, छः और पन्द्रह।

२२. प्र०—तीन योग कौन-कौन से है ?

उ०—मनयोग, बचनयोग, कायायोग ।

२३. प्र०—पंद्रह योग कौन से है ?

उ०—सत्यमन, असत्यमन, मिश्रमन, व्यवहारमन, सत्यभाषा, असत्यभाषा, मिश्रभाषा, व्यवहारभाषा, औदारिक, वैक्रिय, आहारिक, ये तीन और इन मिश्र तथा कार्मण योग।

२४. प्र०—छः योग कौन से है ?

उ०—कर्म योग, ज्ञान योग, मंत्र योग, भक्ति योग, हठ योग, और राजयोग ।

२५. प्र०—आचार कितने है ?

उ०—चार; ज्ञानाचार, दर्शनाचार, तपाचार और वीर्याचार ।

२६. प्र०—राशि कितनी है ?

उ०—दो; जीव और अजीव, या व्यवहार और अव्यवहार ।

२७. प्र०—रस कितने है ?

उ०—नौ; शृंगार, वीर, करूणा, हास्य, रौद्र, भयानक अभ्द्भुत विभत्स और शांत ।

२८. प्र०—भावना कितनी है ?

उ०—बारह और चार ।

२९. प्र०—बारह भावना कौन-कौन सी है ?

उ०—अनित्य भावना, अशरण भावना, संसार भावना, एकत्व भावना, अन्यत्त्र भावना,, अशुचि भावना, आश्रव भावना, संवर भावना, निर्जरा भावना,

लोक भावना, बोधि भावना, और धर्म भावना।

३०. प्र०—चार भावना कौन-कौन सी है ?
उ०—मैत्री, करूणा, प्रमौद, माध्यस्थ ।

३१. प्र०—समवाय कितनी है ?
उ०—पांच; काल, स्वभाव, नियत, पूर्वकर्म, उद्यम ।

३२. प्र०—पाप कितने है ?
उ०—प्राणातिपात आदि अठारह ।

३३. प्र०—कर्म के कितने भेद है ?
उ०—आठ, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोह-नीय, आयुष्य, नाम, गोत्र और अंतराय ।

३४. प्र०—प्राणा कितने है ?
उ०—दस; पांच इन्द्रिय, मन, बचन, काया, श्वासोश्वास, और आयुष्य ।

३५. प्र०—सूत्र कितने प्रकार के है ?
उ०—सात; विधि, उपदेश, आदेश, वर्णन, भय, उत्सर्ग अपवाद ।

३६. प्र०—प्रमाद कितने है ?
उ०—पांच; मद, विषय, कषाय, निंदा, विकथा ।

३७. प्र०—तत्व कितने है ?
उ०—नौ; जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, वंध, मोक्ष ।

३८. प्र०—द्रव्य कितने हे ?
उ०—छः; धर्मास्ति काय, अधर्मास्ति काय, आकास्ति काय, जीवास्ति काय, कालास्ति काय और पौद्-गलास्ति काय ।

३९. प्र०—भाव कितने है ?

उ०—प्रथम तीन, दूसरे तीन।

४०. प्र०—तीन कौन-कौन से है ?

उ०—उत्तम, मध्यम, कनिष्ट, तथा क्षायक भाव, क्षयोप, शम भाव, और उपशम भाव।

४१. प्र०—दोष कितने हैं ?

उ०—तीन; अति व्याप्ति, अव्याप्ति, असंभव।

४२. प्र०—प्रर्याप्ति कितनी है ?

उ०—छः; आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोश्वास, भाषा, और मन।

पाठ-- २८

महावीर प्रभु सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

१. प्र०—चौबीसवें तीर्थंकर कौन हुए है ?

उ०—महावीर स्वामी।

२. प्र०—वे कौन से देवलोक से चल कर आये थे ?

उ०—दसवें प्राणन देवलोक से।

३. प्र०—कौन से गांव और किस के यहां जन्म हुवा ?

उ०—महान कुण्ड गांव में, ऋषभदत्त ब्राह्मग को देवानन्दा के उदर मे।

४. प्र०—कौनसी तिथि को ?

उ०—आसाढ़ शुक्ला ६।

५. प्र०—वहां कितने समय तक रहे ?

उ०—साढ़े बयासी अहो रात्री।

६. प्र०—उनका हरण कौनसी तिथि को हुआ? कहां रक्खा?

उ०—भाद्रवा वदी १३ को, क्षत्रीकुंड नगर मे राजा की स्त्री त्रिसला देवी की कुक्ष मे रक्खा

७. प्र०—उनका जन्म कौनसी तिथि को हुआ?

उ०—चैत्र शुक्ला १३।

८. प्र०—गृहस्थावस्था में कितने वर्ष रहे?

उ०—तीस वर्ष।

९. प्र०—उनके भाई का नाम क्या है?

उ०—नंदी वर्धन।

१०. प्र०—उनकी स्त्री का नाम क्या है?

उ०—यशोदा।

११. प्र०—उनकी बालिका का नाम क्या है?

उ०—प्रिय दर्शन।

१२. प्र०—उनकी बहिन का नाम क्या है?

उ०—सुदर्शना।

१३. प्र०—उनके जवाई का नाम क्या है?

उ०—जमाली।

१४. प्र०—उन्हें गृहस्थाश्रम में कितने ज्ञान

उ०—तीन; मति, श्रुत, अवधि।

१५. प्र०—दिक्षा ली उस समय कितने ज्ञ

उ०—चार; मति, श्रुत, अवधि, मनः

१६. प्र०—दिक्षा किस तिथि को ली?

उ०—कार्तिक शुक्ला दशमी।

१७. प्र०—दिक्षा लेने के पश्चात कैवल्य ज्ञान

उ०—बारह वर्ष छः मास, और पंद्रह दिन बाद ।

१८. प्र०—केवली होकर कितने वर्ष विचरे ?

उ०—उन्तीस वर्ष छः मास ।

१९. प्र०—उनका आयुष्य कितना है ?

उ०—बहोत्तर वर्ष ।

२०. प्र०—उनके कितने गणधर हुए ?

उ०—ग्यारह ।

२१. प्र०—उनके कितने साधु हुए ?

उ०—चौदह हजार ।

२२. प्र०—उनकी अर्या कितनी हुई ?

उ०—छत्तीस हजार ।

२३. प्र०—उनके श्रावक कितने हुए ?

उ०—एक लाख उन्सठ हजार ।

२४. प्र०—उनके श्राविका कितनी हुई ?

उ०—तीन लाख अठारह हजार ।

२५. प्र०—चौदह पूर्व के ज्ञान वाले कितने साधु थे ?

उ०—तीन सौ ।

२६. प्र०—अवधि ज्ञान वाले कितने हुए ?

उ०—तेरह सौ ।

२७. प्र०—मनपर्यव ज्ञानी कितने हुए ?

उ०—पांच सौ ।

२८. प्र०—वैक्रयलब्धिधारी कितने हुए ?

उ०—सात सौ ।

२९. प्र०—केवल्यज्ञानी साधु कितने हुए ?

उ०—सात सौ ।

३०. प्र०—उनकी कितनी आर्या मोक्ष पधारी ?

उ०—साड़े बयासी अहो रात्री ।

६. प्र०—उनका हरण कौनसी तिथि को हुआ ? और उन्हें कहां रक्खा ?

उ०—भादवा बदी १३ को, क्षत्रीकुंड नगर में सिद्धार्थ राजा की स्त्री त्रिसला देवी की कुक्ष मे रक्खा।

७. प्र०—उनका जन्म कौनसी तिथि को हुआ ?

उ०—चैत्र शुक्ला १३ ।

८. प्र०—गृहस्थावस्था में कितने वर्ष रहे ?

उ०—तीस वर्ष ।

९. प्र०—उनके भाई का नाम क्या है ?

उ०—नंदी वर्धन ।

१०. प्र०—उनकी स्त्री का नाम क्या है ?

उ०—यशोदा ।

११. प्र०—उनकी बालिका का नाम क्या है ?

उ०—प्रिय दर्शन ।

१२. प्र०—उनकी बहिन का नाम क्या है ?

उ०—सुदर्शना ।

१३. प्र०—उनके जवाई का नाम क्या है ?

उ०—जमाली ।

१४. प्र०—उन्हें गृहस्थाश्रम में कितने ज्ञान थे ?

उ०—तीन; मति, श्रुत, अवधि ।

१५. प्र०—दिक्षा ली उस समय कितने ज्ञान थे ?

उ०—चार; मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यव ।

१६. प्र०—दिक्षा किस तिथि को ली ?

उ०—कार्तिक शुक्ला दशमी ।

१७. प्र०—दिक्षा लेने के पश्चाप कैवल्य ज्ञान कब प्रकट हुआ ?

उ०—बारह वर्ष छः मास, और पंद्रह दिन बाद ।

१८. प्र०—केवली होकर कितने वर्ष विचरे ?

उ०—उन्तीस वर्ष छः मास ।

१९. प्र०—उनका आयुष्य कितना है ?

उ०—बहोत्तर वर्ष ।

२०. प्र०—उनके कितने गणधर हुए ?

उ०—ग्यारह ।

२१. प्र०—उनके कितने साधु हुए ?

उ०—चौदह हजार ।

२२. प्र०—उनकी अर्या कितनी हुई ?

उ०—छत्तीस हजार ।

२३. प्र०—उनके श्रावक कितने हुए ?

उ०—एक लाख उन्सठ हजार ।

२४. प्र०—उनके श्राविका कितनी हुई ?

उ०—तीन लाख अठारह हजार ।

२५. प्र०—चौदह पूर्व के ज्ञान वाले कितने साधु थे ?

उ०—तीन सौ ।

२६. प्र०—अवधि ज्ञान वाले कितने हुए ?

उ०—तेरह सौ ।

२७. प्र०—मनपर्यव ज्ञानी कितने हुए ?

उ०—पांच सौ ।

२८. प्र०—वैक्रयलब्धिधारी कितने हुए ?

उ०—सात सौ ।

२९. प्र०—केवल्यज्ञानी साधु कितने हुए ?

उ०—सात सौ ।

३०. प्र०—उनकी कितनी आर्या मोक्ष पधारी ?

उ०—चौदह सौ।

३१. प्र०—अनुत्तर विमान में कितने साधु गये?

उ०—आठ सौ।

३२. प्र०—प्रभु को केवल्यज्ञान कब हुआ?

उ०—बैसाख सुदी दसम को।

३३. प्र०—केवल्यज्ञान प्रगट हुए बाद उन्होंने पहिला काम कौनसा किया?

उ०—चार तीर्थ की स्थापना की।

३४. प्र०—चार तीर्थ कौन-कौन से है?

उ०—साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका।

३५. प्र०—वे प्रभु मोक्ष कब गये?

उ०—कार्तिक बदी ३०।

३६. प्र०—उनके गणधर के नाम क्या है?

उ०—इद्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, विगतभूति, सुधर्मास्वामी, मंडिपुत्रजी, मोरीपुत्रजी, अकम्पितजी, अचलजी, मेतारजजी, प्रभासजी।

३७. प्र०—उनके (प्रत्येक के) कितने-कितने शिष्य थे?

उ०—प्रथम पांच के, पांच सौ, दो के साढे तीन सौ, और अन्त के चारों के तीन-तीन सौ शिष्य थे।

३८. प्र०—महावीर स्वामी के मोक्ष पधारने पर केवल्यज्ञान किसे प्रगट हुआ, और गादी पर कौन बैठा।

उ०—गौतम स्वामी को केवल्यज्ञान प्रकट हुआ, और सुधर्मास्वामी उनके पाट विराजे।

३९. प्र०—महावीर स्वामी के पश्चात गौतम स्वामी और सुधर्मास्वामी कब मोक्ष गये?

उ०—गौतमस्वामी बारह वर्ष बाद, और सुधर्मास्वामी

बीस वर्ष बाद मोक्ष गये ।

प्र०—सुधर्मास्वामी के पश्चात कौन पाट बिराजे और वे कितने ज्ञानी थे ।

उ०—उनके पाट जम्बू स्वामी बैठे थे, और वे केवलज्ञानी थे ।

प्र०—महावीर स्वामी के कितने वर्ष बाद जम्बूस्वामी मोक्ष पधारे ?

उ०—चोसठ वर्ष पश्चात् ।

प्र०—उनके बाद कौन केवलज्ञानी हुवे ?

उ०—किसी को भी केवलज्ञान नहीं हुआ । चरम केवली श्री जम्बूस्वामी थे । (उनके पश्चात भरत-क्षेत्र से केवलज्ञान विच्छेद गया) ।

प्र०—जम्बूस्वामी के पश्चात कौन आचार्य हुए और वे कितने वर्ष बाद स्वर्ग पधारे ।

उ०—जम्बूस्वामी के पश्चात् उनकी गादी प्रभवस्वामी को मिली, वे महावीर स्वामी के ७५ वर्ष बाद स्वर्ग गये, उनके पाट श्री संभवस्वामी हुए वे महावीर स्वामी से ६८ वर्ष बाद स्वर्ग गये। उनके पीछे यशोभद्र पाट पर बिराजे थे, वे महावीर स्वामी के १४८ वर्ष बाद स्वर्ग गए। उनके दो शिष्य थे संभूतिविजय और भद्रबाहु, संभूतिविजय, महावीर स्वामी से १५६ वर्ष बाद और भद्रबाहु १७० वर्ष बाद स्वर्ग गए ।

४. प्र०—भद्रबाहु स्वामी को कितना ज्ञान था ?

उ०—चौदह पूर्व का ज्ञान था, उनके पश्चात कोई चौदह पूर्व के ज्ञान वाले साधु न हुए ।

४५. प्र०—भद्रबाहु के शिष्य कौन हुए, और कितने ज्ञानी थे?
उ०—स्थूलीभद्र जी थे, और वे दस पूर्व के ज्ञानी थे, उनके पश्चात् पूर्व का ज्ञान धीरे-धीरे कम होता गया।

४६. प्र०—जैन सूत्र सिद्धान्त किसने लिखे?
उ०—देवीर्धगणि क्षमाश्रम ने।

४७. प्र०—वे महावीर स्वामी के कितने पाट बाद हुए?
उ०—सतावीसवें पाट पर बैठे।

४८. प्र०—पुस्तके किस ग्राम मे लिखी?
उ०—वल्लभीपुर मे (वला मे)।

४९. प्र०—महावीर स्वामी से कितने वर्ष बाद पुस्तकें लिखी गईं?
उ०—९८० वर्ष पश्चात्।

५०. प्र०—सूत्र किसने संगठित किये?
उ०—सुधर्मा स्वामी गणधर ने।

५१. प्र०—महावीर स्वामी ने बेले कितने किये?
उ०—दो सौ उन्तीस।

५२. प्र०—तेले कितने किये?
उ०—बारह।

५३ प्र०—उपवास कितने किये?
उ०—पद्रह पंद्रह दिन के अर्धमास क्षमण १२, डेढ मासी दो, दो मासी ६, ढाई मासी–२, तीन मासी २, चार मासी ९, छः मासी २।

५४. प्र०—साढ़े वारह वर्ष और पंद्रह दिन मे कितनी नींद ली?
उ०—दो घड़ी।

५५ प्र०—मोक्ष गये तब कौनसा नक्षत्र था?

उ०—स्वाति ।

५६. प्र०—महावीर स्वामी के च्यवन, हरण, जन्म और केवलज्ञान प्रकट होते समय कौन-कौन से नक्षत्र थे ?

उ०—इन पांचों अवसर पर उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र था ।

५७. प्र०—उन्होंने दिक्षा कितने जनों के साथ ली थी ?

उ०—अकेले ने ही ।

५८. प्र०—साढ़े बारह वर्ष और पंद्रह दिन में उन्होंने भोजन कितने दिन किया ?

उ०—तीन सो उंच्चास दिन ।

५९. प्र०—उन्होंने एक-एक उपवास कितने किये ?

उ०—उन्होंने एक-एक उपवास किया ही नहीं कम से कम एक साथ दो उपवास किये ।

पाठ-२९

देव गुरु धर्म सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

१. प्र०—देव किसे कहते है ?

उ०—अठारह दोष रहित हो ।

२. प्र०—अठारह दोष कौन कौनसे है ?

उ०—दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यांतराय, हास्य, रति, अरति, भय, [illegible] निंदा, काम, मिथ्यात्व, अज्ञान, निद्रा, अ[illegible] राग, द्वेष ।

३. प्र०—देव के शरीर होते है या नहीं ?

उ०—शरीर रहित और सहित भी देव होते है।

४. प्र०—शरीर सहित देव कौन है ?

उ०—जिन्होंने चार घनघाती कर्म नष्ट किये है।

५. प्र०—घनघाती कर्म कौन से हैं ?

उ०—ज्ञानावर्णीय, दर्शनावर्णीय, मोहनीय, अंतरायकर्म।

६ प्र०—जब घनघाती कर्मों का नाश होता है तब कौनसा ज्ञान प्रकट होता है ?

उ०—केवल्य ज्ञान।

७. प्र०—ऐसे केवल्यज्ञानी कितने प्रकार के होते है ?

उ०—दो; सामान्य केवली, तीर्थंकर केवली।

८. प्र०—सामान्य केवली का अर्थ क्या है ?

उ०—चाहे जो हलु कर्मी मनुष्य सदबोद्ध सुनकर आत्मस्वरूप को पहिचान परम पुरुषार्थ द्वारा केवल्यज्ञान प्राप्त करते है, उन्हे सामान्य केवली कहते है।

९. प्र०—अन्य मनुष्य की अपक्षा केवलज्ञान प्राप्त होने वाले मुमुक्षु मे किसी बात की सच्ची आवश्यकता है।

उ०—हा; उनका शरीर, वर्जऋषभ नाराच संघयण वाला, तथा पूर्ण आयुष्य को पाने वाला अवश्य होता है।

१०. प्र०—तीर्थंकर केवली की पहचान क्या है ?

उ०—जगत के उद्धारक इन महापुरुषों का जन्म अमुक समय मे ही होता है, और दुसरे मनुष्यों की अपेक्षा इनका अपुर्व सामर्थ्य अपूर्व तेज, अपूर्व ज्ञान, अपूर्व शक्ति और अपूर्व प्रभाव होता है।

११. प्र०—उन्हे संयम की दिक्षा कौन देता है ?

उ०—उन्हें गुरु की अपेक्षा नहीं रहती इसलिये वे स्वयं दिक्षा ग्रहण करते है ।

१२. प्र०—दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात वे किस प्रवृत्ति में लगते है ?

उ०—पूर्व कृत संचित कर्मों को दग्ध करने के लिये तपश्चर्या करते है, हमेशा निजन प्रदेश मे रहते है, और आत्मा ध्यान ध्याते हैं, जब तक केवलज्ञान प्रकट न हो वहां तक किसी को उपदेश को तरह उपदेश नहीं देते ।

१३. प्र०—उनके कितने लक्षण होते हैं ?

उ०—एक हजार आठ ।

१४. प्र०—केवलज्ञान प्रकट होनेपर पहिले वे क्या करते है ?

उ०—साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, इन चार तीर्थो की स्थापना करते है, और इसीलिये वे तीर्थंकर कहलाते है ।

१५. प्र०—तीर्थंकर मुख्य कितने धर्म का प्रतिपादन करते है ।

उ०—(गृहस्थ) आगार धर्म, और (त्यागी) अणगार धर्म इन दो का ।

१६. प्र०—उनके मुख्य और प्रभाविक शिष्यों का नाम क्या होता है ?

उ०—गणधर ।

१७. प्र०—उन तीर्थंकर महाराज के दूसरे नाम कहो ?

उ०—अरिहंतदेव, जिनेश्वर, परमात्म, प्रभु ऐसे अनेक गुण सम्पन्न नाम है ।

१८. प्र०—अरिहंत के गुण कितने है ?

उ०—गुण तो अनन्त है, परन्तु मुख्य रूप से बारह गुण

गिनते हैं।

१९. प्र०—प्रभु अशरीरी कब होते है ?

उ०—आयुष्य, नाम, गोत्र, वेदनीय इन चारों कर्मों का (जो प्रारब्ध से है) नाश होता है, तब तीनों शरीर से मुक्त हो परम धाम प्राप्त करते है और अशरीरी बनते है।

२०. प्र०—अशरीरी केवली प्रभु किस नाम से पहिचाने जाते है ?

उ०—सिद्ध परमात्मा के नाम से ?

२१. प्र०—उनका आकार होता है या नहीं ?

उ०—नहीं; वे निराकार, निरंजन, अरूपी और परम-ज्ञान मय होते है।

२२. प्र०—सिद्ध प्रभु जगत से क्या व्यवहार रखते है ?

उ०—उन्हें कुछ कार्य करना शेष नहीं रहा, इसलिये वे कुछ भी व्यवहार नहीं रखते।

२३. प्र०—सिद्ध प्रभु किसी भी समय इस संसार में आवें या नही ?

उ०—उनका जन्म मृत्यु नाश हो गया है इसलिये वे इस संसार में भी नहीं आ सकते।

२४. प्र०—इस ससार का कर्त्ता कौन है ?

उ०—दुनिया आदि रहीत है, इसलिये इसका कर्त्ता कोई नही है।

२५. प्र०—यह दुनिया किस तरह वनी ?

उ०—जो वस्तु अनादि होती है, यह किस तरह बनी वह प्रश्न ही नहीं हो सकता।

२६. प्र०—किसी ने नहीं बनाई यह आप किस आधार से

कहते है ?

उ०—किसी समय की बनी हुई वस्तु हो तो उसका किसी समय नाश भी होता है, परन्तु इस दुनिया का नाश नहीं होता, इसलिये यह प्राकृतिक बिना बनाई अनादि काल से है ऐसा सिद्ध होता है।

२७. प्र०—दुनियां की दिन प्रति दिन हानि, वृद्धि दृष्टि गत होती है, असंख्य प्राणी, जन्म लेते है और मरते है। असंख्य भव्य पदार्थ नष्ट हो जाते है तो भी नाश नहीं होता किस तरह कहते हो ?

उ०—दुनियां की प्रत्येक वस्तु का रूपान्तर होता है, सिर्फ स्थूल दृष्टि से हानि वृद्धि दिखती है परन्तु सचमुच मे एक परमाणु का रासानियक प्रयोग से भी नाश नही होता, और न नया उत्पन्न होता है, इसलिये दुनियां परमाणु रूप से नित्य और कार्य रूप से अनित्य है।

२८. प्र०—कर्त्ता जो ईश्वर नही तो जीवों को सुख दुःख देने वाला कौन है ?

उ०—प्राणी मात्र अपने कर्मानुसार सुख दुख भोगता है, इसमें वीत रागी परमात्मा को बीच मे आने की आवश्यकता नहीं रहती।

२९. प्र०—कर्म जड है या चैतन्य है ?

उ०—कर्म जड है।

३०. प्र०—जो जड़ है वे प्राणी को सुख दुःख कैसे दे सकते है, इस प्राणी ने इतना पाप पुण्य किया इसलिये इसे इतना सुख दुःख मिलना चाहिये, ऐसा ज्ञान, उस जड़ को कैसे हो जाता है ?

उ०—जिस प्रकार विष खाने से शरीर में पीडा दुःख हो ऐसा गुण विष में है, और पौष्टिक खुराक खाने से शरीर में शांति सुख हो यह पौष्टिक खुराक का गुण है इसी तरह प्रत्येक पदार्थ में शुभ अशुभ असर करने का गुण है, विष या अमृत को सुख दुःख प्राप्त करने का ज्ञान नहीं तो भी उनका जैसा स्वभाव है वैसा असर वे उस वस्तु को काम मे लाने वाले प्राणी के साथ करते है।

३१. प्र०—जिस तरह विष या अमृत के खाने या उपभोग मे लाने से वे असर करते है, उसी तरह क्या कर्म असर करते है ? कर्म क्या वैसी वस्तु है ?

उ०—जिस प्रकार विष या अमृत से सुख दुःख होता है उसी तरह कर्म से सुख दुःख होता है विप और अमृत जिस प्रकार शुभा शुभ परमाणु पुद्गल का समूह है इसी तरह कर्म भी शुभा शुभ परमाणु का समूह है सिर्फ विष और अमृत स्थूल है और कर्म पुद्गल सूक्ष्म है।

३२. प्र०—विष या अमृतादि पदार्थ जिस तरह शरीर के अमुक भाग भाग मे से प्रवेश करते है, उसी तरह कर्म कैसे प्रवेश करते है ?

उ०—प्राणी मात्र जैसे विचार, इच्छा अध्यावसाय, मन के सकल्प अथवा आवश्यकताएं रखते है, वैसे परमाणु पुद्गलों के समूह मन द्वारा ग्रहण करते है और वे पुद्गलों के समूह राग द्वेप वाली आत्मा के साथ क्षीरनीर के समान मिल जाते है तब

कर्म दल कहलाते है।

३३. प्र०—कर्म दल प्राणियों को सुख दुःख कब देते है?

उ०—जब तक कर्मदल सत्ताधीन (संचित रूप मे हो तब तक कुछ भी नही करते, परन्तु जब वे कर्मोदय होते है। तब प्राणी सुख दुःख का अनुभव करता है।

३४. प्र०—जीव को ऊच नीच गति प्राप्त कराने वाल कौन है?

उ०—कर्माधीन प्राणी स्वत: के कर्मवश जिस गति में जाने योग्य होता है यस गति मे जाता है।

३५. प्र०—जीव को कर्मों से सुख दुःख होता है तब कोई मनुष्य कर्म की स्तुति करे, भजन करे, अगर उसके नाम की माला फेरे, तो उस मनुष्य को कर्म सुख दे सकते है या नही?

उ०—नहीं।

३६. प्र०—क्यों न करे? उदाहरण देकर समझाओं?

उ०—जिस तरह जहर खाने वाला मनुष्य विष उतारने वास्ते विष की स्तुति करे, भजन करे, अथवा उसके नाम की माला फेरे तो उस से जहर नहीं उतर सकता उसी तरह कर्म की स्तुति करने से कुछ नही हो सकता।

३७. प्र०—परमात्मा की स्तुति करने से या भजन से परमात्मा अपना भला कर सकते है या नही?

उ०—नही; परमपद प्राप्त वीतरागी परमात्मा किसी का भला या बुरा करने की इच्छा नही करते।

३८. प्र०—जब वे किसी का भला या बुरा कुछ नहीं कर सकते तो उनका भजन करने से क्या लाभ है?

और उन से प्रतिकूल रहते में क्या हानि है ?

उ०—जीव जैसे भावना या क्रिया करता है, उसका उसे अदृश्य फल मिलता है, परमात्मा का स्मरण, कीर्तन, ध्यान, भजन, ये उत्तम भावनाएं और उच्च क्रियाएं है। उन पर पवित्र का ध्यान धरने वाला स्वय पवित्र हो जाय ऐसा उन प्रभु मे अलौकिक गुण है। और उन प्रभु से प्रतिकूल रहने वाला अपनी अनिष्ट भावनाओं, और क्रियाओं से अपने स्वतः का अज्ञानता, के कारण अनिष्ट कर लेता है।

३९. प्र०—परमात्मा हमारा भला करेगा, इस आशा से मनुष्य उनका स्मरण या स्तुति करते है तो उन्हें फल मिलता है या नही ?

उ०—परमात्मा का नाम ही मंगल रूप है इसलिये जितने प्रेम और शुद्ध मन से उनका स्मरण करें उतना लाभ अवश्य प्राप्त होता है।

४०. प्र०—कोई मनुष्य अपना व्यवहार न सुधारे, और सिर्फ परमात्मा का स्मरण ही करता रहे तो उसका भला हो सकता है या नही ?

उ०—प्रभु का स्मरण करने वाला जो, अपना व्यवहार खराब रक्खेगा, तो उसे स्मरण करना ही न रुचेगा, श्रेय की इच्छा रखने वालों को स्मरण के साथ अपना व्यवहार भी सुधारना चाहिये।

४१. प्र०—गुरु किसे कहते है ?

उ०—आत्मस्वरूप को पहिचान उसके कल्याणार्थ यथार्थ मार्ग पहिचान कर उस राह पर चलते है और

दूसरों को चलाते है उन्हें गुरु कहते है।

४२. प्र०—जिस मार्ग से वे चलते हे वह आत्मकल्याण का सच्चा मार्ग है या झूंठा, यह कैसे समझ सकते है ?

उ०—जो महात्मा आत्मा के कल्याणार्थ सच्चे मार्ग से चलते हे यह उनके स्वभाव, प्रकृति, आचर, विचार पर से समझा जाता है।

४३. प्र०—आत्म कल्याण का सच्चा मार्ग कैसा होगा ?

उ०—भवसागर से पार पाने के लिये वीतराग प्रभु ने जिस मार्ग का प्रतिपादन किया है वही मार्ग सच्चा है।

४४. प्र०—उन मोक्ष मार्ग में जाने वाले महात्माओं के व्रत नियम कैसे है ?

उ०—अहिंसा आदि पांच महाव्रत, पांच सुमति और तीन गुप्ती का पालन करना बाह्य और अध्यन्तर दोनो प्रकार के परिग्रह, मोह, माया से दूर रहना यति के क्षमा आदि दस गुणों का धारण करना, विषय कषाय से विरक्त रहना और हमेशा अपने तथा दूसरो के हित होने का प्रयत्ना करना।

४५. प्र०—गुरु अपने शिष्य को तार कर मोक्ष तक ले जा सकते है ?

उ०—सदगुरु तो तिरने की कला सिखाते है और कठिनाईयां समझा देते है रस्ता वताते और शंका निवारण कर देते है तिरना यह प्रत्येक शिष्य का स्वत: का कार्य है। किसी भी समय गुरु शिष्य को मोक्ष पहुँचा देते है यह नही हो सकता।

४६. प्र०—हितोपदेश कर्ता गुरु की सेवा करने से क्या फल

प्राप्त होता है ?

उ०—सदगुरु अपूर्व समझ कराके अपनी अनादि की अज्ञान दशा टालने के निमित्त बनते है। इनके परिचय से अपनी भ्रांति टलती है। मान गलता है, मिथ्यात्व का नाश होता है और अंत मे आत्मकल्याण के सुख प्राप्त कर सकते है।

४७. प्र०—धर्म किसे कहते है ?

उ०—दुर्गति मे जाते हुए जीव को बचाले उसे धर्म कहते है।

४८. प्र०—ऐसे धर्म का लक्षण क्या है ?

उ०—अहिंसा।

४९. प्र०—धर्म की नीव क्या और स्वरूप क्या है ?

उ०—न्याय धर्म की नींव और सत्य धर्म क स्वरूप है।

५०. प्र०—धर्म का व्यवहारिक अर्थ क्या है ?

उ०—कर्तव्य (फर्ज)।

५१. प्र०—धर्म का अर्थ कर्तव्य कैसे हुआ ?

उ०—कर्तव्य अर्थात करने योग्य काम और करने यो॰ कार्य, यही मनुष्यमात्र का धर्म है।

५२. प्र०—करने योग्य कार्य सबका एक-सा या भिन्न होता है

उ०—अधिकार पर से प्रत्येक के कर्तव्य थोड़े बहुत अं॰ मे भिन्न-भिन्न होते है।

५३. प्र०—भिन्न-भिन्न कर्तव्यो के थोड़े बहुत दाखले देक समझाओ ?

उ०—गुरु के साथ शिष्य का, शिष्य के साथ गुरु क राजा के साथ प्रजा का और प्रजा के साथ रा॰

का इसी तरह पिता पुत्र का परस्पर, पति-पत्नी का परस्पर ऐसे ही मित्र भाई, उपकारी, शरणागत, अनुयायी अपने से हलकी जाति के प्राणी, अपने से उच्च जाति के प्राणी, इसी तरह एक दूसरे के भिन्न-भिन्न कर्तव्य होते है।

५४. प्र०—गुरु के साथ शिष्य का क्या कर्तव्य है ?
उ०—गुरु की भक्ति करना और उनके कथनानुसार व्यवहार करना।

५५. प्र०—शिष्य के साथ गुरु का क्या कर्तव्य है ?
उ०—शिष्य की योग्यतानुसार उसे ज्ञान सिखाना और हित राह दिखाना।

५६. प्र०—प्रजा के साथ राजा का क्या कर्तव्य है ?
उ०—प्रजा शांति में रहे ऐसे प्रयत्न करना, सदा सुलह शांति व्यप्त रहे इसलिये कायदे बनाकर न्याय पूर्वक प्रजा का पालन करना और जिस तरह प्रजा की आबादी बढ़े वैसा करना।

५७. प्र०—राजा के साथ प्रजा का क्या कर्तव्य है ?
उ०—ऐसे न्यायी निपुण नृप की आज्ञा सिरोधार्य कर उन की उन्नति चाहना और उनके हमेशा कृतज्ञ रहना।

५८. प्र०—पुत्र के साथ माता पिता का क्या कर्तव्य है ?
उ०—पुत्र को बालवय से ही शुभ संस्कार में लगाना, कुटेवो से वचित रखना विद्याभ्यास कराना और दुनिया में श्रेष्ठ पुरुषों की तरह जीवन व्यतीत कर सके ऐसे कुशल बनाने का प्रयत्न।

५९. प्र०—माता पिता के साथ पुत्र का क्या कर्तव्य

उ०—उनकी सेवा करना, उनके अत्यन्त उपकार को कभी न भूलना, अपनी योग्यता प्रकटित होने पर उनका भार उतार कर धर्म ध्यान और शांति मे जीवन व्यतीत करें ऐसी सहूलियत कर देना।

६०. प्र०—पति पत्नी का परस्पर क्या कर्तव्य है ?

उ०—परस्पर प्रेम रखना, एक दूसरे की भूल सुधारना, अन्योन्य हित चाहना, मान करना, मदद देना, आपति मे सहायक होना, दुःख में भाग लेना, स्वार्थ न साधना और भविष्य की प्रजा के हृदय मे उत्तम संस्कार के बीजारोपण करना।

६१. प्र०—मित्र के साथ क्या कर्तव्य है ?

उ०—उन से माया-कपट न करना, हितचिंतक बनना खराब राह पर जाता हो तो सत्तराह पर लगाना, दुःख मे दुखी होना और भेद भाव न रखना।

६२. प्र०—उपकारी के साथ क्या कर्त्तव्य है ?

उ०—उपकारी योग्य सत्कार करना और जहां तक बन सके उनके उपकार का बदला चुकाने की भरसक कोशिश करना।

६३. प्र०—शरणागत के साथ अपना क्या कर्तव्य है ?

उ०—सानुकुलतानुसार सहायता करना, उनकी याचना पर लक्ष्य देना परन्तु लापरवाह न होना।

६४. प्र०—अनुयायियों के साथ क्या कर्तव्य है ?

उ०—उन्हें सुधारना, सुखी करना, सत्तराह लगाना, और उनका जीवन सुख से व्यतीत हो ऐसा प्रयत्न करना।

६५. प्र०—अपने से उच्च पुरुषों के साथ अपना क्या कर्तव्य है ?

उ०—उन पर पूज्य भाव रखना, उनकी उच्चता योग्यता का अनुकरण करना और उनके उत्तम गुण देखकर प्रमुदित होना परन्तु ईर्षा न करना।

६६. प्र०—अपने से हलके प्राणियों के साथ अपना क्या कर्तव्य है ?

उ०—उनपर दया करना, उनके दोष और अपूर्णता देख आकुल न होने या घृणा न करते उन्हे दोष मुक्त करने का प्रयास करना और अपने से बने उतना उनका भला चाहना और करना।

८७. प्र०—गृहस्थाश्रम के कार्य करना धर्म कैसे कहा जाता है ?

उ०—धर्म के दो विभाग है। एक गृहस्थाश्रम का धर्म और दूसरा त्यागाश्रम का धर्म। गृहस्थ को गृहस्थाश्रम के नियमों का पालन करना ही उनका धर्म है।

६८. प्र०—धर्म का दूसरा अर्थ क्या है ?

उ०—स्वभाव।

६६. प्र०—धर्म का अर्थ स्वभाव कैसे किया ?

उ०—चेतन और अचेतन प्रत्येक पुद्गल के भिन्न भिन्न स्वभाव है वे उनके धर्म है।

७७. प्र०—सब पुद्गलों का सामान्य धर्म क्या है ?

उ०—मिलना, भिन्न होना, रूपान्तर होना, नये जूने होना, सूक्ष्म स्थूलपना धारण कर वर्ण, गध, रस, स्पर्श का पलटाना यही धर्म (स्वभाव) पुद्गल का है।

७१. प्र०—चेतन का धर्म क्या है ?

उ०—सदा स्वउपयोगी, सच्चिदानन्द स्वरूप मे लीन,

४. प्र०—इन पांचों के संक्षिप्त भेद कितने हैं ?
उ०—दो प्रत्यक्ष और परोक्ष ।

५. प्र०—परोक्ष ज्ञान कितने है ?
उ०—मतिज्ञान, श्रुतज्ञान ।

६. प्र०—मतिज्ञान का अर्थ क्या ?
उ०—इन्द्रियों तथा मन के द्वारा मति से जानना वह मतिज्ञान है ।

७. प्र०—मतिज्ञान का दुसरा नाम क्या है ?
उ०—आभिनिवोधिक ।

८. प्र०—मतिज्ञान के कितने भेद है ?
उ०—दो; श्रुत निश्चत, अश्रुत निश्चित ।

९. प्र०—श्रुत निश्चत के कितने भेद है ?
उ०—चार; अवग्रह, ईहा, अपाय, धारणा ।

१०. प्र०—अवग्रह अर्थात् क्या ?
उ०—किसी भी वस्तु की सामान्यता (अनिमितता) समझना ।

११. प्र०—अवग्रह के कितने भेद है ?
उ०—दो; व्यंजनावग्रह, अर्थावग्रह ।

१२. प्र०—व्यंजनावग्रह का अर्थ क्या है ?
उ०—किसी पदार्थ का इन्द्रियों के साथ सम्बन्ध होना।

१३. प्र०—अर्थावग्रह का क्या अर्थ है ?
उ०—वस्तु के भाव को सामान्य रीति से समझना ।

१४. प्र०—अर्थावग्रह के कितने भेद हैं ?
उ०—छः; पांच इन्द्री और छट्ठा मन, इन छः पदार्थों के अर्थ का अवग्रह अर्थात् वोध होता है ।

१५. प्र०—व्यंजनावग्रह के कितने भेद है ?

ऊ०—चार; श्रुत, घ्राण, रस, स्पर्श, ये चार (इन्द्रियां चाक्षु और मन इन दो का व्यंजनावग्रह नहीं होता)।

१६. प्र०—ईहा का अर्थ क्या है ?

उ०—सामान्य रीति से जानी हुई वस्तु पर विशेष विचार करना।

१७. प्र०—अवाय का अर्थ क्या है ?

उ०—विचार किये पश्चात् उसका निश्चय करना

१८. प्र०—धारण का अर्थ क्या है ?

उ०—उस निश्चित की हुई को धारण करना।

१९. प्र०—ईहा, अवाय, और धारण के कितने भेद है ?

उ०—प्रत्येक के छः-छः भेद, पांच इन्द्री और छट्ठा मन, तीनों के मिलकर अठारह भेद होते है।

२०. प्र०—श्रुत निमित के कुल कितने भेद हुए ?

उ०—अर्थावग्रह के छः, व्यंजनावग्रह के चार, ईहा, अवाय, धारणा, के छः-छः सब २८ भेद हुए।

२१. प्र०—श्रुत निश्चित का अर्थ क्या है ?

उ०—श्रुत अर्थात् सुनकर उसके अर्थ का विचार करना।

२२. प्र०—अश्रुत निश्चित अर्थात् क्या ?

उ०—स्वतः की बुद्धी फैलना।

२३. प्र०—अश्रुत निश्चत के कितने भेद है ?

उ०—उत्पातिया, विनिया, कम्मिया, परणामिया ये चार प्रकार की बुद्धि है।

२४. प्र०—औतपात की का अर्थ क्या ?

उ०—अपने स्वतः की सहज ही मे बुद्धि उत्पन्न हो जाय (बीरबल बादशाह की तरह)।

२५ प्र०—वैनयिकी का अर्थ क्या ?

उ०—गुरु प्रभृति का विनय करते बुद्धि प्राप्त हो।

२६. प्र०—कार्मिकी अर्थात् क्या ?

उ०—अभ्यास करते-करते बुद्धि उत्पन्न हो।

२७. प्र०—परिणामिकी अर्थात् क्या ?

उ०—ज्यों-ज्यों वय की वृद्धि हो बुद्धि बढ़ती जाय।

२८. प्र०—पूर्व भव का जिससे स्मरण हो जाय वह कौनसा ज्ञान है ?

उ०—जाति स्मरण ज्ञान।

२९. प्र०—यह ज्ञान पांच ज्ञान में किस ज्ञान का भेद है ?

उ०—मति ज्ञान का।

३०. प्र०—श्रुत ज्ञान का अर्थ क्या ?

उ०—शब्द ज्ञान अथवा शास्त्र ज्ञान।

३१. प्र०—यह ज्ञान मतिज्ञान सिवाय किसी को होता है ?

उ०—नहीं; मतिज्ञान होता है, उसे श्रुय ज्ञान होता है और श्रुत ज्ञान हो उसे मतिज्ञान, श्रुत बिना मतिज्ञान नहीं हो सकता और मतिज्ञान बिना श्रुतज्ञान नहीं हो सकता।

३२. प्र०—श्रुतज्ञान कितने तरह का होता है ?

उ०—दो दो भाग करें ऐसे सात जाति का श्रुत ज्ञान होता है। (सब मिलकर १४ जाति का)।

३३. प्र०—इन चौदह जाति के नाम क्या है ?

उ०—अक्षरश्रुत, अनक्षरश्रुत, संज्ञीश्रुत, असंज्ञीश्रुत, सम्यक्श्रुत, मिथ्याश्रुत, सादिश्रुत, अनादिश्रुत, सपर्यवसितश्रुत, अपर्यवसितश्रुत, गमिकश्रुत, अगामिकश्रुत, अंग, प्रविष्ठ और अंग बाहिर ये

१४ भेद ।

३४. प्र०—अक्षरश्रुत के कितने भेद हैं ?

उ०—तीन; संज्ञाक्षर, व्यंजनाक्षर, लब्ध्यक्षर ।

३५. प्र०—संज्ञाक्षर अर्थात् ?

उ०—लिपि से या संकेत से समझाना ।

३६. प्र०—व्यंजनाक्षर अर्थात् ?

उ०—उच्चारण करके समझाना ।

३७. प्र०—लब्ध्यक्षर अर्थात् ?

उ०—लब्धि रूप अक्षर (थोड़े अक्षरों के श्रवण से अधिक शास्त्रों का ज्ञान हो जाय) ।

३८. प्र०—अनक्षर श्रुत अर्थात् क्या ?

उ०—छींक, बगासी, घंटा, झालर, ढोल प्रभृति के शब्द ।

३९. प्र०—संज्ञीश्रुत का अर्थ क्या ?

उ०—मन वाले प्राणी को शब्द सुनकर ज्ञान हो ।

४०. प्र०—असंज्ञीश्रुत अर्थात् क्या ?

उ०—बिना मन के सम्मुर्छिम प्राणी को इन्द्रियों के आधार से ज्ञान हो ।

४१. प्र०—सम्यक्श्रुत अर्थात् क्या ?

उ०—समदृष्टि जीव को शास्त्र का सम्यक् ज्ञान हो ।

४२. प्र०—मिथ्याश्रुत अर्थात् क्या ?

उ०—मिथ्या दृष्टि जीव को शास्त्र की उलटी [illegible] (मिथ्या) ज्ञान हो ।

४३. प्र०—सादि और सपर्यवसित श्रुत अर्थात् क्या ?

उ०—द्रव्य से एक पुरुष, क्षेत्र से भरत, और ऐरावत, काल से, उत्सर्पिणी अवसर्पिणी तक और

ज्ञान है वह सादि सपर्यवसित श्रुत ज्ञान है।

४४. प्र०—सादि सपर्यवसित श्रुत का (अर्थ क्या ?) शब्दार्थ क्या ?

उ०—आदि (आरम्भ) सहित अन्त तक।

४५. प्र०—अनादि अपर्यवसित श्रुत का अर्थ क्या ?

उ०—जिस का आदि और अन्त नहीं ऐसा श्रुत, जो द्रव्य से, कई पुरुष, क्षेत्र से महाविदेह क्षेत्र, काल से महाविदेह क्षेत्र मे प्रचलित काल तक।

४६ प्र०—गमिक श्रुत प्रर्थात् क्या ?

उ०—शास्त्रों में समान, और अनुक्रम वाले अधिकार हो।

४७. प्र०—अगमिक श्रुत का अर्थ क्या ?

उ०—जिसके अधिकार भिन्न-भिन्न और असमान हों।

४८. प्र०—अंग प्रविष्ठ श्रुत अर्थात् क्या ?

उ०—जो शास्त्र अंग भूत हो।

४९. प्र० वे अंग भूत शास्त्र कितने और कौन से हैं ?

उ०—बारह, आचारंग, सुयगडांग, ठाणांग, समवायांग, विविहा पन्नति (भगवति) ज्ञाता, उपासक, दशांग, अंतगढ़, दशांग, अनुत्तरो व वाई, प्रश्न व्याकरण, विपाक और दृष्टिवाद।

५०. प्र०—अंग बाहिर अथांत् क्या ?

उ०—अग से सम्बधित उपांग।

५१. प्र०—वे अंग बाहिर के भेद कितने और कौन से है ?

उ०—दो; आवश्यक और आवश्यक से व्यतिरिक्त।

५२. प्र०—आवश्यक के कितने अध्ययन है और कौन से है ?

उ०—छः; सामायिक, चऊवीसंथो, वंदना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग, प्रत्याख्यान।

५३. प्र०—आवश्यक से व्यतिरिक्त के कितने भेद है और कौन से हैं ?

उ०—कालिक सूत्र और उत्कालिक सूत्र ।

५४. प्र०—कालिक सूत्र का अर्थ क्या ? और कितने है ?

उ०—अमुक समय ही पढ़ना चाहिये, वे कालिक सूत्र तीस हैं ।

५५. प्र०—उत्कालिक सूत्र अर्थात् क्या ? और वे कितने है ?

उ०—असज्भाय और अकाल सिवाय चाहे जिस वक्त पढ़ सके वे उन्तीस है ।

पाठ–२६

प्रत्यक्ष ज्ञान

१. प्र०—प्रत्यक्ष ज्ञान के भेद कितने और कौन से है ?

उ०—दो इन्द्रिय प्रत्यक्ष और नो इद्रिय प्रत्यक्ष ।

२. प्र०—इद्रिय प्रत्यक्ष के कितने भेद है ?

उ०—पांच; इंद्रियों के पांच ।

३. प्र०—नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष के कितने भेद है ?

उ०—तीन; अवधिज्ञान मन पर्यवज्ञान और केवलज्ञान ।

४. प्र०—अवधिज्ञान अर्थात् क्या ?

उ०—इन्द्रियों की सहायता न लेकर परभारे अमु सीमा तक आत्मा को मन के अवधान से उत्पन्न हो वह अवधि ज्ञान है ।

५. प्र०—अवधिज्ञान के कितने भेद हैं ?
उ०—दो; भव प्रत्ययिक और क्षयोपशम प्रत्ययिक।

६. प्र०—भव प्रत्ययिक अर्थात् क्या ?
उ०—देवता और नारकी के भव में अवधिज्ञान होता है वह ।

७. प्र०—क्षयोपशम प्रत्ययिक अर्थात् क्या ?
उ०—अवधिज्ञान को आवरण करने वाले कर्मों का विशुद्ध अध्यवसाय से क्षयोपशम हो जाय फिर मनुष्य और तिर्यंच को जो ज्ञान प्रकटे वह क्षयोपशम प्रत्ययिक अवधिज्ञान है ।

८. प्र०—क्षयोपशम प्रत्ययिक के कितने भेद है और कौन से ?
उ०—अनुगामी, अनानुगामी, वर्धमान, हायमान, प्रतिपाती और अप्रतिपाती ।

९. प्र०—अनुगामी का अर्थ क्या ?
उ०—नैत्र की तरह साथ ही रहे ।

१०. प्र०—अनानुगामी अर्थात् क्या ?
उ०—जहां उत्पन्न हुआ हो उसी स्थान पर देख सके अन्य स्थान पर जाने से न देख सके ।

११. प्र०—वर्धमान का अर्थ क्या ?
उ०—उत्पन्न होने पश्चात् विशुद्ध अध्यवसाय का संयोग होने से उसकी वृद्धि हो ।

१२. प्र०—हायमान का अर्थ क्या ?
उ०—उत्पन्न होने पश्चात् अशुभ विचार आने से घटने लगे ।

१३. प्र०—प्रतिपाती अर्थात् क्या ?
उ०—उत्पन्न होने पश्चात् जल्द ही वह ज्ञान लुप्त हो जाय।

१४. प्र०—अप्रतिपाती का अर्थ क्या ?

उ०—उत्पन्न होने पश्चात वह ज्ञान स्थिर रहे ।

१५. प्र०—अवधिज्ञानी द्रव्य से कितना देखता है ?

उ०—जघन्य द्रव्य का अनन्त वा भाग देख सकता है और उत्कृष्ट सब रूपी द्रव्य देख सकता है ।

१६. प्र०—अवधिज्ञानी क्षेत्री से कितना देख सकता है ?

उ०—जघन्य, अंगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट सब लोक और अलोक मे लोक के जितने असंख्य खन्ड है नहीं होवे तो देख सकता है ।

१७. प्र०—काल से अवधिज्ञानी कितना जान सकता है ?

उ०—जघन्य आविलिका के असंख्यातवें भाग जितने काल को जान सकता है और उत्कृष्ट अतीत अनागत, असंख्याति अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी को कालचक्र को जान सकता है ।

१८. प्र०—भाव से अवधिज्ञानी कितना जान सकता है ?

उ०—जघन्य उत्कृष्ट अंनत भाव जान सकता है ।

१९. प्र०—यथार्थ ज्ञान का नाम क्या है ?

उ०—सम्यकज्ञान ।

२०. प्र०—विपरीतज्ञान का नाम क्या है ?

उ०—मिथ्याज्ञान (अज्ञान) ।

२१. प्र०—सम्यकज्ञान वाले को दृष्टि कितनी होती है ?

उ०—एक सम्यक दृष्टि ।

२२. प्र०—मिथ्याज्ञान वाले को दृष्टि कौनसी होती है ?

उ०—मिथ्या दृष्टि ।

२३. प्र०—मिथ्यादृष्टि को मतिज्ञान प्राप्त हो तो उसे क्या कहते है ?

उ०—मितअज्ञान ।

२४. प्र०—मिथ्यादृष्टि को श्रुतज्ञान हो तो वह कैसा ज्ञान समझा जाता है ?

उ०—श्रुतअज्ञान ।

२५. प्र०—मिथ्यादृष्टि को अवधिज्ञान हो वह कैसा समझा जाता है ?

उ०—विभंगज्ञान ।

२६. प्र०—मनःपर्यवज्ञान अर्थात् क्या ?

उ०—संज्ञी पंचेद्रिय जीवों के मन को सब तरह से जान लेना ।

२७. प्र०—मन को जान लेना अर्थात् क्या ?

उ०—दूसरे मनुष्य के दिल में रही हुई सब बात समझ लेना ।

२८. प्र०—मनःपर्यवज्ञान के कितने भेद है ? और कौन से ?

उ०—दो; ऋजुमति विपुलमति ।

२९. प्र०—ऋजुमति अर्थात् क्या ?

उ०—सामान्य रीति से ग्रहण करने की मति ।

३०. प्र०—विपुलमति का अर्थ क्या ?

उ०—विशेष रीति से ग्रहण करने की मति ।

३१. प्र०—ऋजुमति कितना देखता है ?

उ०—अनंत, प्रदेशी, अनंत मन के भाव जनता है, देखता है ।

३२. प्र०—विपुल मति कितना देखता है ?

उ०—वे भी उपरोक्त भाव देखते हैं परन्तु अधिक विशुद्धता से ।

३३. प्र०—मनःपर्यवज्ञान किसको उत्पन्न होता है ?

उ०—समदृष्टि आत्मार्थी साधु मुनिराज को।

३४. प्र०—अवधिज्ञान और मनः पर्यवज्ञान प्रत्यक्षज्ञान किस तरह है ?

उ०—इन्द्रियों की बिना सहायत के मन से आत्मा को प्रत्यक्ष दिखाते है इसलिये प्रत्यक्ष है।

३५ प्र०—मति और श्रुत ज्ञान परोक्ष किस तरह है ?

उ०—इन्द्रियों की सहायता सिवाय मन नही जान सकता इसलिये आत्मा की अपेक्षा है।

३६. प्र०—छदमस्थ को उत्कृष्ट कितने ज्ञान प्राप्त होते है ?

उ०—चार; मति, श्रुत, अवधि, और मनःपर्यवज्ञान।

३७. प्र०—सर्वश्रेष्ठ परमज्ञान कौनसा है ?

उ०—केवल्यज्ञान।

३८. प्र०—केवल्य अर्थात् क्या ?

उ०—एक, शुद्ध, सम्पूर्ण, प्रत्यक्ष, असाधारण, अनंत, अस्खलित, वह केवल्यज्ञान है।

३९. प्र०—यह ज्ञान उत्पन्न होता है तब क्या दिखाता है ?

उ०—रूप अरूपी, द्रव्य, क्षेत्र से लोकालोक, काल से भूत, भविष्य, वर्तमान भाव से सर्व गुण पर्याय हस्तामल कवत् देखे जाते है।

४०. प्र०—इस ज्ञान के भेद कितने है ?

उ०—यह ज्ञान अखण्ड आत्म प्रकाश के समान होने से इसके भेद नहीं है।

४१. प्र०—केवल्य के सिवाय चार ज्ञान किस भाव से आते है

उ०—क्षयोपशम भाव से।

४२. प्र०—केवल्यज्ञान किस भाव से आते है ?

उ०—क्षायकभाव से।

पाठ—३१

सम्यक दर्शन

१. प्र०—मोक्ष प्राप्त करने का दुसरा साधन कौन सा है ?
   उ०—सम्यक दर्शन ।

२. प्र०—दर्शन के कितने भेद है और कौन से है ?
   उ०—आठ; चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, केवल्य-दर्शन, सम्यकदर्शन, मिथ्यादर्शन, सममिथ्यादर्शन, स्वप्न दर्शन ।

३. प्र०—आठ दर्शन, कितने अर्थ मे शामिल है ?
   उ०—तीन अर्थ मे; (१) दृश्य मे, (२) सम्यकत्व मे, (श्रद्धा) (३) सामान्यज्ञान मे ।

४. प्र०—मतिश्रुत ज्ञान वाले को कौनसा दर्शन होता है ?
   उ०—चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन ।

५. प्र०—अवधिज्ञानी को कौनसा दर्शन होता है ?
   उ०—अवधिदर्शन ।

६. प्र०—मनः पर्यवज्ञानी को कौन सा दर्शन होता है ?
   उ०—चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन ।

७. प्र०—केवल्यज्ञानी को कौनसा दर्शन होता है ?
   उ०—केवल्यदर्शन ।

८. प्र०—चक्षु दर्शन का अर्थ क्या ?
   उ०—चक्षु से देखना ।

९. प्र०—अचक्षु दर्शन का अर्थ क्या ?
   उ०—चक्षु सिवाय अन्य इन्द्रियो तथा मन से जो सामान्य-ज्ञान होता है वह अचक्षु दर्शन ।

१०. प्र०—अवधिदर्शन का अर्थ क्या ?
उ०—इन्द्रियों को बिना ही सहायता के मन में अमुक सीमा तक देखने का जो सामान्यज्ञान प्रकट हो वह अवधि दर्शन है।

११. प्र०—केवल्य दर्शन का अर्थ क्या ?
उ०—सम्पूर्ण सामान्य ज्ञान।

१२. प्र०—मनः पर्यवज्ञान है और मनः पर्यव दर्शन क्यों नही ?
उ०—मनः पर्यवज्ञानी को सामान्य रीति से देखना नहीं पडता अतएव दर्शन नहीं है।

१३. प्र०—सम्यक दर्शन अर्थात् क्या ?
उ०—यथार्थ देखना।

१४. प्र०—मिथ्या दर्शन अर्थात् क्या ?
उ०—हो उससे प्रतिकूल देखना।

१५. प्र०—सममिथ्या दर्शन का अर्थ क्या ?
उ०—कुछ सत्य और कुछ असत्य देखना।

१६. प्र०—स्वप्न दर्शन अर्थात् क्या ?
उ०—स्वप्न मे जो जो देखा जाता है, उसे अचक्षु दर्शन भी कहते है।

१७. प्र०—देखना इस अर्थ में कितने दर्शन होते है ?
उ०—एक; चक्षु दर्शन।

१८. प्र०—श्रद्धा इस अर्थ मे कितने दर्शन होते हैं ?
उ०—तीन; सम्यक दर्शन, मिथ्या दर्शन, सममिथ्या दर्शन।

१९. प्र०—सामान्यज्ञान के अर्थ वाले कितने दर्शन है ?
उ०—तीन; अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन और केवल्य-दर्शन।

२०. प्र०—सम्यकदर्शन हो उसे कौनसा ज्ञान ?

उ०—सयम्यक्ज्ञान ।

२१ प्र०—मिथ्यादर्शन हो उसे कौनसा ज्ञान होता है ?

उ०—मिथ्यादर्शन ।

२२. प्र०—सममिथ्या दर्शन हो उसे कौनसा ज्ञान होता है ?

उ०—सममिथ्याज्ञान ।

२३. प्र०—सम्यक्ज्ञानी हो वह कौन से देव, गुरु, धर्म को मानता है ?

उ०—राग, द्वेष रहित, सर्व कर्म से मुक्त, केवल्यज्ञानी, ऐसे पवित्र स्वरूपी को देव (प्रभु) मानता है और उन्ही वीतरागी देव के फरमाये हुए मार्ग पर ममत्व रहित विचरण करने वाले को गुरु और जिस राह से परम शांति मिले वह वीतराग के बताये हुए परम दयामय मार्ग को धर्म मानता है।

२४. प्र०—धर्म की नीव क्या है ?

उ०—सम्यक्त्व ।

२५. प्र०—सम्यक्त्व न हो तो जीव मोक्ष पा सकता है या नही ?

उ०—नही; बिना सम्यक्त्व के जीव मोक्ष नही पा सकता ।

२६. प्र०—सम्यक्त्व का संक्षिप्त अर्थ क्या ?

उ०—ज्ञान और सच्ची श्रद्धा।

२७. प्र०—सम्यक्त्व की पहिचान के कितने सकेत है, और कौन-कौन से है ?

उ०—६०, तीन शुद्धि, तीन लिंग, पांच लक्षण, पांच दूषण (अतिचार) से रहित, पाच भूषण चार सर्द-

हना, छः स्थान, आठ आचार, आठ प्रभावक, दस रूचि, दस विनय ।

२८. प्र०—तीन शुद्धि कौनसी ?

उ०—मन, वचन, और काय शुद्धि ।

२९. प्र०—तीन लिग कौन से है ?

उ०—(१) आगम श्रवण की रूची (२) धर्म कार्य करने मे प्रेम (३) गुरु भक्ति ।

३०. प्र०—पांच लक्षण कौन से ?

उ०—सम, (सम स्थिति) समवेग (मोक्षाभिलाषी) निर्वेद, (विषय पर अरूचि) अनुकम्पा, (दुःखी पर करूणा), आस्था (विश्वास) ।

३१. प्र०—पांच दूषण कौन से ?

उ०—शंका, कांक्षा, वितिगच्छा (फल का सदेह) पाखंड-प्रशंशा, शाखंड का परिचय ।

३२. प्र०—भूषण पांच कौन से ?

उ०—स्वधर्म में अटल आगम शैली में कुशल सत्यानु-प्रेक्षी, तीर्थ की सेवा करने वाला, धर्म का उद्धारक ।

३३. प्र०—छः स्थान कौन से ?

उ०—जीव का अस्तित्व है, जीव शाश्वत है, पुन्य पाप का कर्त्ता है, भोक्ता है, मुक्ति है, उसका उपाय है, इन छः का स्वीकार करने वाला ।

३४. प्र०—चार सर्दहना कौन सी ?

उ०—परमार्थ का परिचय, तत्वज्ञानी की

भृष्ट स्वदर्शनो का त्याग, मि...

३५. प्र०—आठ आचार कौन से ?

उ०—चारित्र ।

२. प्र०—चारित्र अर्थात् क्या ?

उ०—आत्म कल्याण करने की शुद्धि क्रिया (व्यवहार) अर्थात् दुःख मुक्त होने का व्यवहार ।

३. प्र०—उसके कितने भेद है ?

उ०—दो देशविरति और सर्व विरति (व्रत) ।

४. प्र०—देशविरति के कितने व्रत है ?

उ०—बारह; पांच अणुव्रत, तीन गुण व्रप, चार शिक्षाव्रत ।

५. प्र०—अणुव्रत अर्थात् क्या ?

उ०—साधु के व्रत की अपेक्षा छोटे (मर्यादा वाले) ।

६. प्र०—गुणव्रत अर्थात् क्या ?

उ०—अणुव्रत को गुण (मदद) करने वाले ।

७. प्र०—शिक्षाव्रत अर्थात् क्या ?

उ०—धर्म शिक्षा के भवन समान या शिक्षा अर्थात् अणुव्रत रूप मंदिर के शिखर समान ।

८. प्र०—देश विरति का प्रचलित नाम क्या है ?

उ०—श्रावक या श्रमणोपासक ।

९. प्र०—इसके सिवाय उन्हे और क्या पालना आवश्यक है ?

उ०—पांच सुमति और तीन गुप्ति ।

१०. प्र०—पांच सुमति कौनसी ? और उनका अर्थ क्या ?

उ०—इर्या सुमति अर्थात् यत्न पूर्वक चलना, भापा सुमिति अर्थात् यत्ना से बोलना, एषणा सुमति, अर्थात् यत्ना से वहिरना (अन्न पानी लेना) आयाण भंड मत निमेवणीय सुमति अर्थात् अपने उपकरण प्रभृति यत्ना से लेना, रखना, उच्चार

आदि परिठावणिया सुमति अर्थात् डाल देने फेंक देने की की वस्तुएं यत्न पूर्वक डाल देना, फेंक देना ।

११. प्र०—तीन गुप्ति कौनसी ? और उनका अर्थ क्या ?

उ०—मन, बचन और काया से पाप न करना और धर्म मे स्थिर करना ।

१२. प्र०—श्रावक के गुण कितने और कौन से है ?

उ०—इकवीस; १ अक्षुद्र, २ रूपवंत, ३ सौम्य प्रकृति वाला, ४ लोक प्रिय, ५ अक्रुर, ६ पापभीरू, ७ शाठ्य रहित, ८ चतुर, ९ लज्जावत, १० दयालु, ११ मध्यस्थ परिणामी, १२ सुदृष्टि वाला, १३ गुणानुरागी, १४ शुभ पक्ष धारण करने वाला, १५ दीर्घ दृष्टिवन्त, १६ विशेषज्ञ, १७ अल्परांभी, १८ विवित, १९ कृतज्ञ, २० परहितकारी, २१ लब्ध लक्षी ।

१३. प्र०—उनके गुण कितने और कौन से हैं ?

उ०—सत्तावीस; १ दया, २ असत्य त्याग, ३ अस्तेय, ४ ब्रह्मचर्य, ५ अपरिग्रह, ६ अक्रधो, ७ निर्मान, ८ निष्कपट, ९ निर्लोभ, १० सहन शीलता, ११ निष्पक्षपात, १२ परोपकार, १३ तपश्चर्या, १४ प्रशांतता- १५ जितेन्द्रियता, १६ परममुमुक्षुप्रति, १७ प्रसन्न दृष्टि, १८ सोम्य, १९ नम्रता, २० गुरु भक्ति, २१ विवेक, २२ वैराग्य स्क्तता, २३ सत्यानु प्रेक्ष, २४ ज्ञानाभिलाष, २५ योग (नम, बचन और काया को नियम २६ सयम मे रति, २७ विशुद्ध आ

तने वाला।

६. प्र०—त्रस किसे कहते हैं ?

उ०—जिन्हें त्रस हो (जो स्वयं चल फिर सक्ते है)।

७. प्र०—स्थावर किसे कहते है ?

उ०—स्थिर रहते है (जो स्वयं चल नही सकते)।

८. प्र०—स्थावर के मुख्य भेद कितने और कौनसे है ?

उ०—दो; सूक्ष्म और बादर।

९. प्र०—सूक्ष्म कौनसे और कितने है ?

उ०—जो चर्म चक्षु से नही देखे जा सकते वे समस्त लोक मे भरे है और अनंत है।

१०. प्र०—बादर जीव कौनसे है ?

उ०—चर्म चक्षु से जिनके शरीर का समूह देखा जाता है।

११. प्र०—सूक्ष्म और बादर इन दोनो के कितने भेद है ?

उ०—बाईस; पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु ये चार सूक्ष्म और चार बादर दोनों मिलाकर ८ हुए और वनस्पति के तीन भेद, सूक्ष्म, प्रत्येक, साधारण तीन मिल कर ११ जिनके अपर्याप्ता और पर्याप्ता मिलकर २२ भेद हुए।

१२. प्र०—प्रत्येक और साधारण किसे कहते कहते है ?

उ०—एक शरीर मे एक जीव होते है वे प्रत्येक और एक शरीर मे अनंत जीव हों वे साधारण कहलाते है (कंद मूलादि)।

१३. प्र०—पर्याप्ता और अपर्याप्ता किसे कहते है ?

उ०—प्रत्येक जीव जब आकर जन्म लेता है जितनी अर्याप्ती बांधनी होती है, न वहां तक अपर्याप्ती गिना जाता है

बांध लेने पर पर्याप्ता गिना जाता है ।

१४. प्र०—पर्याप्ती कितनी और कौनसी है ?

उ०—छः; आहार, शरीर, इन्द्रि, श्वासोवास, भाषा और मन ।

१५. प्र०—स्थावर जीव के कितनी इन्द्रियां होतो है ?

उ०—काया; एक ही ।

१६. प्र०—त्रस के कितने भेद है ?

उ०—चार; बेइद्रि, तेइंद्रि, चौरेन्द्रि ये तीन विकलेन्द्रि और चौथा पंचेन्द्रि ।

१७. प्र०—विकलेन्द्रि के कितने भेद है ?

उ०—६; वेइन्द्रि, तेइन्द्रि, चौरेन्द्रि ये तीन जिनके पर्याप्ते और अपर्याप्ते मिल कर ६ भेद हुये ।

१८. प्र०—तिर्यंच के भेद कितने और कौन से है ?

उ०—मुख्य दो; संज्ञ और असंज्ञी ।

१९. प्र०—सज्ञी असंज्ञी किसे कहते है ?

उ०—गर्भज (मन वाले) संज्ञी और समुर्छम (विनमान के) असज्ञी ।

२०. प्र०—असज्ञी और संज्ञी तिर्यंच के कितने भेद है ?

उ०—बीस; (१) जलचर (जल मे रहने वाले) (२) स्थलचर (जमीन पर रहने वाले अश्रादि) (३) उरपर (सर्पादिक छाती से चलने वाले) (४) भुजपर (भुजा से चलने वाले) (५) खेचर (आकाश मे चलने वाले) ये पांच संज्ञी और पांच असंज्ञी इन दसों के पर्याप्ता और अपर्याप्ता मिलकर २० भेद हुए ।

२१. प्र०—मनुष्य के कितने भेद है ?

उ०—३०३, १५ कर्म भूमि, ३० अकर्म भूमि, ५६ अंतर द्वीपा इन एक सौ के प्रयाप्ते और अपर्याप्ता मिल-कर २०२ गर्भज, १०१ समुर्च्छिम अपर्याप्ता मिल-कर ३०३ भेद हुए।

२२. प्र०—समुर्च्छिम के पर्याप्ते क्यों नहीं ?

उ०—ये जीव पर्याप्ते में न आकर अपर्याप्ते में ही मृत्यु हो जाते हैं इसीलिये उनके पर्याप्ते नहीं गिने।

२३. प्र०— गर्भज और समुर्च्छिम में क्या भेद है ?

उ०—स्त्री पुरुष के संयोग से जो उत्पन्न होते है वे गर्भज है, और इस संयोग से न उत्पन्न हो कर जो मनुष्यों के उच्चारादि मल मुत्र में उत्पन्न होते है वे मनुष्य समुर्च्छिम गिने जाते है।

२४. प्र०—समुर्च्छिम मनुष्य अपने को नजर आते हैं या नहीं ?

उ०—नही; वे इतने सूक्ष्म है कि चर्म चक्षुओं से नहीं देखे जाते है।

२५. प्र०—तिर्यंच के मल में कौनसे जीव उत्पन्न होते है ?

उ०—उसमे पचेन्द्रि जीव नहीं उपजते परन्तु वे इन्द्रिया दिक जीव उत्पन्न होते है।

२६. प्र०—मिट्टी तथा पानी के योग से कौन से जीव उत्पन्न होते है ?

उ०—वनस्पति के तथा बेइन्द्रि से पंचेन्द्रि तक के जीव उत्पन्न होते है परन्तु वे समुर्च्छिम गिने जाते है।

२७. प्र०—कर्म भूमि किसे कहते है ?

उ०—काम धंधे से निर्वाह करने वाले प्रदेश।

२८. प्र०—अकर्म भूमि किसे कहते है ?

उ०— काम धंधे विना सिर्फ इच्छा बल से निर्वाह करने

वाले प्रदेश ।

२९ प्र०—कर्म भूमि के पंद्रह क्षेत्र कौन से है ?

उ०—पांच भरत, पांच इभरत, पांच महाविदेह ।

३०. प्र०—तीस अकर्म भूमि के क्षेत्र कौन से है ?

उ०—पांच हेमवय, पांच एरणवय, पांच हरिवास, पांच रम्यकवास, पांच देवकुरु, पांच उत्तर कुरु ।

३१. प्र०—देवता के भेद संक्षेप में कितने और विशेष मे कितने ?

उ०—संक्षेप मे १० और उत्कृष्ट १९८ ।

३२. प्र०—जघन्य और उत्कृष्ट कौन-कौन से हैं ?

उ०—(१) भवन पति १०, (२) परमाधामी १५, (३) वाणव्यंतर १६, (४) जम्भिका १०, (५) ज्योतिषी १०, (६) किल्वीसी तीन (७) लोकांतिक ९, (८) देवलोक १२, (९) ग्रेवेकी ९, (१०) अनुत्तर वैमानिक पांच सब मिलकर ९९ जाति के देव के पर्याप्ता और अपर्याप्ते मिलकर १९८ ।

३३. प्र०—सब जीव मूल स्वरूप में समान है या छोटे बड़े है ?

उ०—मूल स्वरूप में समान है परन्तु कर्म रूपी उपाधि से बड़े छोटे गिने जाते है ।

३४. प्र०—जीव का कोई घात करना चाहे तो हो सकता है या नहीं ?

उ०—नही; जीव अमर है । किसी दिन नहीं मरता है ।

३५. प्र०—तब मर जाना क्या है ?

उ०—जीव का शरीर से पृथक होना ।

३६. प्र०—जीव नहीं मरता तो पाप कैसे लगता है ?

उ०—जीव की स्वीकृति की हुइ प्यारी से प्यारी

वस्तु को भिन्न कर दुःख उत्पन्न करने से पाप लगता है ।

३७. प्र०—सब जीव समान है फिर एकन्द्रि को मारने से कम और मनुष्य को मारने से अधिक पाप क्यों लगता है ?

उ०—जो जीव अधिक उत्क्रांति पाया हो, जगत में विशेष उपयोगी हो जिसके पास अधिक आत्मिक ऋद्धि हो उसे मारने से उसकी ऋदि का वियोग कराने से अधिक पाप लगता है और जो जीव कम ऋदि-वाल, कम उपयोगी, और क़म उत्क्रांत होता है उस तरफ से कम पाप लगता है कम अधिक के प्रमाण से कम अधिक पाप लगता है ।

३८. प्र०—जीव का उत्पन्न कर्त्ता कौन है ?

उ०—कर्त्ता कोई नहीं, अनादि है ।

३९. प्र०—उत्पन्न किये बिना उनकी प्राप्ति कैसे होती है ?

उ०—किसी भी समय कोई वस्तु उत्पन्न हुई तो उसका विनाश भी किसी दिन होता है, परन्तु इस जीव का नाश नही होता यह अविनाशी है, इसलिये इसका उत्पन्न करने वाला कोई नहीं ऐसा सिद्ध होता है ।

४०. प्र०—जिस तरह जड़ पदार्थ तूटता है फूटता है बिखरता है और फिर एकत्र हो जाता है उसी तरह इस जीव की स्थिति होती है या नहीं ।

४१. प्र०—जीव को कैसे पहचान सकते है ?

उ०—जो जीव अधिक वढ़ती न पाये है वे जीव पृथ्वी पानी, अग्नि और वायु के शास्त्र वेत्ताओं के कथन

से मानना बाकी वनस्पति से सब जीव चलने फिरने सुख दुःख की इच्छाएं और संज्ञाओ से सहजही में पहचाने जाते है।

४२. प्र०—जीवों की पहिचान कर उनके साथ कैसा व्यवहार रखना चाहिए ?

उ०—अपने से हलकी जाति के सब जीवों पर दया रखना तथा अपने सामान के प्राणियों के साथ समान भाव रखना, और अधिक शक्ति वाले बड़े उपकारी पुरुषों के साथ पूज्य भाव रखना।

४३. प्र०—अनन्त जीवों का स्वरूप किस रिति से जानते है ?

उ०—अपना जीव है वैसे ही बाकी सब जीव है इसलिये अपने जीव का स्वरूप बराबर समझ लेने से बाकी के सब जीवों का स्वरूप समझ आ जाता है।

४४. प्र०—सब जीवों के उत्पन्न होने की जीव योनि कितनी है ?

उ०—चौरासी लाख; ७ लाख पृथ्वी काय, ७ लाख अपकाय, ७ लाख तेऊकाय, ७ लाख वायुकाय, १० लाख प्रत्येक वनस्पति काय, १४ लाख साधारण वनस्पति काय, २ लाख बेंद्री, २ लाख तेंद्री, २ लाख चौरेंद्री, ४ लाख नारकी. ४ लाख देवता, ४ लाख तिर्यंच, १४ लाख मनुष्य।

४५. प्र०—जीव योनि किसे कहते है ?

उ०—जीवों के उत्पन्न होने के भिन्न-भिन्न स्थान को।

४६ प्र०—जीव के समूह को क्या कहते है ?

उ०—जीवास्ति काय।

४७. प्र०—जीव का दूसरा नाम क्या है ?

उ०—प्राण, भूत, सत्व, विश्नु, आत्मा, प्रभृ

नामों से पहिचाना जाता है।

४८. प्र०—जीव कौन से भव से मोक्ष में जा सकता है ?
उ०—मनुष्य भव से।

४९. प्र०—कोई जीवित मनुष्य को दाग दे तो जले या नहीं ?
उ०—जीव दग्ध नहीं हो सकता, सिर्फ शरीर दग्ध होता है।

५०. प्र०—जब शरीर जलने लगता है तब मैं जलता हूं ऐसा क्यों कहता है ?
उ०—अनादि की अज्ञानता से निज स्वरूप को भूल कर और शरीरादि पर वस्तु मैं हूं, वह मेरी है ऐसा मान, जड़ के विनाश से अपना विनाश हुआ समझ कर दुःखी होता है।

५१. प्र०—जीव नही मरता तो शरीर में से निकल कर कहां जाता होगा ?
उ०—जिन्दगी में जैसे शुभा शुभ आचरण से जिस प्रकार शुभाशुभ कर्म का संचय करता है वैसे ही उत्पति योग्य स्थान में जाकर उत्पन्न हो जाता है।

५२. प्र०—एक जीव के प्रदेश कितने है ?
उ०—असंख्य।

५३. प्र०—प्रदेश अलग-अलग हो जाते है या नहीं ?
उ०—नहीं; वह एक प्रदेश दूसरे प्रदेश से कभी भिन्न नहीं होता है।

५४. प्र०—जीव अपना बड़े से बड़ा बड़ा रूप धारण करे तो कितना हो सकता है ?
उ०—चौदह राज लोक (समस्त दुनियां में) समावेश हो सके इतना बड़ा हो सकता है।

५५. प्र०—जीव प्रत्येक कार्य स्वतः ही करता है या किसी के द्वारा करता है ?

उ०—संज्ञी जीव मन द्वारा और असंज्ञी जीव मन जैसी शक्ति द्वारा इन्द्रियों से काम काज लेते है।

पाठ-३४

अजीव तत्व

१. प्र०—अजीव किसे कहते है ?

उ०—चैतन्य रहित जड लक्षण।

२. प्र०—इस के मुख्य भेद कितने है ?

उ०—दो; रूपी और अरूपी।

३. प्र०—रूपी अरूपी किसे कहते हैं ?

उ०—जिस द्रव्य में वर्ण, गंध, रस स्पर्श हो वह रूपी और न हो वह अरूपी है।

४. प्र०—रूपी के मुख्य भेद कितने है ?

उ०—चार; पुद्गलास्तिकाय का स्कंध, देश, प्रदेश और परमाणु।

५ प्र०—पुद्गलास्तिकाय का अर्थ क्या ?

उ०—(पूडन, गलन) मिलना, भिन्न होना जैसा जिसका स्वभाव है वह पुद्गल और उसका पुद्गलास्तिकाय।

६. प्र०—स्कंध, देश, प्रदेश, और परमाणु कि

उ०—जो द्रव्य पूर्व-समग्र हो वह स्कंध कहलाता है, उसमें के किसी भाग की कल्पना करना देश, उसका परम सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग, प्रदेश, वह सूक्ष्म प्रदेश मुख्य द्रव्य से भिन्न हो जाय वह परमाणु कहलाता है।

७. प्र०—वह परमाणु कितना सूक्ष्म होता है? इसका विशेष स्पष्टी करण करो?

उ०—अनंत सूक्ष्म परमाणु के मिलने से एक बादर परमाणु, अनंत बादर परमाणु के मिलने से एक उष्ण परमाणु, आठ उष्ण परमाणु से एक शीत परमाणु, आठ शीत परमाणु से एक उर्धरेणु, आठ उर्धरेणु से एक त्रसरेणु, आठ त्रसरेणु से एक रथरेणु, आठ रथरेणु इतना उत्तरकुरु देवकुरु, के मनुष्य का एक बाल होता है। वैसे आठ बाल=एक महाविदेह क्षेत्र के मनुष्य के सिर का बाल, वैसे आठ बाल=भरत क्षेत्र के मनुष्य के सिर का एक बाल, वैसे आठ बाल=एक लीक आठ लीक=एक जूं, आठ जूं=एक जीव का मध्य भाग। आठ जीव के मध्य भाग=एक अंगुल, बारह अंगुल=एक बेंत (बालिश्त), दो बालिस्त=१ हाथ, दो हाथ=एक कुक्षी, दो कुक्षी=एक धनुष, दो हजार धनुष=एक गाऊ, चार गाऊ=एक योजन।

८. प्र०—अरूपी के मुख्य भेद कितने है?

उ०—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकास्तिकाय इन तीनों के स्कंध देश प्रदेश यों नो और दसवां काल

यों दस भेद हुए।

९. प्र०—धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय अर्थात् क्या ?

उ०—जीव और पुद्गल के चलने में सहायक हो। जिस प्रकार मछली पानी में तैर सकती है। जिस तरह उसे पानी मददगार है वैसे ही धर्मास्तिकाय के विना कोई भी व्यक्ति गति नहीं कर सकता और स्थिर रहने में जो मददगार है वह अधर्मास्तिकाय का गुण है।

१०. प्र०—काल के नन्हे से नन्हे भाग को क्या कहते हैं ?

उ०—समय।

११. प्र०—समय कितना सूक्ष्म होता है वर्णन करो ?

उ०—आख मीचकर खोलने में असंख्याते समय व्यतीत हो जाते है उस असंख्य समय को एक आवलिका कहते है। ऐसी २५६ आवलिका में निगोद वाले जीव का एक भव हो जाता है। ऐसे सात श्वासोश्वास से एक स्तोक होता है और सात स्तोक के वरावर एक लव ऐसे सतत्तर लव का एक मुहूर्त होता है।

१२. प्र०—एक मुहूर्त मे कितनी आवलिका होती है ?

उ०—१,६७,७७,२१६ आवलिका।

१३. प्र०—एक मुहूर्त मे निगोद वाले जीव के कितने भव होते है ?

उ०—६५,५३६ भव।

१४. प्र०—एक अहोरात्रि म कितने मुहूर्त होते है ?

उ०—३० मुहूर्त।

१५. प्र०—एक पुद्गल परावर्तन का समय कब होता है ?

उ०—जो द्रव्य पूर्व-समग्र हो वह स्कंध कहलाता है, उसमें के किसी भाग की कल्पना करना देश, उसका परम सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग, प्रदेश, वह सूक्ष्म प्रदेश मुख्य द्रव्य से भिन्न हो जाय वह पर-माणु कहलाता है।

७. प्र०—वह परमाणु कितना सूक्ष्म होता है ? इसका विशेष स्पष्टी करण करो ?

उ०—अनंत सूक्ष्म परमाणु के मिलने से एक बादर परमाणु, अनंत बादर परमाणु के मिलने से एक उष्ण परमाणु, आठ उष्ण परमाणु से एक शीत परमाणु, आठ शीत परमाणु से एक उर्धरेणु, आठ उर्धरेणु से एक त्रसरेणु, आठ त्रसरेणु से एक रथरेणु, आठ रथरेणु इतना उत्तरकुरु देव-कुरु, के मनुष्य का एक बाल होता है। वैसे आठ बाल=एक महाविदेह क्षेत्र के मनुष्य के सिर का बाल, वैसे आठ बाल=भरत क्षेत्र के मनुष्य के सिर का एक बाल, वैसे आठ बाल=एक लीक आठ लीक=एक जूं, आठ जूं=एक जीव का मध्य भाग। आठ जीव के मध्य भाग=एक अंगुल, बारह अंगुल=एक बेंत (बालिश्त), दो बालिस्त=१ हाथ, दो हाथ=एक कुक्षी, दो कुक्षी=एक धनुष, दो हजार धनुष=एक गाऊ, चार गाऊ=एक योजन।

८. प्र०—अरूपी के मुख्य भेद कितने है ?

उ०—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकास्तिकाय इन तीनों के स्कंध देश प्रदेश यों नो और दसवां काल

को निकाम का कर देना ये बीस और जो दस अरूपी के पहिले कहे है मिल कर तीस भेद अजीव अरूपी के हुए।

. प्र०— रूपी अजीव के पांच सौ तीस भेद कौन से है समझाओ ?

उ०—प्रत्येक रूपी द्रव्य मे मुख्य गुण पच्चीस है। पांच वर्ण (काला, लाल, हरा, पीला, सफेद) दो गंध (सुगंध, दुर्गध) पांच रस (तीक्ष्ण, कटु, कसाएला, खट्टा, मीठा) पांच संठाण (परिमंडल, वट, त्रस, चौरस, आयत) आठ स्पर्श (खरदरा, कोमल, भारी, हलका, शीतल, उष्ण, स्नग्न्ध, रूक्ष) ये पच्चीस मुख्य भेद है, उनमे के एक एक वर्ण के बीस भेद होते है दो गंध पाच रस आठ स्पर्श पांच सठाण। ऐसे पाच पांच वर्ण के सौ भेद हुए। एक एक गध के तेबीस भेद होते है (पांच वर्ण, पांच रस, आठ स्पर्श, पांच संठाण। ऐसे दोनो गध के ४६ भेद हुए। एक एक रस द्रव्य के बीस भेद होते है। पांच वर्ण' दो गंध, पांच संठाण, आठ स्पर्श) ऐसे पांच रस के सौ भेद हुए। हर एक द्रव्य के संठाण के वीस भेद है पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श) यों पांच संठाण के सौ भेद हुए। हर एक द्रव्य के स्पर्श के तेईस भेद है (पांच वर्ण, पांच रस, दो गंध, छः स्पर्श पांच सठाण) पहिले खरदरा और कोमल वर्ज देना फिर दो दो स्पर्श छोडते जाना आठ स्पर्श के १=४ भेद हुए वे सव मिल कर

ऊ०—पंद्रह अहोरात्रि=एक पक्ष। दो पक्ष=एक माह। बारह माह=एक वर्ष। पांच वर्ष=एक युग। ८४ लाख वर्ष=एक पूर्वांग। ८४ लाख पूर्वांग=एक पूर्व। असंख्य पूर्व=एक पल्योपम। दस क्रोडा क्रोडी पल्योपम=एक सागरोपम। दस क्रोड़ा क्रोडी सागरोपम=एक अवसर्पिणी। ये दो मिलकर बीस क्रोडा क्रोडी सागरोपम का एक काल चक्र होता है। ऐसे अनन्त काल चक्र हो तो एक पुद्गल परवर्तन होता है।

१६. प्र०—अजिव के १४ भेद कौनसे है उनके विस्तार से कितने भेद है?

उ०—अरुपी के तीस और रूपी के पांच सौ तीस कुल ५६० भेद।

१७. प्र०—३० भेद अरूपी अजीव के किस प्रकार होते हैं? समझाओ।

उ०—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकात, आकस्तिकाय, (१) द्रव्य से एक क्षेत्र से लोक के अनुसार काल से अनादि अनन्त भाव से, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श मूर्ति रहित, (५) गुण से धर्मास्तिकाय चलने में सहायता करने वाली अधर्मास्तिकाय, स्थिर रहने मे मदद देने वाली और अकास्तिकाय अवगाहन अर्थात् मार्ग देने वाली ये पंद्रह भेद हुए। सोलवां काल द्रव्य से अनेक (१७) क्षेत्र से ढाई द्वीप के अनुसार (१८) काल से आदि अनन्त (१६) भाव से वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श रहित (२०) गुण से वर्तन लक्षण नये को पुराना करना और पुराने

उ०—जिसके फल भोगते हुए अनिष्ट और कटु हों।

६. प्र०—पाप कितनी प्रकार से सचित होता है ?

उ०—अठारह; प्राणातिपात, मृपावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया लोभ, राग, द्वेष, क्लेश, अभ्याख्यान, मैशुन्य, परपरिवाद, अरति, रति, माया, मोसा, मिथ्यात्व, दर्शन, शल्य।

७. प्र०—पाप के फल कितने प्रकार से भोगे जाते हैं ?

उ०—८२ प्रकार से।

८. प्र०—पाप के ८२ प्रकार कौन कौन से है ?

उ०—गति, जाति, इद्रियां, उपांग, सघण, संठाण, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अत्यन्त, हलके, खराव और अमनोग्य होते है, इनके सिवाय निर्बल. निस्तेज, अपयश, दुर्भाग्य, अस्थिर, दुःस्वर, ज्ञानावरण, दर्शनावरण, पांच अतराय (दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य, की अंतराय) पांच प्रकार की निद्रा (निद्रा निद्रा, प्रचला, प्रचला—प्रचला थिणद्धी) से लीप्त हो और चारित्र मोहनी की पच्चीस प्रकृतियों ढकी रहें।

९. प्र०—आश्रव किसे कहते है ?

उ०—आत्म रूप तालाब मे इंद्रियांदिक नालों से कर्म पाप रूप पानी आ प्रवाह हों।

१०. प्र०—आश्रव के कितने भेद है ?

उ०—सामान्य २० भेद है; मिथ्यात्व, अवृत, प्रमाद, कपाय, अशुभयोग, प्राणातिपात, मृपावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, पांच इन्द्रियां तथा मन वचन काया को वश न रखना हर एक कार्य मे अवि-

५६० भेद अजीव रूपी के हुए।

पाठ-३५

पुन्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष

१. प्र०—पुन्य तत्व किसे कहते है ?
उ०—जिसके फल भोगते हुए मिष्ट हों और जिससे इच्छित वस्तु प्राप्त हो।

२. प्र०—पुन्य कितने प्रकार से संचित होता है ?
उ०—नौ; अन्न, पानी, जगह, वस्त्र और इनके सिवाय कौन से भी योग्य साधन वे पांच और मन, वचन, काया को शुभ प्रवृत्ति और ९ वीं नम्रता।

३. प्र०—नव प्रकार के संचित पुण्य का फल कितनी प्रकार से भोगते हैं।
उ०—बयालिस प्रकार से।

४. प्र०—बयालीस प्रकार का सार समझाओ ?
उ०—गति, जाति, शरीर, इन्द्री, उपांग, संघयण, (दृढता) संठाण, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, बल, तेज, यश, सौभाग्य, सौन्दर्य, वैभव, कंठ, लालित्य, इज्जत, शांति, शक्ति, प्रताप, इत्यादि उच्च और सुख दायक प्राप्त हों।

५. प्र०—पाप किसे कहते है ?

उ०—चार; प्रकृति बंध, स्थिति बंध, अनुभाग बंध, प्रदेश बंध ।

१९. प्र०—प्रकृति बंध किसे कहते हैं ?

उ०—जो कर्म बांधे जाते है उनका फल सुख या दुःख प्राप्त होने का स्वभाव या परिणाम ।

२०. प्र०—स्थिति बंध किसे कहते है ?

उ०—जो कर्म जितने समय मे संचित हुआ है उतने ही समय तक भोगना उसे स्थिति बंध कहते है ।

२१. प्र०—अनुभाग बध किसे कहते है ?

उ०—वह कर्म तीव्र या मंद जैसी इच्छा से संचित हुआ हो ।

२२. प्र०—प्रदेश बंध किसे कहते है ?

उ०—उस कर्म पुद्गल के जितने दल संचिल हुए हों उसे प्रदेश बन्ध कहते है ।

२३. प्र०—मोक्ष किसे कहते है ?

उ०—सर्व आत्मा के प्रदेश से सकल बंधन का छूटना सकल दोषादि से मुक्त होना, सफल कार्य की सिद्धि होना उसे मोक्ष कहते हैं ।

२४. प्र०—मोक्ष जाने के कितने साधन है ?

उ०—चार; ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप ।

२५. प्र०—मोक्ष जाने के कितने बोलों की अत्यन्त आवश्यकता है ?

उ०—मनुष्यत्व, वज्र, ऋषभ नाराच, संघयण, परम शुल्क ध्यान, क्षायक सम्यक्त्व यथाख्यात, चारित्र, परम शुल्क लेश्या, पंडित, वीर्य, केवलज्ञान, केवलदर्शन ।

वेक चपलता करना ।

११. प्र०—संवर किसे कहते है ?

उ०—आत्मरूपी तालाब मे पाप रूप जक के प्रवाह को आता हुआ व्रत प्रत्याख्यानादि छिपा रूप द्वार से रोकले उसे संवर कहते है ।

१२. प्र०—संवर के कितने भेद है ?

उ०—सामान्य बीस; समकित, व्रत, प्रत्याख्यान, अप्रमाद, अकषाय, शुभयोग, दया, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह, पांच इन्द्रियां तथा मन, वचन, काया इन आठों को वश करना हर एक कार्य मे विवेक, अचपलता के बीस भेद हुए ।

१३. प्र०—निर्जरा किसे कहते है ?

उ०—आत्मा के प्रदेश से तपश्चर्या द्वारा कर्म अंश से कर्म की निर्जरा होना अर्थात् जलकर दूर होना उसे निर्जरा कहते है ।

१४. प्र०—निर्जरा के कितने भेद है ?

उ०—दो; सकाम, अकाम ।

१५. प्र०—सकाम किसे कहते है ?

उ०—इच्छा पूर्व समझकर कर्म से दूर होना ।

१६. प्र०—अकाम किसे कहते है ?

उ०—इच्छा विना, तिर्यंच की तरह कष्ट सहन करते कर्म की निर्जरा होना ।

१७. प्र०—वंध तत्व किसे कहते कहते हैं ?

उ०—आत्मा प्रदेश और कर्म पुद्गल के दलक्षीर नीर की तरह तथा लोह, अग्नी की तरह एकत्र होना ।

१८. प्र०—वंध के कितने भेद है ?

होता है या नहीं ?

उ०—नही; इन तीनों मे से किसी का नाश नही होता।

९. प्र०—जीव मात्र सुख चाहते है वह सुख कहां है ?

उ०—सुख जीव के पास ही है।

१०. प्र०—अपने ही पास हो तो फिर अन्य जगह क्यों ढुंढता फिरता है ?

उ०—अपनी अज्ञानता के कारण।

११. प्र०—जीव स्वतन्त्र है या परतन्त्र ?

उ०—जब तक कर्म से विमुक्त न हो वहां तक परतन्त्र और विमुक्त होने पर जीव स्वतन्त्र है।

१२. प्र०—सुख कितने प्रकार का है ?

उ०—दो; आत्मिक सुख और पौद्गलिक सुख।

१३. प्र०—पौद्गलिक सुख के कितने भेद है ?

उ०—दो; शारीरिक, मानसिक।

१४. प्र०—दुःख के कितने भेद हे ?

उ०—दो; शारीरिक, मानसिक।

१५. प्र०—एक जीव के पास कर्म रूपी कितने परमाणु पुद्गल होते है ?

उ०—अनन्त।

१६. प्र०—जिस समय कर्म बन्धे या छूटें तब एक समय मे कितने परमाणु पुद्गल होते है ?

उ०—अनन्त।

१७. प्र०—जीव जब स्थूल शरीर से निकल कर मोक्ष मे जाता है तब उसकी गति टेढी तीर्छी रहती है या सीधी ?

उ०—सीधी तनिक भी टेढी नहीं।

पाठ-३६

नव तत्व सम्बन्धी विशेष प्रश्नोत्तर

१. प्र०—जीव शरीर के कौन से भाग में रहता है ?

उ०—जीव शरीर के समस्त भाग में जैसे तिल मे तेल और दूध मे घृत है।

२. प्र०—प्रत्येक जीव समान प्रदेश गण शक्ति ज्ञान और स्वभाव वाले होते है या भिन्न भिन्न।

उ०—प्रत्येक जीव मूल स्वभाव से तो सब तरह से समान होते है परन्तु उपाधि (कर्म) के कारण वक्ति ज्ञान गुण और स्वभाव मे एक दूसरे से कम अधिक देखे जाते है।

३. प्र०—जीव को कर्म कब से लगे हैं ?

उ०—अनादि काल से जीव और कर्म साथ ही है।

४. प्र०—स्थूल देह से जव जीव भिन्न होता है तब उसके साथ क्या-क्या रहता है ?

उ०—तेजस और कार्मासा ये दो शरीर और शुभा-शुभ कर्म सामग्री।

५. प्र०—मुक्त हुए जीव को कर्म लगे या नहीं ?

उ०—मुक्त जीवों को कर्म नही लगते।

६. प्र०—कर्म किसको लगते है जीव को या कर्म को ?

उ०—कर्म सहित जीव है और उसे ही कर्म लगते है।

७ प्र०—अनादि काल से रहने वाली कितनी वस्तुए है ?

उ०—अनत जीव परमेश्वर और जगत (पुद्गल समूह)।

८. प्र०—इन तीनो में से किसी का किसी समय नाश

से ग्रहण करता है ?

उ०—अपने अत्यन्त समीप रहे हुए पुद्गलों को ग्रहण करता है ।

२५. प्र०—किसी भी रंग का एक परमाणु हो उस में कुछ मिले सिवाय फेरफार हो सके या नहीं ?

उ०—हां; उस की वृद्धि, हानि, होती है वैसे ही वर्ण, गंध, रस, बदलते भी है ।

२६. प्र०—परमाणु जैसे सूक्ष्म द्रव्य में कुछ मिला या निकल गया, हानि हुई या वृद्धि, स्वरूप बदछना कैसे बन सकता है ?

उ०—परमाणु का ऐसा ही स्वभाव है ।

२७. प्र०—पानी के परमाणु पृथ्वी के रूप मे और पृथ्वी के परमाणु पानी के रूप में होते है या नही ?

उ०—हां; पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति इन सब के परमाणु एक दूसरे रूप मे बदलते है परन्तु जल के या पृथ्वी के परमाणु जल या पृथ्वी रूप में ही रहें ऐसा नही हो सकता ।

२८. प्र०—पृथ्व्यादि परमाणु जल रूप और जल के पृथ्व्यादि रूप मे हो जाते है इसे दृष्टांत देकर समझाओं ?

आंक्सीजन और हैड्रोजन नामक दो वायु एकत्र
ने से उन का पानी हो जाता है पानी वृक्ष
मे खीचने से मूल द्वारा वृक्ष मे प्रवेश हो
है है, वृक्ष सुख कर जीर्ण हो
जाता है उसी पृथ्वी
होने पर अन्य रूप में

१८. प्र०—किसी जीव को मजबूत काच या लोहे की कोठी मे बन्द कर दे तो भी जीव निकल सकेगा ?

उ०—हां; स्थूल शरीर को छोड कर उसका निकलना सरल है।

१९. प्र०—दूसरी गति में जाते हुए जीव को कोई रोकने वाला या ठहराने वाला कोई स्थान मध्य मे आता है या नही ?

उ०—नहीं· जीव और उसके साथ रही हुई उपाधि सब इतनी अधिक सूक्ष्म रहती है कि उसे दृढ़ से दृढ़ वज्र की भींत से भी निकल जाने में कोई कठि· नाई नहीं होती है।

२०. प्र०—एक परमाणु मे वर्ण, गन्ध, रस स्पर्श कितने होते है ?

उ०—चाहे जिस जाति का एक वर्ण, एक गन्ध, एक रस और दो स्पर्श रहते है।

२१. प्र०—शुभाशुभ कर्मों मे वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श कितने होते है ?

उ०—कर्मों के समूह में पांच वर्ण, दो गन्ध पांच रस और चार स्पर्श रहते है।

२२. प्र०—आठ स्पर्श मे से चार स्पर्श कौन से नही होते ?

उ०—भारी, हलका, दृढ़ और कोमल ये चार नहीं होते और बाकी के चार होते है।

२३. प्र०—ऐसे चार स्पर्श वाले पुद्गल दूसरे कौन से है ?

उ०—शुभाशुभ कर्म, मन, वचन और कार्मण शरीर के पुद्गल चो स्पर्शी (चार स्पर्श वाले) होते है।

२४. प्र०—जीव जब कर्म बधन करता है तब पुद्गल कहां

से ग्रहण करता है ?

उ०—अपने अत्यन्त समीप रहे हुए पुद्गलों को ग्रहण करता है।

२५. प्र०—किसी भी रंग का एक परमाणु हो उस में कुछ मिले सिवाय फेरफार हो सके या नहीं ?

उ०—हां; उस की वृद्धि, हानि, होती है वैसे ही वर्ण, गंध, रस, बदलते भी है।

२६. प्र०—परमाणु जैसे सूक्ष्म द्रव्य में कुछ मिला या निकल गया, हानि हुई या वृद्धि, स्वरूप बदलना कैसे बन सकता है ?

उ०—परमाणु का ऐसा ही स्वभाव है।

२७. प्र०—पानी के परमाणु पृथ्वी के रूप मे और पृथ्वी के परमाणु पानी के रूप मे होते है या नही ?

उ०—हां; पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति इन सब के परमाणु एक दूसरे रूप मे बदलते है परन्तु जल के या पृथ्वी के परमाणु जल या पृथ्वी रूप में ही रहें ऐसा नही हो सकता।

२८. प्र०—पृथ्व्यादि परमाणु जल रूप और जल के पृथ्व्यादि रूप मे हो जाते है इसे दृष्टांत देकर समझाओं ?

उ०—आंक्सीजन और हैड्रोजन नामक दो वायु एकत्र करने से उन का पानी हो जाता है पानी वृक्ष के मूल मे खीचने से मूल द्वारा वृक्ष मे प्रवेश हो वृक्ष रूप हो जाता है, वृक्ष सुख कर जीर्ण हो जाता है तब पृथ्वी मे मिल जाता है उसी पृथ्वी के परमाणु अन्य प्रयोग होने पर अन्य रूप मे हो जाते हैं।

१८. प्र०—किसी जीव को मजबूत काच या लोहे की कोठी मे बन्द कर दे तो भी जीव निकल सकेगा ?

उ०—हां; स्थूल शरीर को छोड कर उसका निकलना सरल है।

१९. प्र०—दूसरी गति में जाते हुए जीव को कोई रोकने वाला या ठहराने वाला कोई स्थान मध्य में आता है या नही ?

उ०—नहीं· जीव और उसके साथ रही हुई उपाधि सब इतनी अधिक सूक्ष्म रहती है कि उसे दृढ़ से दृढ़ वज्र की भींत से भी निकल जाने मे कोई कठि· नाई नहीं होती है।

२०. प्र०—एक परमाणु मे वर्ण, गन्ध, रस स्पर्श कितने होते है ?

उ०—चाहे जिस जाति का एक वर्ण, एक गन्ध, एक रस और दो स्पर्श रहते है।

२१. प्र०—शुभाशुभ कर्मों मे वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श कितने होते है ?

उ०—कर्मों के समूह में पांच वर्ण, दो गन्ध पांच रस और चार स्पर्श रहते है।

२२. प्र०—आठ स्पर्श मे से चार स्पर्श कौन से नहीं होते ?

उ०—भारी, हलका, दृढ़ और कोमल ये चार नही होते और बाकी के चार होते है।

२३. प्र०—ऐसे चार स्पर्श वाले पुद्गल दूसरे कौन से है ?

उ०—शुभाशुभ कर्म, मन, वचन और कार्मण शरीर के पुद्गल चो स्पर्शी (चार स्पर्श वाले) होते है।

२४. प्र०—जीव जब कर्म बंधन करता है तब पुद्गल कहां

पुन्य कर्म ही हो सकते है या नहीं ?
उ०—नहीं; अधिक या कम परन्तु पाप कर्म और पुन्य कर्म, दोनों रहते है ।

पाठ—३७

गुण स्थानक

१. प्र०—जीव के गुण की एक-एक से उन्नत सीढ़ियों के स्थान को क्या कहते है ?
उ०—गुण स्थानक ।

२. प्र०—गुण स्थान का विशेषार्थ दृष्टांत देकर समझाओं ?
उ०—जैसे किसी खास स्थान पर जाने में रास्ते मे स्थान या स्टेशन पर से होकर जाना होता है तथा किसी मजिल पर जाना हो तो सोपान की पंक्तियों पर से उसी मंजिल पर जाना पडता है उसी तरह जीव को मुक्ति रूप अचल स्थान पर पहुंचने में जो-जो गुण स्थानक पसार करने पड़ते है वे गुण-स्थान कहलाते है ।

३. प्र०—गुण स्थानक कितने और कौन से हैं ?
उ०—चौदह; १. मिथ्यात्व, २ साश्वादान, ३. मिश्र, ४. अविरति सम्यक दृष्टि, ५. देशविरति, ६. प्रमत संजति, ७. अप्रमत सजति ८. निवृत्ति वादर, ९. अनिवृति वादर, १० सूक्ष्म संमपराय, ११. उप-शांत मोह, १२. क्षीण मोह, १३. संयोग केवली,

२९. प्र०—एव जाति के वर्ण, गंध, रस के परमाणु पुद्गल अन्य वर्ण गंध रस के रूप में हो जाते है, दृष्टांत से समझाओ ?

उ०—कालेरंग की मिट्टी के प्रदेश पर नीम, गुलाब जुई, प्रभृति वृक्ष के बीज अपने स्वरूप को प्रकट करने वास्ते अपने से ही वर्ण, गंध, रस के परमाणु को खीचेगा और गुलाब, व जुई अपने अनुकूल परमाणुओ को ही खीचंगे और उस काली मिट्टी के परमाणुओं को अपने अपने रूप में परिणित करेंगे, काली दिखती हुई मिट्टी को गुलाब का बीज, गुलाब के रूप मे बदल सकता है।

३०. प्र०—बड का जीर्ण बीज जमीन मे रोपने से उसे बड वृक्ष के रूप में कौन बनाता है ?

उ०—उस बड के बीज में ऐसी शक्ति होती है कि उसी मिट्टी, पानी, प्रकाश, गर्मी ऐसी वस्तुओं का सुयोग प्राप्त होने पर वह विकास पाता है और समीप के पुद्गलों को खीच अपने रूप मे परिणित कर बड वृक्ष के रूप में बनाता है। इसी तरह प्रत्येक वृक्ष अनुकूल संयोग प्राप्त होने पर उत्पन्न होकर बढ़ते है और प्रतिकूल सयोग पा नाश होजा ते है।

३१. प्र०—धर्म, पुण्य, पाप इनमें क्या अन्तर है ?

उ०—जीव के साथ वधने वाले शुभ कर्म पुन्य और अशुभ कर्म पाप तथा जीव से कर्म की निर्जरा होना (छूट जाना) धर्म गिना जाता है।

३२. प्र०—किसी जीव के पास सिर्फ पाप कर्म या सिर्फ

संशयिक, अणाभोगिक ।

१०. प्र०—अभिग्रहिक अर्थात् क्या ?

उ०—प्रत्येक असत्य (मिथ्या बात को) को विना विचार ग्रहण कर रखने की मूढता ।

११. प्र०—अनभिग्रहिम अर्थात् क्या ?

उ०—किसी वात का निर्णय किये विना सांच, झूंठ, की स्वीकृति करे ।

१२. प्र०—अभिनिवेसिक अर्थात् क्या ?

उ०—समझ बूझ कर अपना दुराग्रह रक्खे छोड़े नहीं।

१३ प्र०—संशयिक अर्थात् क्या ?

उ०—प्रत्येक सच बात में भी शंका रक्खे ।

१४. प्र०—अणाभोगिक अर्थात् क्या ?

उ०—वे भानावस्था, जिस मे किसी वात की कुछ खवर न रहे ।

१५. प्र०—इन पांचों मिथ्यात्व में से अधिक खराव मिथ्यात्व कौनसा और कुछ ठीक कौन सा ?

उ०—अभिनिवेसिक अधिक खराव है क्योंकि जान बूझ कर खाली दुराग्रह करता है इसलिये यह दु.साध्य बीमारी के सदृश है और अनभिग्राहिक ठीक है कारण कि उसमें नम्रता के गुण है और खोटे के साथ अच्छे को भी स्वीकारता है इससे उसमें मार्गानुसारी पना प्राप्त होता है ।

१६. प्र०—मार्गानुसारी अर्थात् क्या ?

उ०—अनादि काल से संसार में परिभ्रमण करते हुए जीव को मोक्ष के मार्ग तरफ लगना ।

१७. प्र०—इन पांचो के सिवाय मिथ्यात्व का समावेश कौन

१४. अयोगी केवली ।

४. प्र०—मिथ्यात्व अर्थात् क्या ?

उ०—दृष्टि का विपर्यास (खोटापन) ।

५. प्र०—मिथ्यात्व को दृष्टांत से अधिक स्फुट करके समझाओं ।

उ०—जैसे धतुरे के बीज खाने वाला सफेद वस्तु को पीली देखता है वैसे ही मिथ्यात्व मोहनीय कर्म के उदय से प्राणी जगत का वास्तविक स्वरूप आत्मा का हित, सुख का मार्ग, शांति का आगार नहीं देख सकता सद्धर्म सदगुरु, सत्य देव, मिथ्यात्व के दबाव से नही पहचान सकता और देह को ही आत्मा समझता है ।

६. प्र०—जीव को मिथ्यात्व कब से लगा होगा ?

उ०—अनादि काल से जीव मिथ्यात्व गुणस्थानक में हुआ है ।

७. प्र०—मिथ्यात्व मे ऐसा कौनसा गुण है जिससे मिथ्यात्व गुण स्थानक कहलाता है ।

उ०—मिथ्यात्व मे रहने से गुप्त सर्व ज्ञान में से अक्षर के अनंत वे भाग जितना ज्ञान प्रकट रहता है इसलिये उसे गुण स्थानक कहते हैं ।

८. प्र०—जीव को इतना भी प्रकट ज्ञान न रहे तो ?

उ०—ज्ञान का गुण तनिक प्रकट न हो तो जीव का नाश हो अजीव हो जाय, परन्तु ऐसा कभी नही हो सकता ।

९. प्र०—मिथ्यात्व मुख्य कितने प्रकार का है ?

उ०—पांच; अभिग्राहिक, अनभिग्राहिक, अभिनिवेशिक,

उ०—सम्यक्त्व और मिथ्यात्व की मिश्रता ।

२७. प्र०—मिश्रपने को दृष्टांत से समझाओं ?

उ०—जिस तरह श्री खंड में मिठास और खटास दोनों साथ-साथ रहते है संध्या समय रात, दिन का मिश्र पना रहता है उसी तरह मध्यम भाव उत्पन्न होता है उसे मिश्र गुण स्थानक कहते है ।

२८. प्र०—उसकी मान्यता कैसी होती है ?

उ०—सत्य और असत्य दोनों मार्ग की ओर रुचि रखता हो, एक में भी निश्चित न हो परन्तु शंका शील हो ।

२९. प्र०—मिश्र गुणस्थानक की स्थिति कितनी है ?

उ०—अंतर मुहुर्त रह कर या तो ऊपर चढता है या नीचे गिरता है ।

३०. प्र०—चौथा गुण स्थानक का नाम क्या है ?

उ०—अविरति सम्यक्त्व ।

३१. प्र०—अविरति सम्यक्त्व का अथ क्या ?

उ०—असत्य मान्यता को त्याग सत्य मानने की श्रद्धा हो परन्तु व्रत को न आदर सके ।

३२. प्र०—सम्यक्त्व के कितने भेद है ?

उ०—पांच क्षायिक क्षयोपशमिक, औपशमिक, सास्वादान, और वेदक ।

३३. प्र०—क्षायिक, क्षयोपशमिक और औपशमिक का अर्थ क्या ?

उ०—मोहनीय कर्म की मूल दो प्रकृतियां है । चारित्र मोहनीय ११ दर्शन मोहनीय । इनमें से चारित्र मोहनीय की २५ प्रकृतिया है और दर्शन मोहनीय की तीन, १ समकित मोहनीय, २ मिश्र

से मिथ्यात्व में होता है ?

उ०—अभिग्रहिक मे ।

१८. प्र०—दूसरे गुण स्थानक का नाम क्या ?

उ०—साश्वादान सम्यक्त्व ।

१९. प्र०—साश्वादान का अर्थ क्या ?

उ०—आश्वादान सहित वह साश्वादान ।

२०. प्र०—आश्वादान का अर्थ क्या ?

उ०—ऊपर के गुण स्थानक को त्यागते ही इस गुण स्थान मे जीव छे आवलिका जितना समय रहता है अर्थात् ऊपर के स्थान से नीचे के स्थान में आते हुए मध्य के समय मे पूर्व के गुण का स्वाद रहता है वह ।

२१. प्र०—साश्वादान एक भव में कितने समय आता है ?

उ०—पांच वक्त ।

२२. प्र०—एक समय जिन्हें साश्वादान आता है उसका फल क्या ?

उ०—कृष्ण पक्षी था यह शुल्क पक्षी हुआ, असंख्य ऋण मिट कर स्वल्प ऋण रहता है वैसा फल होता है।

२३. प्र०—साश्वादान सम्यक्त्वी उत्कृष्ट कितने समय मे मोक्ष जाता है ?

उ०—अर्द्ध पुद्गल परावर्तन में आखिर मोक्ष जाता है।

२४. प्र०—पुद्गल परावर्तन का समय कितना ?

उ०—अनती उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी जिसमें समाजाय।

२५. प्र०—तीसरे गुणस्थानक का नाम क्या है ?

उ०—मिश्र गुणस्थानक ।

२६. प्र०—मिश्र का अर्थ क्या ?

उ०—सम्यक्त्व और मिथ्यात्व की मिश्रता ।

२७. प्र०—मिश्रपने को दृष्टांत से समझाओं ?

उ०—जिस तरह श्री खंड में मिठास और खटास दोनों साथ-साथ रहते है संध्या समय रात, दिन का मिश्र पना रहता है उसी तरह मध्यम भाव उत्पन्न होता है उसे मिश्र गुण स्थानक कहते है ।

२८. प्र०—उसकी मान्यता कैसी होती है ?

उ०—सत्य और असत्य दोनों मार्ग की ओर रूचि रखता हो, एक में भी निश्चित न हो परन्तु शका शील हो ।

२९. प्र०—मिश्र गुणस्थानक की स्थिति कितनी है ?

उ०—अंतर मुहुर्त रह कर या तो ऊपर चढता है या नीचे गिरता है ।

३०. प्र०—चौथा गुण स्थानक का नाम क्या है ?

उ०—अविरति सम्यक्त्व ।

३१. प्र०—अविरति सम्यक्त्व का अथ क्या ?

उ०—असत्य मान्यता को त्याग सत्य मानने की श्रद्धा हो परन्तु व्रत को न आदर सके ।

३२. प्र०—सम्यक्त्व के कितने भेद है ?

उ०—पांच क्षायिक क्षयोपशमिक, औपशमिक, सास्वादान, और वेदक ।

३३. प्र०—क्षायिक, क्षयोपशमिक और औपशमिक का अर्थ क्या ?

उ०—मोहनीय कर्म की मूल दो प्रकृतियां है । चारित्र मोहनीय ११ दर्शन मोहनीय । इनमे से चारित्र मोहनीय की २५ प्रकृतियां है और दर्शन मोहनीय की तीन, १ समकित मोहनीय, २ मिश्र

मोहनीय, ३ मिथ्यात्व मोहनीय । ये तीन और दर्शन मोहनीय की २५ कुल २८ प्रकृति । दर्शन त्रिक और चार अनतानुबंधी क्रोध, माना, माया, लोभ इन सात प्रकृति का क्षय करने से क्षायिक समकित गिनी जाती है इनका उपशम करने से उपशम समकित और कुछ क्षय और कुछ उपशम करने से क्षयोपशमिक समकित गिनी जाती है ।

३४. प्र०—अनतानु बंधी कषाय अर्थात् क्या ?

उ०—अनंत है अनुबंध जिससे अर्थात् जो तीव्र कषाय के सेवन से अनंत कर्म के पुद्गलों का बंध अनुक्रम से पडता है ।

३५. प्र०—समकित मोहनीय का थोड़े में शब्दार्थ कहो ?

उ०—समकित होते भी मोहनीय की अमुक प्रकृति द्वारा खीजना पड़े ।

३६. प्र०—मिथ्यात्व मोहनीय अर्थात् क्या ?

उ०—मिथ्यात्व मे गिरना पड़े वह ।

३७. प्र०—मिश्र मोहनीय अर्थात् क्या ?

उ०—कुछ समकित और कुछ मिथ्यात्व इन दोनों के मिश्र मे रहना पड़े वह ।

३८. प्र०—पांचवें गुण स्थानक का नाम क्या है ? और उसका अर्थ क्या ?

उ०—समकित सहित शक्ति अनुसार व्रतों को अंगीकार करना अर्थात् पाप को देश से तजना यह देश विरति नामक पांचवां गुण स्थान गिना जाता है ।

३९. प्र०—पाचवे गुण स्थान मे कितनी प्रकृतियों का क्षयोपशम होता है ?

उ०—सात; प्रकृति पहले कही हुई वे और अप्रत्या ख्यान क्रोध, मान, माया और लोभ इन ग्यारहों का क्षयोपशम होता है।

४०. प्र०—पांचवें गुण स्थान वाला जीव कितने भव में मोक्ष जाता है?

उ०—जघन्य तीसरे भव और उत्कृष्ट पन्द्रहवे भव में मोक्ष जाता है।

४१. प्र०—देश विरति मे खास कितने और कौन से गुण प्रकट होते हैं?

उ०—इकवीस अल्प इच्छा, अल्पारम्भ, अल्परिग्रह, सुशील धर्म वृत्ति, पाप भारू नीति निपुण, एकात आर्य, विवेक दृष्टि, न्यायावलम्बी ज्ञान आराधक, अक्षुक, निष्कपट, कोमल लोकप्रिय, सौम्य, परगजु विनित, कृतज्ञ, सरल स्वभावी और सत्यानुप्रेक्षी।

४२. प्र०—ऐसे इकवीस गुण वाले श्रावक के कितने व्रत हे?

उ०—वाहर, पांच अणुव्रत, तीन गुण व्रत, चार शिक्षा व्रत।

४३. प्र०--श्रावकपना एक भव में मन से कितने समय आता है?

उ०—प्रत्येक (नव) हजार समय आता है।

४४. प्र०—छटवें, सातवे, गुणस्थानक के नाम क्या?

उ०—प्रमत संयति और अप्रमत संयति।

४५. प्र०—प्रमत और अप्रमत संयति का अर्थ क्या?

उ०—ये दोनों सर्व विरति होते हुए भी संयम में थोडा वहुत प्रमाद सेवने वाले होते हे वे प्रमत संयति, और संयम मे प्रमाद सेवने हारे न हों उन्हें

अप्रमत संयति कहते है ।

४६. प्र०— छट्टे और सातवें गुण स्थानक में कितनी प्रकृतियों का क्षयोपशम होता है ?

उ०—छट्टे गुण स्थान में ग्यारह प्रकृति पहिले कही वे और प्रत्याख्यान के क्रोध, मान, माया, लोभ यों पंद्रह प्रकृति का क्षयोपशम होता है और सातवें गुण स्थान में संज्वलन जहां जहां संजत्य लिखा हो वहां वहां संज्वलन लिखना के क्रोध सहित सोलह प्रकृतियों का क्षयोपशम होता है ।

४७. प्र०—छट्टे, सातवें गुणस्थान में कौन होता है ?

उ०—पांच महाव्रत धारी साधु पुरुष ।

४८. प्र०—साधुपना एक भव में मन से कितने समय आता है ?

उ०—उत्कृष्ट नव सौ वार ।

४९. प्र०—आठवें गुणस्थानक का नाम क्या ? और उसमें कितनी प्रकृतियों का क्षयोपशम होता है ?

उ०—पहिले कही हुई सोलह प्रकृति और संजल का मान मिलकर १७ प्रकृति का क्षयोपशम होता है उसको निवृति बादर गुणस्थान कहते है ।

५०. प्र०—उस गुणस्थानक की कैसी स्थिति होती है ?

उ०—शुक्ल ध्यान प्रकट होता है, सहज समाधि रहती है, केवल्यज्ञान रूप सूर्य के उदय के पूर्व ही अनुभव ज्ञान रूप अरुणोदय प्रकट होता है ।

५१. प्र०—इस गुणस्थानक में हर एक जीव जाने वाला अन्त में केवल्यज्ञान की सीमा तक पहुंच

सकता है ?

उ०—इस जगह उपशम और क्षपक ऐसी दो विचार की श्रेणियां है। इसमें से जो उपशम श्रेणी पर चढ़ता है वह ग्यारहवें गुणस्थान में जाकर पतित हो जाता है, और क्षपक श्रेणी में चढ़ता है वह कर्म के दल को तोडते तोडते समय समय पर अनंत गुनी विशुद्धि करते तेरहवें गुणस्थान मे जा केवलज्ञान प्राप्त कर लेता है।

५२. प्र०—इस गुणस्थानक का दूसरा नाम क्या है ?

उ०—अपूर्व करण (पहिले प्राप्त नहीं हुआ) गुणस्थानक।

५३. प्र०—इस गुण स्थान वाला कितने भव करके मोक्ष जाता है ?

उ०—जघन्य इसी भव में, और उत्कृष्ट तीसरे भव में।

५४. प्र०—निवृति वादर का अर्थ क्या ?

उ०—वादर कषाय से निवर्तित।

५५. प्र०—नवमें गुणस्थानक का नाम क्या ? और इसमें कितनी प्रकृतियों का क्षयोपशम होता है ?

उ०—सतरह; पहिले कही वे, और संजल की माया, स्री वेद पुरुप वेद, नपुंसक वेद यों इकवीस प्रकृति का क्षयोपशम करता है इसको अनिवृति वादर गुणस्थानक कहते है।

५६. प्र०—अनिवृति वादर का अर्थ क्या ?

उ०—सर्वथा क्रिया द्वारा निवृति नहीं परन्तु वादर संपराय क्रिया रही।

५७. प्र०—दसवें गुणस्थानक का नाम क्या ? और उसमे

कितनी प्रकृतियों का क्षयोपशम होता है ।

उ०—इकवीस; पहिले कही वे और हास्य, रति, अरति भय, शोक जुगुप्सा इन सत्ताईस प्रकृतियों का क्षयोपशम करता है उसे सूक्ष्म संपराय नामक दसवां गुण स्थानक कहते है ।

५८. प्र०—सूक्ष्म संपरात अर्थात् क्या ?

उ०—सूक्ष्म अर्थात् थोड़ी सम्पराय क्रिया अर्थात् छदमस्त की क्रिया रही है उसे सूक्ष्म संपराय कहते है ।

५९. प्र०—ग्यारहवें गुणस्थानक का नाम क्या ? और उसमें कितनी प्रकृतियों का क्षयोपशम होता है ?

उ०—सत्तावीस; पहिले कहीं वे और संजल का लोभ ऐसी अट्ठाइस प्रकृति का उपशम करता है उसे उपशांत मोह नामक ग्यारहवां गुणस्थान कहते है ।

६०. प्र०—उपशांत मोह का अर्थ क्या ?

उ०—उपशांत अर्थात् जिसने मोह सर्वथा दबा दिया है अर्थात् पानी के नीचे मैल स्थित रहता है, परन्तु पानी निर्मल दृष्टिगत होता है, उसी तरह यहां पर मोहनीय कर्म के के उपशम होने से अद्यवसाय निर्मल होते है ।

६१. प्र०—इस गुणस्थानक का परिणाम क्या ?

उ०—इस गुणस्थानक में जो मर जाय तो अनुत्तर विमान में जाकर देवता हो, और चौथे गुण स्थानक में रहे और नहीं तो अवश्य पतित हो तब दसवें से प्रथम गुणस्थान में आ जाय परन्तु वहां से आगे न चढ़े ।

६२. प्र०—बारहवें गुणस्थानक का नाम क्या ? और इस में कितनी प्रकृतियाँ नष्ट होती हैं ?

उ०—पहिले कही हुई अट्ठाईस प्रकृतियों को सर्वथा नष्ट करता है उसे क्षीण मोहनीय नाम का बारहवां गुणस्थान कहते हैं।

६३. प्र०—इस गुणस्थानक की, स्थिति (परिणाम) कैसी होती है ?

उ०—क्षपक श्रेणी, क्षायक भाव, क्षायक समकित, और यथा ख्यात चारित्र में रहते करण सत्य योग सत्य, भाव सत्य अमायी, अकषाई वीतरागी, अविकारी, महाज्ञानी, महाध्यानी, वर्धमान परिणामी, अप्रतिपाती होता है, यहां अंतर मुहूर्त रहता है और इसी जगह ज्ञानावरणीय, दर्शना वरणीय, अंतराय का भी क्षय कर तेरहवें गुणस्थानक के पहिले समय में ही केवल ज्योति प्रकट करता है उसे क्षीण मोहनीय गुण स्थानक कहते हैं।

६४. प्र०—तेरहवें गुणस्थान का नाम क्या ? और उसका लक्षण क्या है ?

उ०—वह दश बोल सहित हो, सजोगी, सशरीरी, सलेशी, वीतरागी, यथा ख्यात चारित्री, क्षायिक सम्यक्त्वी, पंडित वीर्यवान, शुक्लध्यानी, केवल ज्ञानी, केवल दर्शनी होता है उसे सजोगी केवली गुणस्थानक कहते हैं।

६५. प्र०—इस गुणस्थान में कितने समय रहता है ?

उ०—जघन्य अंतर मुहूर्त और उत्कृष्ट पोन

क्रोड पूर्व ।

६६ प्र०—तेरहवें गुणस्थानक में रहे हुए कैसे गिने जाते हैं ?

उ०—केवली भगवान, जग दुद्धारक अनंतज्ञान दर्शन के आधार भूत, भविष्य, वर्तमान, काल के सर्व भावों को एक ससय मे यथार्थ रीति से जानने वाले ।

६७ प्र०—चौदहवें गुणस्थानक का नाम क्या ?

उ०—अयोगी केवली गुणस्थानक ।

६८. प्र०—अयोगी केवली अर्थात् क्या ?

उ०—इस गुण स्थान में मन, बचन, काया के जोग और प्राण का निरोध कर रूपातित परम शुल्क ध्यान में अडोल स्थिति में पंचाक्षर बोले जितने समय तक रह चार (वेदनीय, आयुष्य, नाम गोत्र,) कर्म का क्षय कर शरीर से मुक्त होता है ।

६९. प्र०—तेरहवें गुणस्थानक मे कितने कर्मों का क्षय होता है ?

उ०—मोहनीय ज्ञानावरणीय, दर्शना वरणीय, अंतराय, इन चार घनघाति कर्म का क्षय होता है, और वाकी के चार जली हुई रस्सी के समान रहते है ।

७०. प्र०—चौदहवें गुणस्थानक से मुक्त हो कहां जाते हैं ?

उ०—सिद्ध क्षेत्र में, अनंत सिद्ध स्वरूप में विराजित होते है ।

७१. प्र०—वे सिद्ध भगवान इस लोक में भी कभी आते है ?

उ०—नहीं; उनको यहां आने का कोई कारण नही अर्थात् कभी भी नहीं आते ।

७२. प्र०—उनकी शक्ति किस प्रकार की होती है ?
उ०—अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत बल वीर्य, अनंत तेज, अखंड आनन्द और अनंत अव्याबाध आत्मसुख के कर्ता हैं।

७३. प्र०—उनका स्वरूप कैसा होता है ?
उ०—उनका स्वरूप अगम्य, अगोचर, अवाच्य, अलक्ष अचल, और अनंत स्वरूपी होता है।

७४. प्र०—सिद्ध हुई आत्माएं कितनी होगी ?
उ०—भिन्न-भिन्न आत्माएं सिद्ध पद पाई है इस पक्ष से अनंत सिद्ध हैं, और सबका स्वरूप समान है इससे एक हैं। जहां अनंत है वहां अनंत है जहां एक है इस पक्ष से एक गिनी जाती है।

पाठ—३८

कर्म प्रकृति प्रश्नोत्तर

१. प्र०—जीव को दुःख-सुख देने का निमित्त कौन है ?
उ०—जीव के बांधे हुए शुभाशुभ कर्म।

२. प्र०—ये कर्म कितने प्रकार के है ?
उ०—आठ।

३. प्र०—उनके नाम कहो ?
उ०—ज्ञानावर्णीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र, अंतराय।

४. प्र०—प्रत्येक कर्म जीव की कौन-कौन सी शक्तियों के अवरोध करने वाले है ?

उ०—ज्ञानावरणी ये ज्ञान की अनन्त शक्ति को दबाने वाला है, दर्शनावरणीय दर्शन को, वेदनीय आत्मीय अनन्त सुख को, मोहनीय क्षायिक सम्यक्त्व को, आयुष्य अक्षय स्थिति गुण को, नाम कर्म अमूर्ति गुण को, गोत्र अगुरु लघु गुण को, अन्तराय आत्मिक अनन्त शक्ति को रोकने वाला है ।

५. प्र०—ज्ञानावरणीय कर्म कैसे बन्धता है ?

उ०—ज्ञानी के कार्य में विघ्न डालने से, उनका उपकार भूल जाने से, उनका अपमान करने से, उनके साथ वितंडावाद करने से, झगडा, क्लेश, द्वेष तथा किसी के ज्ञान की अन्तराय देने से ज्ञानावणीय कर्म का बन्ध होता है ।

६. प्र०—इस कर्म का क्या फल है ?

उ०—मति ज्ञानादि कोई ज्ञान पैदा नहीं होता है तथा पांच इन्द्रियों का ज्ञान या विज्ञान भी नहीं होता है, वह जड़ मूढ़ पशु सा रहता है ।

७. प्र०—उस कर्म की स्थिति कितनी है ?

उ०—जघन्य अन्तर्मुहुर्त की, उत्कृष्ट तीस क्रोडा-क्रोड़ सागर की ।

८. प्र०—दर्शनावरणीय कर्म कैसे वन्धता है ?

उ०—दर्शन सम्यक्त्व अथवा शासन या दर्शंत शक्ति) मे विघ्न करने से, टेढे बोलने से, त्रुटि देखने से, असातना करने से, उनके विपक्ष भूत वनने से,

तथा हर किसी को इनकी अन्तराय देने से दर्शना-
वरणीय कर्म का बन्ध होता है ।

९. प्र०—इस कर्म का क्या फल है ?

उ०—देखने मे प्रत्येक शक्ति से वे नसीव रहता है, चक्षु दर्शन से प्रारम्भ कर कोई सत्य दर्शन नही होता ।

१०. प्र०—दर्शनावरणीय कर्म की स्थिति कितनी है ?

उ०—ज्ञानावर्णीय के अनुसार ।

११. प्र०—वेदनीय कर्म के कितने भेद है ?

उ०—दो—साता, असाता वेदनीय ।

१२. प्र०—साता वेदनीय कर्म कैसे वनते है ?

उ०—प्राणियो को शान्तता देने से, दया, अनुकम्पा करने मे, कोई प्रकार की पीडा, दुःख, असाना नही देने से, माता वेदनीय कर्म का बंध होना है।

१३. प्र०—असाता वेदनीय कर्म का वध कैसे होता है ?

उ०—प्राणियों को अशान्ति देने से, निर्दयना करने मे, शारीरिक या मानसिक दुःख देने से, असाना वेदनीय कर्म का बंध होना है ।

१४. प्र०—यह माता या असाना वेदनीय कर्म क्या फल देता है ?

उ०—सातावेदनीय से शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार के मनोज्ञ सुख शान्ति और इनके अनुकूल हर एक संयोग प्राप्त होते है । असाता वेदनीय से अमनोज्ञ सामग्री मिलती है, दुःख, अशान्ति, व्याधि, व्याकुलता, पराधीनता पीडा और हर एक प्रकार के प्रतिकूल संयोग प्राप्त होते है ।

१५. प्र०—साता वेदनीय की स्थिति कितनी है ?

उ०—जघन्य दो समय की उत्कृष्ट पन्द्रह कोड़ा कोड़ सागरोपम की।

१६. प्र०—असाता वेदनीय की स्थिति कितनी है ?

उ०—जघन्य एक सागर के ७ भाग में से ३ भाग में एक पल्य के असंख्यातवें भाग कम की और उत्कृष्ट तीस कोड़ा कोड़ सागरोमप की।

१७. प्र०—मोहनीय कर्म कैसे बधते है ?

उ०—तीव्र क्रोध, मान, माया, लोभ करने से, जीवों को वश करने से, अयोग्य रीति से मारने से अथवा उपदेश से किसी को प्रतिकूल समझा कर मारने से।

१८. प्र०—मोहनीय कर्म का फल क्या ?

उ०—इस मोहनीय कर्म की २८ प्रकृतियों में से जितने प्रकार की प्रकृतियों की तीव्रता, मंदता हो उनमे यह घिरा रहे, सत्य वस्तु को न पहचान सके और असत्य मे भी लिप्त रहे।

१९. प्र०—उसकी स्थिति किस प्रकार की होती है दृष्टान्त द्वारा समझाओ ?

उ०—जैसे मद्य पान के नशे से भान रहित मनुष्य हिताहित के मार्ग को नही समझ सक्ता, अक्लमदो खो बैठता है, उसी तरह मोहनी कर्म के उदय से मनुष्य आत्मज्ञान, सत्यमार्ग, हित के साधन और अपने कर्तव्य नहीं समझ सकता।

२०. प्र०—मोहनीकर्म की स्थिति कितनी है ?

उ०—जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट सित्तर कोड़ा कोड़ सागर की।

२१. प्र०—आयुष्य कर्म के कितने भेद हैं ?
   उ०—चार नारकी, मनुष्य, त्रियंच, देव ।

२२. प्र०—इन चारों में से नारकी का आयुष्य कैसे बंधता है ?
   उ०—महा आरंभ समारंभ करने से महा परिग्रह सेवन करने से, सदा मद्य-मांस का आहार करने से, पंचेद्री प्राणियो को विना अपराध घात करने से इत्यादि ऐसे महा अनर्थ, अकार्य, ज़ुल्म करने से नारकी का आयुष्य बंधता है ।

२३. प्र०—तिर्यंच का आयुष्य कैसे बांधा जाता ?
   उ०—माया कपट करने से, प्रपच जाल फैलाने से, कम-ज्यादा तोल-नाप की वस्तुएं रख अन्य को ठगने से, विश्वासघात, असत्य, छल, दगा कर दूसरों को ठग लेने से ।

२४. प्र०—मनुष्य का आयुष्य कैसे बंधता है ?
   उ०—दया से, भद्र प्रकृति से, विनीत प्रकृति से और अभिमान रहित सरलता से ।

२५. प्र०—देव का आयुष्य कैसे बंधता है ?
   उ०—न्याय पूर्वक गृहस्थ धर्म (श्रावक व्रत) का पालन करने से, मुनि-धर्म (साधु व्रत) का पालन करने से, बाल तपश्चर्या करने से और अकाम निर्जरा करने से ।

२६. प्र०—देवता नारकी का आयुष्य कितना है ?
   उ०—जघन्य दश हजार वर्ष का तेतीस सागरोपम का ।

२७. प्र०—मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य कितना है ?
   उ०—जघन्य अंतर्मुहूर्त का उत्कृष्ट तीन पल्य का ।

२८. प्र०—नाम कर्म के कितने भेद है ?

उ०—दो—शुभनाम कर्म, अशुभनाम कर्म ।

२९. प्र०—शुभ और अशुभ नाम कर्म कैसे बंधता है ?

उ०—मन, वचन, काया को सरलता से. योग्य रीति से, न्याय मार्ग पर प्रवृत करने से तथा दूसरों की आकांक्षाओं को दुःख पहुँचे ऐसा कोई वितं-डावाद न करने से शुभनाम कर्म बंधता है और इनके विपरीत चलने से अशुभनाम कर्म का सचय होता है ।

३०. प्र०—यह शुभा शुभनाम कर्म क्या फल देना है ?

उ०—शुभनाम कर्म के फल से इष्ट, शब्द, रूप, गन्ध, रस, स्पर्श, गति, स्थिति, लावण्य, यश-कीर्ति, बल-वीर्य, पुरुषार्थ, पराक्रमे स्वरादि मनोज्ञ प्राप्त होते है और अशुभनाम कर्म से इनके प्रतिकूल अमनोज्ञ सुख प्राप्त होते है ।

३१. प्र०—नामकर्म की कितनी स्थिति है ?

उ०—जघन्य आठ मुहूर्त की उत्कृष्ट बीस क्रोड़ा क्रोड़ सागर की ।

३२. प्र०—गोत्र कर्म के कितने भेद है ?

उ०—दो—उच्च गोत्र, नीच गोत्र ।

३३. प्र०—उच्च, नीच गोत्र कैसे वन्धता है ?

उ०—जाति, कुल, वल, रूप, तप, शास्त्र, लाभ, एश्वर्यता इस आठ प्रकार के मद से नीच गोत्र का वन्ध होता है और ये वस्तुएं प्राप्त होने पर भी यह न करे तो उच्च गोत्र का वन्ध होना है ।

३४. प्र०—उच्च, नीच गोत्र का फल क्या है ?

उ०—उच्च गोत्र से जाति, लाभ, कुल, वल, रूप, तप,

शास्त्र, ऐश्वर्य उच्च मिलते हैं और नीच गोत्र से
ये आठों वस्तुएं हलकी एवं तुच्छ मिलती है ।

५. प्र०—इस गोत्र कर्म की कितनी स्थिति है ?
उ०—जघन्य आठ मुहूर्त की उत्कृष्ट बीस कोडा कोड़ सागरोपम की ।

३६. प्र०—अन्तराय कर्म कितनी रीति से बंधता है ?
उ०—दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य उनका किसी जीव के उपयोग में (अन्तराय) रोड़े अटकाने से ।

३७. प्र०—अन्तराय कर्म का क्या फल है ?
उ०—जो मनुष्य किसी को जैसी अन्तराय दे वैसी ही अन्तराय उसे मिलती है उस वस्तु का प्रयत्न करने पर भी वह प्राप्त नहीं हो सकती ।

३८. प्र०—इस कर्म की कितनी स्थिति है ?
उ०—जघन्य अन्तर मुहूर्त को उत्कृष्ट तीस कोड़ा कोड़ सागरोपम की ।

पाठ—३९

त्रैसठ श्लाघ्य पुरुषों सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

१. प्र०—इस अवसर्पिणी काल में अपने आर्यावर्त में कितने तीर्थंकर हुए ?
उ०—चौबीस ।

२. प्र०—बाकी रहे हुए चार भरत और पांच इर व्रत में कितने तीर्थकर हुए ?

उ०—उन प्रत्येक भरत और इर व्रत में चौबीस चौबीस तीर्थंकर इस अवसर्पिणी काल में हुए ।

३. प्र०—एक कालचक्र मे एक=एक क्षेत्र मे कितनी चौबीस होती है ?

उ०—दो—(एक उत्सर्पिणी में, एक अवसर्पिणो मे) ।

४. प्र०—एक पुद्‌गल परीवर्तन मे कितनी चौबीसी होती है ?

उ०—अनन्ती ।

५. प्र०—पहिले कितनी चौबीसी हुई होगी ?

उ०—अनन्ती ।

६. प्र०—आते (भविष्य) काल मे कितनी चौबीसी होगी ?

उ०—अनन्ती ।

७. प्र०—तीर्थंकर कौन=कौन से आरे में हुए ?

उ०—तीसरे और चौथे मे ।

८, प्र०—उन चौवीस तीर्थंकरों के नाम कहो ?

उ०—ऋषभदेव से महावीर स्वामी ।

९. प्र०—इन चौबीस तीर्थंकरों मे से तीसरे आरे मे कितने हुऐ और चौथे आरे मे कितने हुए ?

उ०—एक प्रथम तीर्थंकर तीसरे आरे मे और बाकी के सब तीर्थंकर चौथे आरे मे हुए ।

१०. प्र०— ऋषभदेव भगवान का दूसरा नाम क्या है ?

उ०—आदिनाथ, आदि, जिनेश्वर अथवा आदिश्वर ।

११. प्र०—यह नाम क्यों दिया गया ?

उ०—उन्होंने जुगल्या धर्म दूर कर धर्म की आदि की जिससे आदिनाथ नाम पड़ा ।

१२. प्र०—ऋषभदेव भगवान ने दूसरा कार्य क्या किया ?

उ०—पुरुषों की ७२ कला और स्त्रियों की ६४ कला लोकों को सिखाई ।

१३. प्र०—प्रथम कला सिखाई या धर्म स्थापित किया ?

उ०—पहिले कला सिखाई और फिर राजपाट त्याग दीक्षा ली, दिक्षा लेन के १०० वर्ष पश्चात् केवल्य ज्ञान प्रकट हुआ और फिर धर्म की स्थापना की अर्थात् भरतक्षेत्र में चार तीर्थ का विच्छेद हो गया था उनकी फिर स्थापना की ।

१४. प्र०—ऋषभदेव भगवान के कितने पुत्र थे ?

उ०—सो ।

१५. प्र०—उनके सब से बड़े पुत्र का नाम क्या था ?

उ०—भरत ।

१६. प्र०—भरत राजा कौन-सी बडी पदवी पाये थे ?

उ०—चक्रवर्ती राजा की ।

१७. प्र०—चक्रवर्ती राजा किसे कहते है ?

उ०—जो चक्र द्वारा—भरतक्षेत्र के छःहों खण्डों का साधन करते है उसी तरह जो चौदहों रत्न तथा नो निधान प्रभृति मोटी रिद्धि के स्वामी होते है वे चक्रवर्ती कहलाते है ।

१८. प्र०—एक=एक चौवीसी में ऐसे कितने चक्रवर्ती होते है ?

उ०—बारह ।

१९. प्र०—अपने भरत क्षेत्र मे उत्पन्न बारहों चक्रवर्ती के नाम कहो ?

उ०—भरत २ सगर ३ मघव ४ सनत्कुमार ५ शान्ति ६ कुंथु ७ अरह ८ सुभुम ९ महापद्म १० हरिषेण

११ जय १२ ब्रह्मदत्त ।

२०. प्र०—तीर्थंकरो की और चक्रवर्तियों की किन-किन ने पदवी पाई ?

उ०—शांतिनाथ, कुन्थुनाथ, अरिनाथ ।

२१. प्र०—चक्रवर्ती होकर तीर्थंकर कैसे हुए ?

उ०—वे पहले चक्रवर्ती राजा थे फिर संयम लेकर तीर्थंकर पद को प्राप्त हुए ।

२२. प्र०—चक्रवर्ती मर कर कौन-सी गति में जाते है ?

उ०—जो चक्रवर्ती की रिद्धि त्याग कर सयम लेते है वे अवश्य मोक्ष या देवलोक मे जाते है और जो चक्रवर्ती पद मे ही मरते है वे अवश्य नरक गति मे जाते है ।

२३. प्र०—चक्रवर्ती से आधा राज्य पाया और अर्द्ध ऋद्धि के स्वामी हुए वे कौन-से राजा कहलाते है ?

उ०—वासुदेव या अर्द्ध चक्री ।

१४. प्र०—वासुदेव कितने खंड जीतते है ?

उ०—तीन; दक्षिण भरत के ।

२५. प्र०—एक चौबीसी मे ऐसे कितने वासुदेव हुए है ?

उ०—नौ ।

२६. प्र०—भरतक्षेत्र में हुए वासुदेवों के नाम कहो ?

उ०—१ त्रिप्रष्ट महावीर स्वामी का जीव २ द्विप्रष्ट ३ स्वयभू ४ पुरुपोत्तम ५ पुरुपसिंह ६ पुरुप पुंडरीक ७ दत्त ८ नारायण ९ कृष्ण ।

२७. प्र०—वासुदेव अपनी समस्त जिन्दगी मे किसी से पराजित हुए या नही ?

उ०—नहीं, ये किसी से नहीं हारते ।

२८. प्र०—वासुदेव के भाई को क्या कहते हैं ?
उ०—वलदेव ।

२९. प्र०—वासुदेव के सव भाई वलदेव कहलाते हैं ?
उ०—नहीं, उनके वड़े भाई जो महा समर्थ हों वे वलदेव कहलाते है ।

३०, प्र०—वासुदेव की हाजरी में कितने देव रहते हैं ?
उ०—आठ हजार ।

३१. प्र०—चक्रवर्ती की सेवा में कितने देव रहते है ?
उ०—सोलह हजार ।

३२. प्र०—एक चौवीसी में कितने वलदेव होते है ?
उ०—नौ ।

३३. प्र०—इस चौवीसी में प्रकठ हुए नौ वलदेवों के नाम कहो ?
उ०—१ अचल २ विजय ३ भद्र ४ सुप्रभ ५ सुदर्शन ६ आनन्द ७ नन्दन ८ राम ९ वलभद्र ।

३४. प्र०—वलदेव मर के कहां जाते है ?
उ०—वासुदेव की मृत्यु से वैराग्य पा वलदेव अवश्य दीक्षा लेते है और मृत्यु पाकर मोक्ष या देवलोक पधारते ।

३५. प्र०—वासुदेव की तरह और कोई तीन खंड जीतते है?
उ०—प्रति वासुदेव तीन खंड जीतते है ।

३६. प्र०—प्रति वासुदेव किसे कहते है ?
उ०—वासुदेव के प्रति पक्षी, प्रति वासुदेव ।

३७ प्र०—प्रति वासुदेव किस से मारे जाते है ?
उ०—प्रति वासुदेव और वासुदेव के मध्य भयंकर युद्ध होता है और प्रति वासुदेव को वासुदेव मारते है

(५) सिंह, (६) कन्या, (७) तुल, (८) वृश्चिक,
(९) धन, (१०) मकर, (११) कुम्भ, (१२) मीन।

१०. प्र०—कितने नक्षत्र पर एक राशि रहती है ?
उ०—सवा दो नक्षत्रों पर।

११. प्र०—मेष राशि मे कितने नक्षत्र हैं ?
उ०—अश्विनीपूर्ण भरणी पूर्ण, कृतिका का एक चरण।

१२. प्र०—वृष राशि में कितने नक्षत्र हे ?
उ०—कृतिका के तीन चरण रोहणी पूर्ण और मृगशीर के दो चरण।

१३. प्र०—मिथुन राशि में कितने नक्षत्र हैं ?
उ०—मृगशीर के दो चरण आर्दा पूर्ण, पुनर्वसु के तीन चरण।

१४. प्र०—कर्क राशि के कितने नक्षत्र ?
उ०—पुनर्वसु का एक चरण, पुण्य पूर्ण, अश्वेषा पूर्ण।

१५. प्र०—सिंह राशि में कौन से नक्षत्र हे ?
उ०—मघा पूर्ण, पूर्वा फाल्गुनी पूर्ण, उत्तरा फाल्गुनी का एक चरण।

१६. प्र०—कन्या राशि में कौन से नक्षत्र हैं ?
उ०—उत्तरा फाल्गुनी के तीन चरण, हस्त पूर्ण के दो चरण।

१७. प्र०—तुला राशि में कौन से नक्षत्र हैं ?
उ०—चित्रा के दो चरण, स्वाती पूर्ण, विशाखा के तीन चरण।

१८. प्र०—वृश्चिक राशि में कितने नक्षत्र हैं ?
उ०—विशाखा का एक चरण, अनुराधा पूर्ण, जेष्टा पूर्ण।

१९. प्र०—धन राशि में कौन से नक्षत्र हैं ?

उ०—मूल पूर्ण, पूर्वाषाढा पूर्ण और उत्तराषाढा का एक चरण ।

२०. प्र०—मकर राशि में कौन से नक्षत्र हैं ?

उ०—उत्तराषाढा के तीन चरण, स्वर्ण पूर्ण, धनिष्ठा के दो चरण ।

२१. प्र०—कुम्भ राशि मे कौन से नक्षत्र हैं ?

उ०—धनिष्ठा के दो चरण, शतभीसा पूर्ण, पूर्वा भद्रपद के तीन चरण ।

२२. प्र०—मीन राशि में कौन से नक्षत्र हैं ?

उ०—पूर्वा भाद्रपद का एक पाया, उत्तरा पूर्ण, रेवती पूर्ण ।

२३. प्र०— मेष राशि मे कौन से अक्षर हैं ?

उ०—अ० ल० ई० ।

२४. प्र०—वृष राशि में कौन से अक्षर हे ?

उ०—ख० व० ऊ० ।

२५. प्र०—मिथुन राशि मे कौन से अक्षर हे ?

उ०—क० छ० घ० ।

२६. प्र०—कर्क राशि मे कौन से अक्षर हैं ?

उ०—ड० उ० ह० ।

२७. प्र०—सिंह राशि के कौन से अक्षर हे ?

उ०—ड० म० ट० ।

२८. प्र०—कन्या राशि मे कौन से अक्षर हे ?

उ०—प० ठ० ण० ।

२९. प्र०—तुल राशि मे कौन से अक्षर हे ?

उ०—उ० र० त० ।

३०. प्र०—वृश्चिक राशि मे कौन से अक्षर हे ?

उ०—न० र० प० ।

३१. प्र०—धन राशि में कौन से अक्षर है ?

उ०—क० घ० क० ट० ।

३२. प्र०—मकर राशि में कौन से अक्षर हैं ?

उ०—उ० व० ज० ।

३३. प्र०—कुम्भ राशि में कौन से अक्षर हैं ?

उ०—उ० ग० श० ।

३४. प्र०—मीन राशि में कौन से अक्षर है ?

उ०—द० च० ज० थ० ।

३५. प्र०—युग में कितने वर्ष होते हैं ?

उ०—पांच ।

३६. प्र०—पांच वर्ष को क्या कहते हैं ?

उ०—पांच संवत्सर ।

३७, प्र०—संवत्सर कितने प्रकार के हैं ?

उ०—पांच ।

३८. प्र०—उनके नाम कहो ?

उ०—चंद्र संवत्सर, सूर्य संवत्सर, नक्षत्र संवत्सर, ऋतु सवत्सर, अभिवर्धन संवत्सर ।

३९. प्र०—चंद्र संवत्सर के कितने दिन होते है ?

उ०—तीन सो चौपन में कुछ कम कुछ ज्यादा परिपूर्ण से ।

४०. प्र०—सूर्य संवत्सरी के कितने दिन होते है ?

उ०—तीन सो छासठ ।

४१. प्र०—नक्षत्र संवत्सर के कितने दिन होते है ?

उ०—३२७ ।

४२. प्र०—ऋतु संवत्सरी के कितने दिन होते हैं ?

उ०—३६० ।

४३. प्र०—अभिवर्धन संवत्सरी के कितने दिन होते हैं ?
उ०—३८० ।

४४. प्र०—सव नक्षत्रों का मंडल गुरु कितने दिन में फिरता है ?
उ०—बारह वर्ष में ।

४५. प्र०—मंगल कितने वक्त में फिरता है ?
उ०—१॥ वर्ष ।

४६. प्र०—बुद्ध कितनी वक्त में फिरता है ?
उ०—बारह माह ।

४७. प्र०—शुक्र कितने समय में परिभ्रमण करता है ?
उ०—१२ माह ।

४८ प्र०—रवि कितने समय मे परिभ्रमण करता है ?
उ०—१२ माह ।

४९. प्र०—शनि कितने समय मे परिभ्रमण करता है ?
उ०—तीस वर्ष ।

५०. प्र०—चंद्र कितने समय मे परिभ्रमण करता है ?
उ०—सत्ताईस दिन से कुछ ज्यादा ।

५१. प्र०—राहु कितने समय मे परिभ्रमण करता है ?
उ०—डेढ़ वर्ष ।

५२. प्र०—परदेश गमन करने वालों को कौन-कौन से अवयोग जानना चाहिये ?
उ०—दिशाशूल, नान-काल, काल-राहु, योगिनी, चंद्र, इत्यादि ।

५३. प्र०—पूर्व दिशा मे किस वार को दिशा शूल रहता है ?
उ०—शनि और चंद्र को ।

५४. प्र०—पश्चिम दिशा मे किस वार को शूल रहता है ?
उ०—रवि, शुक्र को ।

५५. प्र०—उत्तर दिशा में किस वार को शूल रहता है ?
उ०—बुध और मंगलवार को ।

५६. प्र०—दक्षिण दिशा में किस वार को शूल रहता है ?
उ०—गुरुवार ।

५७. प्र०—वायव्य कोन में किस वार को शूल रहता है ?
उ०—मंगल ।

५८ प्र०—ईशान कोन में किस वार को शूल रहता है ?
उ०—बुध और शनि ।

५९. प्र०—नैऋत्य कोन में किस वार को शूल रहता है ?
उ०—शुक्र और रवि ।

६०. प्र०—अग्नि कोन में किस वार को शूल रहता है ?
उ०—गुरु और चंद्र ।

६१. प्र०—जिस दिशा में शूल हो ओर उसी और प्रयाण करे तो क्या होता है ?
उ०—हानि होती है ।

६२. प्र०—कौन-सा नक्षत्र किस दिशा में हो तो गमन नही करना चाहिये ?
उ०—जिस दिन को हस्त नक्षत्र हो तो उत्तर में, चित्रा हो उस दिन दक्षिण में, रोहिणी हो तो पूर्व में; श्रवण हो तो पश्चिम में गमन न करे अगर करता है तो मृत्यु प्राप्त होती है ।

६३. प०—नग्नकाल किस दिन किस दिशा को रहता है ?
उ०—रवि को उत्तर में, चंद्र को वायव्य में, मंगल को पश्चिम मे, बुध को नैऋत्य मे, गुरु को दक्षिण मे, शुक्र को आग्नेय में, शनि को पूर्व दिशा में, काल का वास रहता है इसलिये नग्न काल की